ॐ

KUNDLI REPORTS



# शिशु नाम रिपोर्ट (नक्षत्र आधारित)

पारंपरिक नामाक्षर और एक सौम्य पहली कुंडली

नाम: Baby Sample

जन्म: 5 सितंबर 2026, 04:20 (स्थानीय समय)

स्थान: Lucknow, Uttar Pradesh, India

लग्न: कर्क

चंद्र: वृषभ · मृगशिरा नक्षत्र

**नमूना रिपोर्ट (SAMPLE), काल्पनिक जन्म विवरण**

**कृपया ध्यान दें:** ज्योतिष रिपोर्ट केवल मार्गदर्शन, आत्म-चिंतन और मनोरंजन केलिए हैं। ये पारंपरिक पद्धतियों पर आधारित हैं, वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं हैं और किसी परिणाम की गारंटी नहीं देतीं। ये चिकित्सा, कानूनी, वित्तीय, मनोवैज्ञानिक या अन्य पेशेवर सलाह का विकल्प नहीं हैं। रिपोर्ट केआधार पर स्वास्थ्य, कानूनी या वित्तीय निर्णय न लें। कुंडली कंप्यूटर द्वारा गणना की जाती है (स्विस एफ़ेमेरिस, लाहिरी अयनांश) और व्याख्याएँ AI सहायता से लिखी व मनुष्यों द्वारा संपादित हैं। कोई ज्योतिषी व्यक्तिगत रिपोर्ट की समीक्षा नहीं करता। पूरा अस्वीकरण अंतिम पृष्ठ पर है।

# जन्म कुंडली (D1, राशि): उत्तर भारतीय शैली

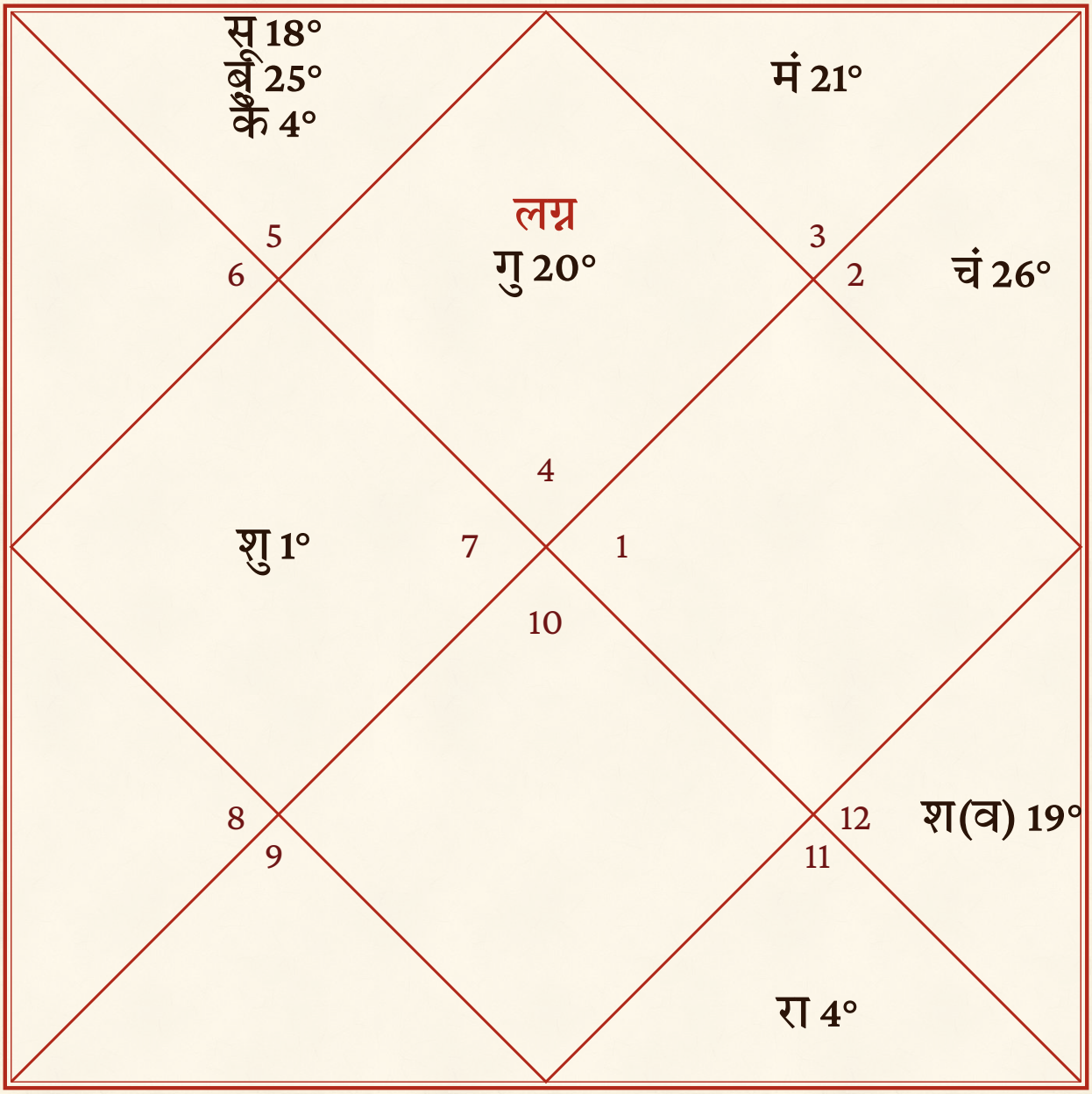


**जन्म कुंडली (D1, राशि): उत्तर भारतीय शैली**

यह आपकी जन्म कुंडली उत्तरी (हीरे जैसी) शैली में है। पहला भाव ऊपर केहीरे में है; भावों में लिखी संख्याएँ राशियाँ हैं (1 मेष है)। ग्रह-लेबल उस राशि में अंश दिखाते हैं। यह स्थितियों का मानचित्र है, घटनाओं का पूर्वानुमान नहीं।

# D1: दक्षिण भारतीय शैली

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मीन<br>श(व) 19° | मेष | वृषभ<br>चं 26° | | मिथुन<br>मं 21° |
| कुंभ<br>रा 4°<br>मकर | D1: दक्षिण भारतीय शैली | | | कर्क<br>लग्न<br>गु 20°<br>सिंह<br>सू 18°<br>बू 25°<br>के 4° |
| धनु | वृश्चिक | तुला<br>शु 1° | | कन्या |

**D1: दक्षिण भारतीय शैली**

यही जन्म कुंडली दक्षिणी (वर्ग) शैली में है, जिसमें राशियाँ स्थिर हैं (मीन ऊपर-बाएँ कोष्ठ में)। इसे पिछले पृष्ठ की उत्तरी कुंडली से मिलाकर देखें। दोनों एक ही कुंडली का वर्णन हैं।

# चंद्र कुंडली

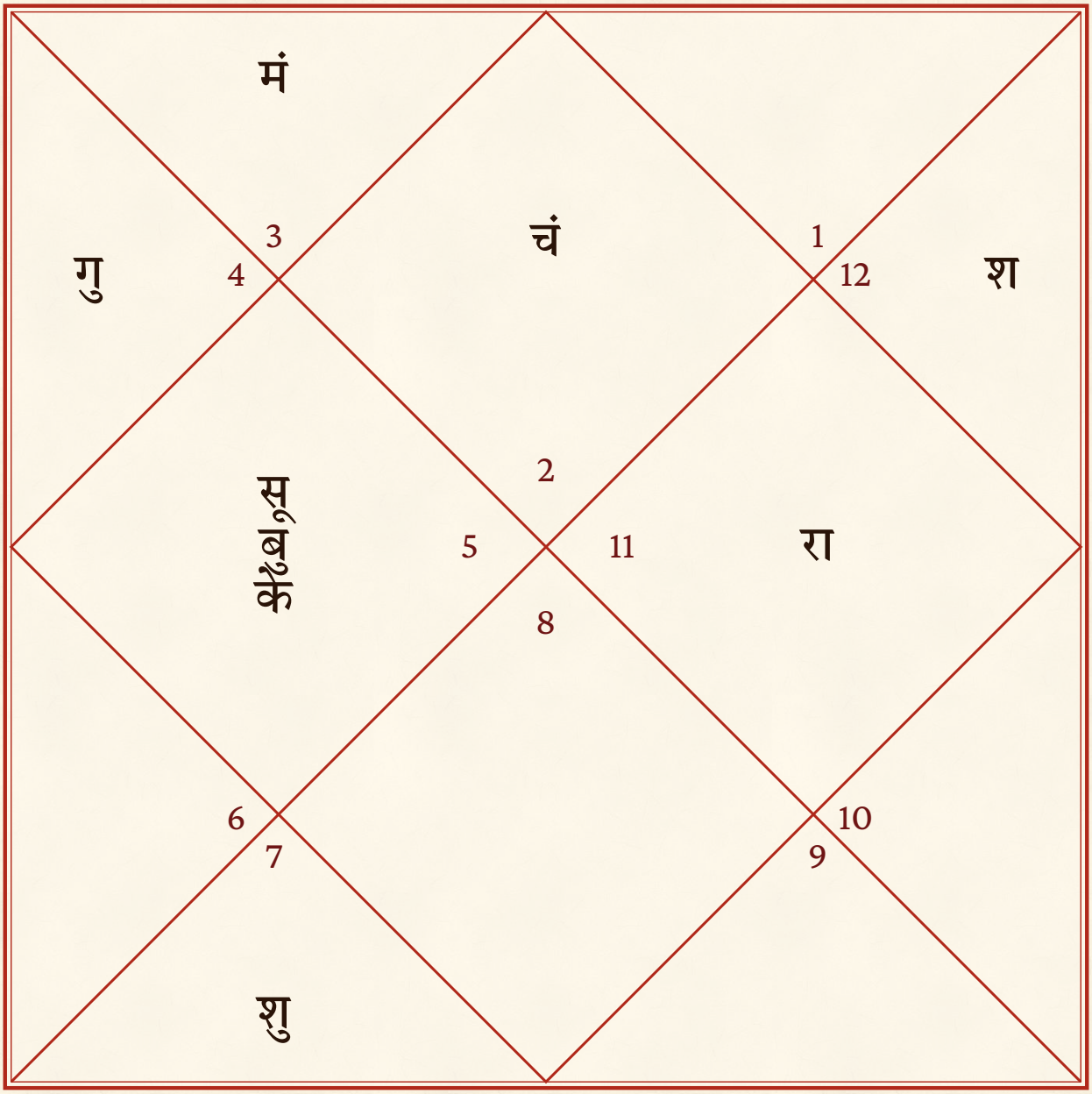


चंद्र कुंडली

चन्द्र कुंडली भावों की गणना जन्म-चन्द्र से करती है। साढ़े साती जैसे गोचर और किसी अवधि केभाव-स्वर केलिए यही संदर्भ प्रचलित है। इसे लग्न कुंडली के साथ पढ़ें, उसके स्थान पर नहीं।



# ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

*वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।*
*निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥*

## जन्म पत्रिका

| | |
|---|---|
| **नाम** | *Baby Sample* |
| **जन्म तिथि (दिनांक)** | *5 सितंबर 2026* |
| **जन्म समय** | *04:20 (स्थानीय समय)* |
| **जन्म स्थान** | *Lucknow, Uttar Pradesh, India* |
| **वार** | *शुक्रवार* |
| **जन्म तिथि** | *कृष्ण पक्ष नवमी (9)* |
| **नक्षत्र** | *मृगशिरा · पद 1* |
| **योग** | *वज्र* |
| **करण** | *तैतिल* |
| **लग्न** | *कर्क* |
| **राशि (चंद्र राशि)** | *वृषभ* |
| **चांद्र मास** | *श्रावण (अमांत)* |
| **संवत** | *विक्रम संवत 2083 · शक 1948* |

ऊपर दिए जन्म विवरण से स्विस एफ़ेमेरिस और लाहिरी अयनांश द्वारा, पारंपरिक जन्म-पत्रिका की रीति से तैयार।

# विषय-सूची

1. इस रिपोर्ट को कैसे पढ़ें
2. आपका व्यक्तित्व
3. सरल शब्दों में आपकी कुंडली
4. अभी आप कहाँ हैं: आपकी वर्तमान दशा
5. सरल शब्दों में इस रिपोर्ट का विषय: आपका व्यक्तित्व और जीवन-पथ
6. जन्म विवरण और पंचांग
7. जन्म कुंडलियाँ और ग्रह-स्थितियाँ
8. नक्षत्र और तारा चक्र
9. शिशु का जन्म नक्षत्र और नामाक्षर
10. नाम के सुझाव
11. शिशु की चंद्र राशि
12. आपका लग्न
13. स्वयं और स्वभाव: मुख्य भाव
14. स्वयं और स्वभाव: कारक ग्रह
15. सूर्य विस्तार से: वर्ग और गोचर
16. स्वयं और स्वभाव: समय-खिड़कियाँ
17. ग्रह-दर-ग्रह विश्लेषण
18. भाव-दर-भाव विश्लेषण
19. विभाजन कुंडलियाँ (षोडशवर्ग)
20. ग्रह-बल: षड्बल और अष्टकवर्ग
21. ग्रह मैत्री (पंचधा मैत्री)
22. ग्रह अवस्थाएँ (जाग्रदादि और दीप्तादि)
23. आपकी कुंडली के योग और दोष
24. जैमिनी चर कारक
25. विंशोत्तरी दशा: अवधियाँ और फल
26. जीवन भर की विंशोत्तरी दशा: सभी महादशाएँ और अंतर्दशाएँ
27. प्रत्यंतर दशा सारणी: अगले 3 वर्ष
28. योगिनी दशा
29. गोचर समय-रेखा: अगले 24 महीने
30. जीवन भर साढ़े साती और ढैया
31. मासिक दृष्टि (12 महीने)
32. पारंपरिक उपाय (वैकल्पिक)
33. शब्दावली
34. महत्वपूर्ण अस्वीकरण

यह रिपोर्ट आपके दिए गए जन्म विवरण से स्विस एफ़ेमेरिस, लाहिरी अयनांश वाली निरयन राशि-पद्धति, पूर्ण-राशि (whole-sign) भाव और माध्य राहु-केतु के आधार पर गणना की गई है, भारतीय (वैदिक) ज्योतिष में सबसे अधिक प्रचलित पद्धतियाँ।

इसे अंतिम निर्णय नहीं, बल्कि आत्म-चिंतन का दर्पण समझें। पारंपरिक ज्योतिष प्रवृत्तियों और समय के विषयों का वर्णन करता है; वास्तव में क्या होगा, यह आपके निर्णय, प्रयास और परिस्थितियाँ तय करती हैं।

इस रिपोर्ट को कैसे पढ़ें

## इस रिपोर्ट को कैसे पढ़ें

इस रिपोर्ट की तीन परतें हैं। पहले आपके जन्म के तथ्य हैं: पंचांग, कुंडलियाँ और सटीक ग्रह-स्थितियाँ। फिर हर ग्रह, हर भाव और उनसे बनने वाले योगों का विश्लेषण है। अंत में समय है: दशाएँ, गोचर और महीने-दर-महीने टिप्पणियाँ।

पहले कुंडलियाँ देखें। उत्तर भारतीय (हीरा) शैली में ऊपर बीच का खाना सदा प्रथम भाव (लग्न) होता है और भाव वामावर्त चलते हैं; छोटी संख्याएँ राशियाँ हैं (1 = मेष)। दक्षिण भारतीय शैली में राशियाँ स्थिर रहती हैं (ऊपर बाएँ मीन, फिर दक्षिणावर्त) और लग्न अंकित होता है।

हर कथन किसी तालिका में दिखाई गई गणना से जुड़ा है। जब कोई अनुच्छेद किसी ग्रह को बलवान बताए, तो गरिमा, षड्बल और अष्टकवर्ग तालिकाएँ देखें। परंपरा कई कारकों को साथ तौलती है, आप भी ऐसा करें; एक कठिन कारक शायद ही कुछ तय करता है।

समय वाले खंड बताते हैं कि कब कौन-से विषय उभरते हैं, यह नहीं कि क्या घटेगा। दशा और गोचर की तिथियों से समीक्षा, बातचीत और प्रयासों की योजना बनाएँ। कोई अवधि कठिन लगे तो उसे चेतावनी नहीं, तैयारी का निमंत्रण समझें।

विभाजन कुंडलियाँ (वर्ग) सटीक जन्म-समय पर निर्भर हैं। यदि आपका समय कुछ मिनट से अधिक अनिश्चित है, तो D10 और उससे सूक्ष्म कुंडलियों तथा दशा की सटीक आरंभ-तिथियों को अनुमानित मानें।

उपाय वैकल्पिक पारंपरिक अभ्यास हैं। इनमें आपके समय के अतिरिक्त कुछ नहीं लगता और कुछ ख़रीदना आवश्यक नहीं। यह रिपोर्ट केवल मार्गदर्शन और चिंतन के लिए है; यह चिकित्सीय, कानूनी, वित्तीय या मनोवैज्ञानिक सलाह नहीं है।

# आपका व्यक्तित्व

शायद आप वही व्यक्ति हैं जिसे मित्र तब फ़ोन करते हैं जब उन्हें सलाह नहीं, बस समझे जाने की ज़रूरत होती है।

## ❖ दूसरे आपको कैसे देखते हैं, और आप भीतर कैसा महसूस करते हैं

आपका कर्क लग्न वह चेहरा है जो आप दुनिया को दिखाते हैं। लोग प्रायः आपको कोमल, परवाह करने वाला और भाँप लेने वाला मानते हैं। आपने देखा होगा कि लोग आपके सामने जल्दी खुल जाते हैं, कभी-कभी जितना सोचा था उससे ज़्यादा बता देते हैं। वृषभ राशि का चंद्र आपका निजी पक्ष दिखाता है। भीतर आपको स्थिरता चाहिए। अचानक बदलाव आपको जितना दिखाते हैं उससे अधिक बेचैन करते हैं, और दिनचर्या, जाना-पहचाना भोजन और भरोसेमंद लोग आपको सबसे अच्छा महसूस कराते हैं। चंद्र आपके एकादश भाव में है, जो लाभ, आय में वृद्धि, मित्र, संपर्क, बड़े भाई-बहन और इच्छाओं की पूर्ति का क्षेत्र है; वहाँ जो होता है वह आपके मन को सबसे अधिक छूता है, और वहीं आप सुकून भी खोजते हैं।

आपका बाहरी स्वभाव और भीतरी ज़रूरतें अलग हैं पर एक-दूसरे की मित्र हैं: एक आपको काम करने का ढंग देती है, दूसरी महसूस करने का। जो आपको अच्छे से जानते हैं, वे दोनों पहलू देखते हैं। आपका जन्म नक्षत्र मृगशिरा अपना अलग रंग जोड़ता है: परंपरा इसे इन गुणों से जोड़ती है: जिज्ञासा; कोमलता और संवेदनशीलता; शोध-क्षमता। नए लोगों और नई स्थितियों से मिलने के आपके ढंग में आप इन्हें पहचान सकते हैं। भीतर से (सिंह में सूर्य) आप रचना करना, नेतृत्व करना और अपने असली रूप में सराहे जाना चाहते हैं; दिल खोलकर देने पर आप सबसे अधिक चमकते हैं। आपका सूर्य द्वितीय भाव (बचत, परिवार के संबंध, आपकी वाणी और खान-पान की आदतें) में है, जो दिखाता है कि आप कहाँ सबसे अधिक चमकना और सम्मान पाना चाहते हैं; जीवन के उस हिस्से की पहचान आपका आत्मविश्वास बढ़ाती है।

## ❖ आपकी शक्तियाँ, अनदेखी कमज़ोरियाँ और तनाव में आपका स्वभाव

आपका सबसे बलवान ग्रह शुक्र है, जो आपको आकर्षण, सौंदर्य-बोध और लोगों तथा चीज़ों को साथ लाने की कला देता है। आपकी नज़र सुंदरता पहचानती है और आप लोगों को सहज कर देते हैं। इसके ठीक बाद चंद्र है, जो भावनात्मक समझ, लोगों की परवाह और जनता की अच्छी पहचान जोड़ता है। आपकी कुंडली में हंस योग है (पाँच 'महापुरुष' योगों में से एक, जो केंद्र में बलवान गुरु से बनता है), जिसे परंपरा आपके व्यक्तित्व में स्पष्ट ज्ञानी, सिद्धांतवादी पक्ष मानती है। आपकी कुंडली में मालव्य योग है (पाँच 'महापुरुष' योगों में से एक, जो केंद्र में बलवान शुक्र से बनता है), जिसे परंपरा आपके व्यक्तित्व में स्पष्ट शालीन, कलात्मक पक्ष मानती है। गुरु, शुक्र और बुध अच्छी स्थिति में हैं (सरस्वती योग), जो परंपरा में विद्या, कला और सुंदर भाषा के प्रेम से जुड़ा है।

आपकी अनदेखी कमज़ोरी हर बात को दिल पर लेना हो सकती है: एक छोटे से संदेश में आप अस्वीकार पढ़ सकते हैं, या चोट को तब तक पकड़े रह सकते हैं जब छोड़ देना समझदारी होती। जिस क्षेत्र को अधिक अभ्यास चाहिए वह मंगल से जुड़ा है: ऊर्जा और क्रोध। ऊर्जा झटकों में आ सकती है, या खीज जमा होकर ग़लत समय पर निकल सकती है। तनाव में आप चुप हो जाते हैं, अड़ जाते हैं और और भी मेहनत करने लगते हैं, कभी-कभी थकान को अनदेखा करते हुए। आराम, अच्छा भोजन और तय दिनचर्या आपको किसी भी उपदेश से अधिक शांत करते हैं।

**मुख्य बात**

आप तब सबसे अच्छे होते हैं जब आपकी जल तत्व वाली बाहरी ऊर्जा और पृथ्वी तत्व वाली भीतरी ज़रूरतें, दोनों का सम्मान हो। जब कुछ ठीक न लगे, देखें कि किसे अनदेखा किया है।

## ❖ आप निर्णय कैसे लेते हैं और बात कैसे करते हैं

यह सोच और वाणी के ग्रह बुध से आता है, जो सिंह में है। आप जल्दी निर्णय लेते हैं और अपने मन पर भरोसा करते हैं। आपने देखा होगा कि पहला अंदाज़ा अक्सर सही निकलता है, पर किसी बड़े वादे से पहले एक रात रुक जाना कभी-कभार की जल्दबाज़ी से बचा लेता है। आप सीधे और जोश के साथ बात करते हैं; लोग जानते हैं कि वे आपके साथ कहाँ खड़े हैं। संदेश नहीं, कहने का ढंग थोड़ा नरम करने से आप कहीं अधिक प्रभावशाली बनते हैं। बुध आपके द्वितीय भाव में है, जो बचत, परिवार के संबंध, आपकी वाणी और खान-पान की आदतें का क्षेत्र है, इसलिए आपकी योजना, चिंता और बातचीत का बड़ा हिस्सा इन्हीं बातों की ओर मुड़ता है। भावनात्मक रूप से पृथ्वी तत्व का चंद्र सुरक्षा चाहता है: जब आपको पता हो कि लागत क्या है और क्या वैसा ही रहेगा, तब आप सबसे अच्छा निर्णय लेते हैं, इसलिए चुनने से पहले व्यावहारिक तथ्य लिख लें।

## ❖ मित्रता और परिवार

यह स्नेह के ग्रह शुक्र से आता है, जो तुला में है। मित्रों में आप अलग-अलग समूहों से आसानी से घुल-मिल जाते हैं, और अलग रुचियों के लिए अलग मित्र हो सकते हैं। आपके लिए अच्छी बातचीत सबसे अहम है। शुक्र आपके चतुर्थ भाव (घर का वातावरण, माता, संपत्ति, वाहन और भावनात्मक सुरक्षा) में है, जो दिखाता है कि आपको कहाँ आनंद और सहजता मिलती है, और लोग आपको कहाँ सबसे आकर्षक पाते हैं। दोस्तों में आपको वफ़ादारी और शांति चाहिए: बड़ी भीड़ से अधिक कुछ भरोसेमंद लोग आपके लिए मायने रखते हैं, और ज़रूरत के समय पहुँचकर आप अपनी परवाह दिखाते हैं।

## ❖ पैसे की आदतें

यह आपके द्वितीय (बचत) भाव से आता है, जो सिंह राशि का है। जेब-ख़र्च आप उत्साह वाली चीज़ों पर जल्दी ख़र्च कर सकते हैं; पहले कुछ हिस्सा बचाने का सरल नियम मदद करता है। आपके द्वितीय भाव का स्वामी सूर्य आपके द्वितीय भाव (संचित धन और परिवार) में है, इसलिए धन प्रायः संचित धन और परिवार के माध्यम से आता है और उन्हीं पर ख़र्च भी होता है। बचत आपके लिए दिनचर्या बनने पर सहज होती है: हर उपहार या जेब-ख़र्च का एक तय हिस्सा ख़र्च से पहले अलग रख दें। आगे चलकर कमाई प्रायः कौशल और धैर्य से आएगी, इसलिए शुरू किया काम पूरा करने की आदत अभी के किसी भी एक परिणाम से अधिक मूल्यवान है।

## ❖ आप कैसे सीखते हैं

यह आपके दशम (कर्म) भाव से आता है, जो मेष राशि का है। पढ़ाई में आपको प्रतियोगिता और जल्दी परिणाम पसंद हैं; लंबे घंटों के बजाय स्पष्ट लक्ष्य वाले छोटे, केंद्रित सत्र आपके लिए बेहतर हैं। आपके दशम भाव का स्वामी मंगल आपके द्वादश भाव (व्यय, विश्राम और दूर देश) में है, इसलिए आपका काम प्रायः व्यय, विश्राम और दूर देश से जुड़ता है या आपको उनकी ओर ले जाता है।

आज़माकर देखें

एक सप्ताह यह आज़माएँ: नियमित व्यायाम और गरमागरम क्षण में जवाब देने से पहले रुकना बहुत मदद करता है। देखें कि आपके मन और संबंधों में क्या बदलता है।

यह आपके कर्क लग्न, वृषभ राशि के चंद्र (मृगशिरा नक्षत्र), सिंह के सूर्य और आपके सबसे बलवान ग्रहों शुक्र और चंद्र से पढ़ा गया है।

# सरल शब्दों में आपकी कुंडली

यह अध्याय विस्तृत तालिकाओं से पहले आपकी कुंडली को रोज़ की भाषा में समझाता है। हर बिंदु के साथ वह स्थिति बताई गई है जिससे वह निकला है, ताकि आप उसे बाद में चार्ट और तालिकाओं में देख सकें।

आप अभी बच्चे हैं, इसलिए इस रिपोर्ट को माता-पिता और शिक्षकों के लिए मार्गदर्शिका की तरह पढ़ें: कुंडली स्वभाव और उन प्रतिभाओं के बारे में बताती है जिन्हें अभी निखारना है। करियर, धन और साझेदारी के विषय जीवन में बहुत बाद के लिए हैं।

## ❖ आप दुनिया से कैसे मिलते हैं: कर्क लग्न

आपका लग्न कर्क है। आप भावना और देखभाल से जीवन से जुड़ते हैं और अपने प्रियजनों तथा अपने घर की रक्षा करते हैं।

आपके प्रथम भाव का स्वामी चंद्र आपके एकादश भाव (आय और मित्र) में है, जहाँ यह उच्च का है, अपनी सबसे बलवान स्थिति में, इसलिए यह क्षेत्र अपेक्षाकृत कम खिंचाव में फल देता है। इस भाव पर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है, इसलिए कहानी का अधिकांश हिस्सा इसका स्वामी ही कहता है। इसका अष्टकवर्ग अंक 29 है (लगभग 28 औसत है), जो लगभग औसत है। अगली बार यह क्षेत्र प्रमुखता से सामने आएगा आपकी मंगल महादशा में चंद्र की अंतर्दशा में, जून 2031 से जनवरी 2032 तक; यहाँ की योजना के लिए यह अच्छा समय है।

> **आपके लिए इसका अर्थ**
> दुखी होने पर मित्र आपके पास आते हैं, और घर आपके लिए बहुत मायने रखता है। पुरानी चोटें आपको देर तक याद रहती हैं और आलोचना आप दिल पर ले सकते हैं।

> **आप क्या कर सकते हैं**
> अपना ध्यान भी उतनी ही सावधानी से रखें जितना दूसरों का रखते हैं: नियमित दिनचर्या, पूरा आराम और एक ऐसा व्यक्ति जिससे आप खुलकर बात कर सकें।

## ❖ आपका भावनात्मक स्वभाव: वृषभ राशि में चंद्र, मृगशिरा नक्षत्र

आपका चंद्र वृषभ में (अपनी उच्च राशि में) है, इसलिए मन की शांति के लिए आपको स्थिरता, आराम और सुकून चाहिए।

आपका जन्म नक्षत्र (उन 27 तारा-समूहों में से एक जिनसे चंद्र गुज़रता है) मृगशिरा है। परंपरा इससे ये गुण जोड़ती है: जिज्ञासा; कोमलता और संवेदनशीलता; शोध-क्षमता।

आपका चंद्र आपके एकादश भाव (आय और मित्र) में है और उच्च (बहुत बलवान) है। आपका जन्म कृष्ण पक्ष (घटते चंद्र) में हुआ, जिसे परंपरा भीतर की ओर मुड़ी, चिंतनशील ऊर्जा से जोड़ती है: आप शांत समय और चिंतन से फिर से ऊर्जा पाते हैं। शनि की दृष्टि आपके चंद्र पर है, जिससे भावनाएँ कभी-कभी अधिक तीव्र हो सकती हैं; नियमित नींद और दिनचर्या बहुत मदद करती है।

> **आपके लिए इसका अर्थ**
> अच्छा भोजन, साफ़-सुथरा घर और जाने-पहचाने लोग आपको स्थिर रखते हैं। अचानक योजना बदलना आपको दूसरों की सोच से अधिक विचलित करता है।

> **आप क्या कर सकते हैं**
> छोटी, नियमित दिनचर्याएँ बनाइए; यही आपका सबसे बड़ा भावनात्मक सहारा हैं।

## ❖ आपकी स्वाभाविक शक्ति: शुक्र

आपकी कुंडली में: षड्बल (छह प्रकार के बल की गणना) के अनुसार आपके सात ग्रहों में शुक्र सबसे बलवान है; यह आपके चतुर्थ भाव (घर और मन की शांति) में स्थित है, स्वराशि में (बलवान)।

शुक्र आपके चतुर्थ भाव और एकादश भाव का स्वामी है, इसलिए इसका प्रभाव घर और मन की शांति तथा आय और मित्र पर भी पड़ता है। अपनी स्थिति से यह आपके दशम भाव पर दृष्टि डालता है, जिससे इसका प्रभाव करियर और प्रतिष्ठा तक भी पहुँचता है। अगली बार यह क्षेत्र प्रमुखता से सामने आएगा आपकी मंगल महादशा में शुक्र की अंतर्दशा में, दिसंबर 2029 से फ़रवरी 2031 तक; यहाँ की योजना के लिए यह अच्छा समय है।

**आपके लिए इसका अर्थ**

शुक्र आपको आकर्षण, सौंदर्य-बोध और लोगों तथा चीज़ों को साथ लाने की कला देता है। यह आपके चतुर्थ भाव में है, इसलिए यह शक्ति सबसे अधिक इन विषयों में दिखती है: घर का वातावरण, माता, संपत्ति, वाहन और भावनात्मक सुरक्षा।

**आप क्या कर सकते हैं**

इसे डिज़ाइन, कला, आतिथ्य, संबंधों पर आधारित काम या जहाँ प्रस्तुति मायने रखती है, वहाँ लगाएँ।

## ❖ अभ्यास से निखरने वाला क्षेत्र: मंगल

आपकी कुंडली में: मंगल आपका सबसे कम सहारा पाने वाला ग्रह है, जो आपके द्वादश भाव (व्यय, विश्राम और दूर देश) में स्थित है।

मंगल आपके पंचम भाव और दशम भाव का स्वामी है, इसलिए इसका प्रभाव रचनात्मकता और विद्या तथा करियर और प्रतिष्ठा पर भी पड़ता है। अपनी स्थिति से यह आपके तृतीय भाव, षष्ठ भाव और सप्तम भाव पर दृष्टि डालता है, जिससे इसका प्रभाव पराक्रम और साहस; दिनचर्या और समस्या-समाधान तथा साझेदार तक भी पहुँचता है। इसका स्वामी आपकी वर्तमान महादशा (मंगल, जनवरी 2032 तक) भी चला रहा है, इसलिए यह क्षेत्र कुछ वर्षों तक केंद्र में रहेगा।

**आपके लिए इसका अर्थ**

यह ऊर्जा और क्रोध को ऐसे क्षेत्र के रूप में दिखाता है जो सचेत प्रयास से सुधरता है। यह आम बात है और कोई अशुभ संकेत नहीं; यह बस बताता है कि छोटी आदतें कहाँ सबसे बड़ा अंतर लाती हैं।

**आप क्या कर सकते हैं**

नियमित व्यायाम और गरमागरम क्षण में जवाब देने से पहले रुकना बहुत मदद करता है।

## ❖ आपकी ऊर्जा कहाँ इकट्ठा होती है: आपका द्वितीय भाव

आपकी कुंडली में: आपके द्वितीय भाव में 3 ग्रह एक साथ हैं: सूर्य, बुध और केतु।

यहाँ हर ग्रह अपना अलग स्वर जोड़ता है: सूर्य (आत्मविश्वास, अधिकार और पहचान, स्वराशि में (बलवान)); बुध (सोच, बातचीत और व्यापार, मित्र राशि में); केतु (वैराग्य, अंतर्दृष्टि और अचानक मोड़)। जब इनमें से किसी ग्रह की दशा या अंतर्दशा चलती है, तो इस भाव का वही पहलू सबसे अधिक सामने आता है, इसलिए समय वाले अध्याय में इन ग्रहों की अवधियाँ देखें।

**आपके लिए इसका अर्थ**

जब कई ग्रह एक भाव में इकट्ठा होते हैं, तो जीवन का वह क्षेत्र आपका बड़ा ध्यान लेता है। आपके लिए यह है संचित धन और परिवार: बचत, परिवार के संबंध, आपकी वाणी और खान-पान की आदतें।

**आप क्या कर सकते हैं**

इस क्षेत्र को वह समय दें जो यह माँगता है, और आसपास तथा सामने के भावों पर भी ध्यान रखें ताकि जीवन के दूसरे हिस्से छूट न जाएँ।

## ❖ पढ़ाई, प्रतिभा और भविष्य का काम

आपकी कुंडली में: आपका दशम (करियर) भाव मेष राशि का है; इसका स्वामी मंगल आपके द्वादश भाव में है।

आपके दशम भाव का स्वामी मंगल आपके द्वादश भाव (व्यय, विश्राम और दूर देश) में है, शत्रु राशि में, इसलिए यह क्षेत्र काम करता है, पर कुछ घर्षण के साथ और धैर्य माँगते हुए। इस भाव पर शुक्र की दृष्टि है, जो सहारा और सुरक्षा देती है, और केतु की भी, जो दबाव के साथ प्रेरणा भी लाती है। इसका अष्टकवर्ग अंक 30 है (लगभग 28 औसत है), जो औसत से ऊपर है और वास्तविक सहारा देता है। एक ओर अष्टकवर्ग में भाव के अंक अच्छे हैं; दूसरी ओर भाव का स्वामी दबाव में है। इसलिए यहाँ मिली-जुली तस्वीर की अपेक्षा रखें: कुछ बातें आसानी से बनती हैं, कुछ धैर्य और दूसरे प्रयास से।

**आपके लिए इसका अर्थ**

अभी के लिए उपयोगी पाठ प्रतिभाओं का है। आपकी कुंडली इन क्षेत्रों में शक्ति दिखाती है: खेल, गणित, इंजीनियरिंग किट और हाथ से किए जाने वाले प्रोजेक्ट; संगीत, कला, नृत्य और डिज़ाइन; और आपके सीखने का तरीका कर्क लग्न से बनता है। आगे जीवन में: पर्दे के पीछे या घर से दूर काम आपके अनुकूल है: विदेशी कंपनियाँ, यात्रा, अस्पताल, शोध-प्रयोगशालाएँ, स्वयंसेवी संस्थाएँ, आयात-निर्यात या एकांत में रचनात्मक काम।

**आप क्या कर सकते हैं**

ऊपर बताए विषयों और शौक़ों को प्रोत्साहन दें, और पढ़ाई की नियमित दिनचर्या रखें; परीक्षाएँ और चुनाव आख़िरी समय की मेहनत की बजाय नियमित अभ्यास से बेहतर होते हैं।

## ❖ मित्रता और पारिवारिक संबंध

आपकी कुंडली में: आपका सप्तम (साझेदारी) भाव मकर राशि का है; इसका स्वामी शनि आपके नवम भाव में है। प्रेम का नैसर्गिक ग्रह शुक्र तुला राशि (स्वराशि) में है।

आपके सप्तम भाव का स्वामी शनि आपके नवम भाव (भाग्य, गुरु और आस्था) में है, सम राशि में, इसलिए यहाँ परिणाम मुख्यतः आपके प्रयास और समय पर निर्भर करते हैं। यह वक्री है, जिसे परंपरा दोहराने और सुधारने का संकेत मानती है: यहाँ दूसरा प्रयास अक्सर पहले से बेहतर जाता है। इस भाव पर गुरु की दृष्टि है, जो सहारा और सुरक्षा देती है, और मंगल की भी, जो दबाव के साथ प्रेरणा भी लाती है। इसका अष्टकवर्ग अंक 27 है (लगभग 28 औसत है), जो लगभग औसत है। अगली बार यह क्षेत्र प्रमुखता से सामने आएगा आपकी मंगल महादशा में शनि की अंतर्दशा में, जून 2027 से जुलाई 2028 तक; यहाँ की योजना के लिए यह अच्छा समय है।

**आपके लिए इसका अर्थ**

अभी के लिए कुंडली का यह भाग बताता है कि आप मित्रों और परिवार से कैसे जुड़ते हैं। आप शिक्षकों, मार्गदर्शकों या बड़ों का सम्मान करते हैं, और मित्रता अक्सर पढ़ाई या यात्रा से बढ़ती है। साझेदारी और विवाह के विषय वयस्क जीवन के हैं और समय वाले अध्यायों में दिए गए हैं।

**आप क्या कर सकते हैं**

ऐसे मित्र चुनें जो आपका सबसे अच्छा रूप सामने लाएँ, और अपनी भावना नम्रता से पर स्पष्ट कहने का अभ्यास करें।

## ❖ धन की आदतें

आपकी कुंडली में: आपके द्वितीय (बचत) भाव का स्वामी सूर्य आपके द्वितीय भाव में है; एकादश (आय) भाव का स्वामी शुक्र आपके चतुर्थ भाव में है। एकादश भाव में 35 बल-अंक (बिंदु) हैं और द्वादश (व्यय) भाव में 34।

आपके द्वितीय भाव का स्वामी सूर्य उसी भाव में है, इसलिए जीवन का यह क्षेत्र काफ़ी हद तक स्वयं को सँभालता है: इसमें आप जो सीधे लगाते हैं, वही लौटता है। इस भाव पर राहु की दृष्टि है, जो माँग करने वाला प्रभाव है: यह क्षेत्र अनुशासन माँगता है और सहनशक्ति बनाता है। इसका अष्टकवर्ग अंक 24 है (लगभग 28 औसत है), इसलिए यहाँ बाहरी सहारा कुछ कम है और नियमित निजी प्रयास अधिक मायने रखता है। एक ओर भाव का स्वामी अच्छी स्थिति में है; दूसरी ओर अष्टकवर्ग अंक कम है। अगली बार यह क्षेत्र प्रमुखता से सामने आएगा आपकी मंगल महादशा में सूर्य की अंतर्दशा में, फ़रवरी 2031 से जून 2031 तक; यहाँ की योजना के लिए यह अच्छा समय है।

**आपके लिए इसका अर्थ**

अभी के लिए यह धन से जुड़ी आपकी शुरुआती आदतों को बताता है। आपको अपने पैसे पर ख़ुद नियंत्रण रखना पसंद है और आप दूसरों को प्रभावित करने के लिए ख़र्च कर सकते हैं; बचत का एक छोटा लक्ष्य मदद करता है।

**आप क्या कर सकते हैं**

जो भी पैसा मिले उसका छोटा हिस्सा बचाने का अभ्यास करें, और बजट की मूल बातें जल्दी सीखें।

## ❖ आपके अनुकूल स्वास्थ्य-आदतें

आपकी कुंडली में: आपका लग्न कर्क जल तत्व की राशि है; लग्नेश चंद्र उच्च (बहुत बलवान) है, और आपके षष्ठ (दिनचर्या) भाव में 31 बल-अंक हैं।

आपके षष्ठ भाव का स्वामी गुरु आपके प्रथम भाव (आप स्वयं) में है, जहाँ यह उच्च का है, अपनी सबसे बलवान स्थिति में, इसलिए यह क्षेत्र अपेक्षाकृत कम खिंचाव में फल देता है। इस भाव पर मंगल, शनि और केतु की दृष्टि है, जो माँग करने वाला प्रभाव है: यह क्षेत्र अनुशासन माँगता है और सहनशक्ति बनाता है। इसका अष्टकवर्ग अंक 31 है (लगभग 28 औसत है), जो औसत से ऊपर है और वास्तविक सहारा देता है। एक ओर भाव का स्वामी अच्छी स्थिति में है; दूसरी ओर पाप ग्रह उस पर दबाव डालते हैं। यह क्षेत्र अभी विशेष रूप से सक्रिय है: गुरु की अंतर्दशा जून 2027 तक चल रही है, इसलिए इस वर्ष यहाँ लिए निर्णयों का वज़न अधिक है। परंपरा में जीवन-शक्ति से जुड़ा सूर्य आपकी कुंडली में स्वराशि में (बलवान) है, और भावनात्मक स्वास्थ्य व नींद से जुड़ा चंद्र उच्च (बहुत बलवान) है।

**आपके लिए इसका अर्थ**

जल तत्व की राशियाँ प्रायः दूसरों के मूड और तनाव को सोख लेती हैं। शांत संध्या, तैराकी या योग जैसा हल्का व्यायाम और उत्साह बढ़ाने वाले लोगों का साथ प्रायः आपके अनुकूल रहता है। आपका दिनचर्या भाव अच्छा सहारा पाता है, इसलिए अच्छी आदतें शुरू होने के बाद प्रायः टिक जाती हैं।

**आप क्या कर सकते हैं**

इसे केवल जीवनशैली का मार्गदर्शन मानें। स्वास्थ्य की किसी भी समस्या के लिए कृपया योग्य डॉक्टर से मिलें।



# अभी आप कहाँ हैं: आपकी वर्तमान दशा

आपका जीवन ग्रहों की अवधियों से गुज़रता है जिन्हें दशा कहते हैं (विंशोत्तरी पद्धति)। मुख्य अवधि (महादशा) कई वर्ष चलती है; उसके भीतर छोटी उप-अवधियाँ (अंतर्दशा) कुछ महीनों से कुछ वर्षों में स्वर बदलती हैं। यहाँ बताया गया है कि अभी क्या चल रहा है और आगे क्या आएगा।

## ❖ मुख्य दशा: मंगल, 15 जनवरी 2025 से 15 जनवरी 2032 तक

आप मंगल की दशा में हैं, जो ऊर्जा, प्रतियोगिता, संपत्ति, भाई-बहन और साहसी कदमों के विषय लाती है। मंगल आपके द्वादश भाव (व्यय, विश्राम और दूर देश) में है और आपके पंचम भाव (रचनात्मकता और विद्या) और दशम भाव (करियर और प्रतिष्ठा) का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि में ये क्षेत्र सामने रहते हैं। जीवन के इस चरण में यह ऐसा दिख सकता है: खेल, प्रतियोगी परीक्षाएँ और क्रोध तथा अधीरता को सँभालना सीखना।

## ❖ वर्तमान अंतर्दशा: गुरु, 1 जुलाई 2026 से 7 जून 2027 तक

मुख्य दशा के भीतर गुरु की अंतर्दशा विकास, मार्गदर्शन और विद्या की एक परत जोड़ती है। गुरु आपके प्रथम भाव (आप स्वयं) में है, उच्च (बहुत बलवान); इसलिए अभी ध्यान इन बातों पर रहता है: आपका शरीर, ऊर्जा, स्वभाव और लोगों पर पड़ने वाली पहली छाप।

**आप क्या कर सकते हैं**

ऊर्जा को एक स्पष्ट लक्ष्य में लगाएँ, नियमित व्यायाम करें और प्रतिक्रिया से पहले रुकें। इस अंतर्दशा में विशेष रूप से: सीखें, सिखाएँ और अच्छी सलाह लें; आशावाद में अधिक वादे या अधिक ख़र्च से बचें।

## ❖ आगे क्या आएगा

शनि की अंतर्दशा, जून 2027 से जुलाई 2028 तक: ध्यान आपके नवम भाव (भाग्य, गुरु और आस्था) पर जाता है। नियमित मेहनत करें, दायित्व सरल करें और देरी में धैर्य रखें।

बुध की अंतर्दशा, जुलाई 2028 से जुलाई 2029 तक: ध्यान आपके द्वितीय भाव (संचित धन और परिवार) पर जाता है। पढ़ें, लिखें और बातचीत से काम निकालें; हस्ताक्षर से पहले हर दस्तावेज़ ध्यान से पढ़ें।

# सरल शब्दों में इस रिपोर्ट का विषय: आपका व्यक्तित्व और जीवन-पथ

यह अध्याय इस रिपोर्ट के लिए सबसे महत्वपूर्ण भावों को एक-एक करके सरल शब्दों में पढ़ता है। विस्तृत अंक-तालिका और तालिकाएँ आगे दी गई हैं।

## ❖ आपका प्रथम भाव: आप स्वयं

आपकी कुंडली में: भाव में कर्क राशि; स्वामी चंद्र आपके एकादश भाव में; यहाँ स्थित ग्रह: गुरु।

रोज़मर्रा में यह भाव दिखता है सुबह उठते समय आपकी ऊर्जा में, किसी नए कमरे में आपके प्रवेश के ढंग में, और कठिन सप्ताह के बाद आप कितनी जल्दी सँभलते हैं उसमें। परंपरा इस क्षेत्र के नैसर्गिक कारक सूर्य को भी देखती है: यह आपके द्वितीय भाव (संचित धन और परिवार) में है, अपनी ही राशि में, सहज और भरोसेमंद, इसलिए आप सामान्यतः इस क्षेत्र पर भरोसा कर सकते हैं। चंद्र आपके प्रथम भाव का स्वामी है, इसलिए इसका प्रभाव आप स्वयं पर भी पड़ता है। अपनी स्थिति से यह आपके पंचम भाव पर दृष्टि डालता है, जिससे इसका प्रभाव रचनात्मकता और विद्या तक भी पहुँचता है।

**आपके लिए इसका अर्थ**

यह भाव इन विषयों का है: आपका शरीर, ऊर्जा, स्वभाव और लोगों पर पड़ने वाली पहली छाप। इसका स्वामी आपके एकादश भाव में है, इसलिए ये विषय आय, मित्रों और संपर्कों से जुड़ते हैं, और प्रायः धीरे-धीरे बढ़ते हैं। यहाँ गुरु विकास, विवेक और संरक्षण लाता है। 29 बल-अंकों (लगभग 28 के औसत) के साथ यहाँ फल संतुलित रहते हैं और प्रयास के अनुसार आते हैं।

**आप क्या कर सकते हैं**

इस क्षेत्र में कदम उठाने का अच्छा समय चंद्र की और यहाँ स्थित ग्रहों की दशाएँ हैं; समय वाला अध्याय इन्हें बताता है।

## ❖ आपका पंचम भाव: रचनात्मकता और विद्या

आपकी कुंडली में: भाव में वृश्चिक राशि; स्वामी मंगल आपके द्वादश भाव में।

रोज़मर्रा में यह भाव दिखता है आनंद के लिए रचे गए काम में, पढ़ाई के ढंग में, संतान से जुड़ी भावनाओं में, और उन शौक़ों में जिनमें समय का पता नहीं चलता। आपके पंचम भाव का स्वामी मंगल आपके द्वादश भाव (व्यय, विश्राम और दूर देश) में है, शत्रु राशि में, इसलिए यह क्षेत्र काम करता है, पर कुछ घर्षण के साथ और धैर्य माँगते हुए। इस भाव पर चंद्र और गुरु की दृष्टि है, जो सहायक प्रभाव है: ज़रूरत पड़ने पर यहाँ मदद और अच्छी सलाह मिल जाती है। इसका अष्टकवर्ग अंक 22 है (लगभग 28 औसत है), इसलिए यहाँ बाहरी सहारा कुछ कम है और नियमित निजी प्रयास अधिक मायने रखता है। एक ओर शुभ ग्रह भाव को सहारा देते हैं; दूसरी ओर भाव का स्वामी दबाव में है। दोनों को तौलें तो सहारा वास्तविक है पर अपने-आप नहीं: नियमित प्रयास ही उसे परिणाम में बदलता है। परंपरा इस क्षेत्र के नैसर्गिक कारक गुरु को भी देखती है: यह आपके प्रथम भाव (आप स्वयं) में है, जहाँ यह उच्च का है, अपनी सबसे बलवान स्थिति में, इसलिए यह क्षेत्र अपेक्षाकृत कम खिंचाव में फल देता है।

**आपके लिए इसका अर्थ**

यह भाव इन विषयों का है: बुद्धि, पढ़ाई, रचनात्मक काम, प्रेम और संतान। इसका स्वामी आपके द्वादश भाव में है, इसलिए ये विषय ख़र्च, दूरी या दूर देशों से और पर्दे के पीछे के शांत काम से जुड़ते हैं। यहाँ कोई ग्रह नहीं है, जो आम बात है; फल मुख्यतः स्वामी के माध्यम से आते हैं। 22 बल-अंकों (28 के औसत से कम) के साथ इस क्षेत्र में अधिक धैर्य और योजना चाहिए।

**आप क्या कर सकते हैं**

इस क्षेत्र में कदम उठाने का अच्छा समय मंगल की और यहाँ स्थित ग्रहों की दशाएँ हैं; समय वाला अध्याय इन्हें बताता है।

## ❖ आपका नवम भाव: भाग्य, गुरु और आस्था

आपकी कुंडली में: भाव में मीन राशि; स्वामी गुरु आपके प्रथम भाव में; यहाँ स्थित ग्रह: शनि।

रोज़मर्रा में यह भाव दिखता है उन गुरुओं और मार्गदर्शकों में जिन पर आप भरोसा करते हैं, लंबी यात्राओं में, आपकी आस्था में, और पिता या पिता-तुल्य व्यक्ति से संबंध में। आपके नवम भाव का स्वामी गुरु आपके प्रथम भाव (आप स्वयं) में है, जहाँ यह उच्च का है, अपनी सबसे बलवान स्थिति में, इसलिए यह क्षेत्र अपेक्षाकृत कम खिंचाव में फल देता है। इस भाव पर गुरु की दृष्टि है, जो सहायक प्रभाव है: ज़रूरत पड़ने पर यहाँ मदद और अच्छी सलाह मिल जाती है।

**आपके लिए इसका अर्थ**

यह भाव इन विषयों का है: पिता और मार्गदर्शक, उच्च शिक्षा, लंबी यात्राएँ, आस्था और सौभाग्य। इसका स्वामी आपके प्रथम भाव में है, इसलिए ये विषय आप स्वयं सँभालते हैं, और ये आपकी पहचान तथा लोगों की नज़र में आपकी छवि को आकार देते हैं। यहाँ शनि अनुशासन, देरी और टिकाऊ ढाँचा लाता है। 31 बल-अंकों (28 के औसत से अधिक) के साथ यह क्षेत्र प्रयास का अच्छा उत्तर देता है।

**आप क्या कर सकते हैं**

इस क्षेत्र में कदम उठाने का अच्छा समय गुरु की और यहाँ स्थित ग्रहों की दशाएँ हैं; समय वाला अध्याय इन्हें बताता है।

## जन्म विवरण और पंचांग

# जन्म विवरण और पंचांग

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: ये तालिकाएँ इस रिपोर्ट के हर कथन का आधार हैं; जब आपके व्यक्तित्व के बारे में कोई बात सच लगे, तो वह यहीं से आती है।

| | |
|---|---|
| सूर्योदय<br>05:48 | सूर्यास्त<br>18:21 |

| | | |
|---|---|---|
| अयनांश (लाहिरी)<br>24°14′ | अक्षांश / देशांतर<br>26.847, 80.946 | समय-क्षेत्र<br>Asia/Kolkata |

| | |
|---|---|
| ऋतु<br>वर्षा | अयन<br>दक्षिणायन |

### ❖ आपके जन्म-क्षण के पाँच अंग

पंचांग ("पाँच अंग") उस क्षण की गुणवत्ता दर्ज करता है: तिथि (चांद्र दिवस), वार, नक्षत्र (चंद्र का तारा), योग (सूर्य-चंद्र का संयोजन) और करण (आधी तिथि)। पारंपरिक परिवार इन्हें हर जन्म पत्रिका के शीर्ष पर लिखते हैं।

### ❖ तिथि: नवमी (9)

चंद्र सूर्य से 278.3° आगे था, कृष्ण पक्ष की 30 में से 24वीं तिथि में, और तिथि का लगभग 81% भाग शेष था। परंपरा इस तिथि को इन गुणों से जोड़ती है: साहस और जो उपयोगी न रहे उसे समाप्त करने का बल।

### ❖ वार: शुक्रवार

आपका जन्म शुक्रवार को हुआ, जिसका स्वामी शुक्र है। शुक्रवार का जन्म आकर्षण, कला और सुख-प्रियता से जोड़ा जाता है। आपका जन्म स्थानीय सूर्योदय (05:48) से पहले हुआ, इसलिए पारंपरिक गणना में वार पिछले दिन का माना जाता है।

### ❖ नित्य योग: वज्र

सूर्य और चंद्र के भोगांशों का योग 27 में से 15वाँ योग देता है, जिसे परंपरा में बल और दृढ़ता से जोड़ा जाता है।

### ❖ करण: तैतिल

हर तिथि में दो करण होते हैं। आपके करण का पारंपरिक स्वभाव है: सुख-प्रिय और मिलनसार।

### ❖ चांद्र मास: श्रावण

अमांत पंचांग के अनुसार आपका जन्म श्रावण मास में, विक्रम संवत 2083 (शक 1948) में, वर्षा ऋतु और दक्षिणायन में हुआ।

### ❖ अवकहड़ा चक्र

ये जन्म-नक्षत्र के पारंपरिक गुण हैं, जिनका उपयोग नामकरण और विवाह-मिलान में होता है।

| विषय | मान |
|---|---|
| लग्न | कर्क |
| वर्ण | वैश्य |
| वश्य | चतुष्पद |
| योनि | सर्प |
| गण | देव |
| नाड़ी | मध्य |
| नक्षत्र स्वामी | मंगल |
| राशि स्वामी | शुक्र |
| नामाक्षर | वे |
| पाया | स्वर्ण पाया |



## जन्म कुंडलियाँ और ग्रह-स्थितियाँ

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: यह पठन के पीछे की गणना है; इसे पढ़ना ज़रूरी नहीं, पर यह दिखाती है कि हर निजी कथन आपकी अपनी कुंडली से आता है।

उत्तरी और दक्षिणी शैली की बड़ी लग्न कुंडलियाँ, और चन्द्र कुंडली, इस रिपोर्ट के आरंभिक पृष्ठों पर हैं। नीचे की तालिका प्रत्येक ग्रह का राशि, अंश, नक्षत्र, पाद, गरिमा और नवमांश देती है, ताकि आप चक्रों से मिला सकें।

ग्रहों के पारंपरिक संक्षिप्त नाम (सू, चं, मं, बु, गु, शु, श, रा, के) के साथ राशि में अंश दिए गए हैं। उत्तर भारतीय कुंडली में संख्याएँ राशियाँ हैं (1 = मेष)।

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र / पद | नक्षत्र स्वामी | भाव | बल | अवस्था | नवांश राशि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | कर्क | 28°12′ | आश्लेषा 4 | बुध | 1 | – | – | – |
| सूर्य | सिंह | 18°11′ | पूर्वा फाल्गुनी 2 | शुक्र | 2 | स्वराशि | वृद्ध | कन्या |
| चंद्र | वृषभ | 26°27′ | मृगशिरा 1 | मंगल | 11 | उच्च | बाल | सिंह |
| मंगल | मिथुन | 21°39′ | पुनर्वसु 1 | गुरु | 12 | शत्रु राशि | वृद्ध | मेष |

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र / पद | नक्षत्र स्वामी | भाव | बल | अवस्था | नवांश राशि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुध (अ) | सिंह | 25°45′ | पूर्वा फाल्गुनी 4 | शुक्र | 2 | मित्र राशि | मृत | वृश्चिक |
| गुरु | कर्क | 20°18′ | आश्लेषा 2 | बुध | 1 | उच्च | कुमार | मकर |
| शुक्र | तुला | 1°59′ | चित्रा 3 | मंगल | 4 | स्वराशि | बाल | तुला |
| शनि (व) | मीन | 19°13′ | रेवती 1 | बुध | 9 | सम राशि | कुमार | धनु |
| राहु | कुंभ | 4°52′ | धनिष्ठा 4 | मंगल | 8 | छाया ग्रह | – | वृश्चिक |
| केतु | सिंह | 4°52′ | मघा 2 | केतु | 2 | छाया ग्रह | – | वृषभ |

(व) वक्री और (अ) अस्त ग्रह को दर्शाता है। अवस्था अंशों के अनुसार ग्रह की आयु-अवस्था है। नवांश स्तंभ में वह D9 राशि है जिसका उपयोग पूरी रिपोर्ट में हुआ है।

## नक्षत्र और तारा चक्र

# नक्षत्र और तारा चक्र

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: चंद्र आपके मूड, नींद और सुरक्षा के एहसास को आकार देता है; आप तनाव में अड़कर और मेहनत करने लगते हैं, और यह अध्याय बताता है कि क्यों और क्या मदद करता है।

आपके जन्म-नक्षत्र मृगशिरा (पद 1) के देवता सोम (चंद्रमा का अमृत) हैं। इसका प्रतीक हिरण का सिर है। पारंपरिक गुण: जिज्ञासा, कोमलता और संवेदनशीलता, शोध-क्षमता और अच्छा वार्तालाप। इससे जुड़े कार्य-क्षेत्र: शोध, लेखन, यात्रा, अध्यापन, वस्त्र, संगीत, बिक्री और खोज-प्रधान कोई भी क्षेत्र।

तारा चक्र आपके जन्म-नक्षत्र मृगशिरा से 27 नक्षत्रों को नौ समूहों (ताराओं) में गिनता है। इसका उपयोग शुभ आरंभ के नक्षत्र चुनने और आपके ग्रहों के नक्षत्रों को पढ़ने में होता है।

| तारा | नक्षत्र | अर्थ | यहाँ आपके ग्रह |
|---|---|---|---|
| जन्म | मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा | स्वयं जन्म-नक्षत्र: संवेदनशील, स्वास्थ्य और निर्णयों में सावधानी का समय | चंद्र, शुक्र, राहु |
| संपत् | आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा | धन और लाभ | – |
| विपत् | पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वा भाद्रपद | बाधाएँ; सावधानी से आगे बढ़ें | मंगल |
| क्षेम | पुष्य, अनुराधा, उत्तरा भाद्रपद | कुशलता और सुरक्षा | – |
| प्रत्यरि | आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती | विरोध; टकराव से बचें | गुरु, शनि |
| साधक | मघा, मूल, अश्विनी | सिद्धि; प्रयास सफल होते हैं | केतु |
| वध | पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी | सबसे कठिन तारा; बड़े आरंभ टालें | सूर्य, बुध |
| मित्र | उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, कृत्तिका | मित्रता और सहायता | – |
| परम मित्र | हस्त, श्रवण, रोहिणी | परम मित्र; अत्यंत सहायक | – |

सहायक ताराओं (संपत्, क्षेम, साधक, मित्र, परम मित्र) में ग्रह: केतु; ये आपके लिए प्रायः सहजता से कार्य करते हैं।

कठिन ताराओं (विपत्, प्रत्यरि, वध) में ग्रह: सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शनि; इनकी दशाओं में सावधानी फल देती है।

## शिशु का जन्म नक्षत्र और नामाक्षर

# शिशु का जन्म नक्षत्र और नामाक्षर

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: घर और परिवार आपके सुरक्षा के एहसास को आकार देते हैं; यह अध्याय आपकी कुंडली को आपके सबसे क़रीबी संबंधों से जोड़ता है।

| चंद्र राशि | नक्षत्र |
|---|---|
| वृषभ | मृगशिरा पद 1 |
| **पारंपरिक नामाक्षर** | **इस नक्षत्र के सभी अक्षर** |
| वे (Ve) | वे, वो, का, की |

नामकरण संस्कार की परंपरा में शिशु का नाम चंद्र नक्षत्र के पद (चरण) से जुड़े अक्षर से आरंभ होता है। आपके शिशु के लिए यह “वे” है। परिवार प्रायः उसी नक्षत्र का कोई भी अक्षर चुन लेते हैं।

मृगशिरा, मृग का शीश, सोम का नक्षत्र है और खोज का प्रतीक है। हवा सूँघते हिरण की तरह इसके जातक जिज्ञासु, कोमल और सदा खोज में रहते हैं, ज्ञान, सौंदर्य या सही स्थान की। मंगल इस खोज को सक्रिय बनाता है।



# नाम के सुझाव

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: यह अध्याय वृषभ राशि के स्थिर चंद्र वाले परवाह करने वाले कर्क लग्न के व्यक्ति के चित्र में और विवरण जोड़ता है; इसे अपने जीवन को ध्यान में रखकर पढ़ें और जो सच लगे, उसे रखें।

रोमन अक्षर K, V से आरंभ होने वाले कुछ आरंभिक सुझाव, उनके कैल्डियन नामांक सहित। जाँच लें कि नाम की पहली ध्वनि आपके चुने हुए अक्षर से मेल खाती हो।

| नाम | प्रायः | अर्थ | नामांक |
|---|---|---|---|
| कबीर (Kabir) | बालक | महान | 8 |
| कियारा (Kiara) | बालिका | उज्ज्वल | 7 |
| कृष (Krish) | बालक | कृष्ण | 4 |
| काव्या (Kavya) | बालिका | कविता | 2 |
| विहान (Vihaan) | बालक | भोर | 1 |
| वन्या (Vanya) | बालिका | कृपापूर्ण उपहार | 5 |
| विवान (Vivaan) | बालक | जीवन से भरपूर | 2 |
| वेदिका (Vedika) | बालिका | वेदी | 1 |

नामों के अर्थ पारंपरिक हैं और क्षेत्र व भाषा के अनुसार बदल सकते हैं। वही नाम चुनें जो आपके परिवार को प्रिय हो।

शिशु की चंद्र राशि

# शिशु की चंद्र राशि

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: पारिवारिक पैटर्न हमें बचपन से आकार देते हैं; यह अध्याय आपकी कुंडली के सहायक धागे और कोमल प्रयास वाले क्षेत्र दिखाता है।

| | |
|---|---|
| चंद्र राशि<br>वृषभ | नक्षत्र<br>मृगशिरा (पद 1) |
| नक्षत्र स्वामी<br>मंगल | देवता<br>सोम (चंद्रमा का अमृत) |
| गण<br>देव | नामाक्षर<br>वे |

भारतीय ज्योतिष में चंद्र राशि का महत्व लग्न जितना ही है: यह आपके मन, भावनात्मक आवश्यकताओं और रोज़मर्रा के अनुभव का वर्णन करती है। आपका चंद्र वृषभ में, आपकी कुंडली के एकादश भाव में है।

वृषभ बारह राशियों में सबसे स्थिर है। मेष शुरू करता है तो वृषभ बनाता और सँभालता है। शुक्र इसे गुणवत्ता की परख, संगीत व कला का आनंद और धैर्य देता है। चंद्रमा उच्च होने से शास्त्र इसे संतोष की राशि मानते हैं।

### ❖ आपका जन्म नक्षत्र: मृगशिरा

मंगल इस खोज को सक्रिय बनाता है।

इस नक्षत्र की पारंपरिक शक्तियाँ: जिज्ञासा; कोमलता और संवेदनशीलता; शोध-क्षमता; अच्छा वार्तालाप।

आपका चंद्र मृगशिरा के पद 1 में है, जिसका पारंपरिक नामाक्षर “वे” है। आपकी विंशोत्तरी दशा का क्रम इस नक्षत्र के स्वामी मंगल से आरंभ होता है।

आपका लग्न

# आपका लग्न

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: वृषभ राशि के स्थिर चंद्र वाले परवाह करने वाले कर्क लग्न के व्यक्ति होने के नाते आप इस अध्याय में बहुत कुछ अपने जैसा पाएँगे; यह बताता है कि आपकी ये सहज प्रवृत्तियाँ कहाँ से आती हैं।

| लग्न | अंश |
|---|---|
| कर्क | 28°12′ |

| तत्व | लग्नेश |
|---|---|
| जल | चंद्र |

| लग्नेश की स्थिति |
|---|
| एकादश भाव, वृषभ |

आपका लग्न वह राशि है जो आपके जन्म के समय पूर्वी क्षितिज पर उदित हो रही थी। यह आपके शरीर, स्वभाव और जीवन को देखने के दृष्टिकोण का वर्णन करता है। आपके लिए यह कर्क है: चंद्र द्वारा शासित जल तत्व की राशि।

कर्क चंद्रमा की अपनी राशि है, इसलिए भावना इसकी मूल भाषा है। केकड़े की तरह बाहर कवच और भीतर कोमलता, विश्वास होने पर कर्क अत्यंत निष्ठावान बनता है। चर राशि होने से यह परिवार और घर के लिए पहल करता है।

### ❖ स्वाभाविक शक्तियाँ

सहानुभूति और भावनात्मक समझ; निष्ठा और देखभाल; उत्कृष्ट स्मृति; जहाँ जाए वहाँ घर का एहसास।

### ❖ विकास के क्षेत्र

हर बात को व्यक्तिगत न लेना; अतीत को छोड़ना; देखभाल माँगना भी सीखना।

### ❖ आपके लग्नेश: चंद्र, एकादश भाव में

आपकी कुंडली का स्वामी चंद्र आपके एकादश भाव में है, आय, मित्र, बड़े भाई-बहन, समुदाय और इच्छाओं की पूर्ति का भाव। आपकी ऊर्जा और उद्देश्य-भावना का बड़ा भाग स्वाभाविक रूप से जीवन के इन्हीं क्षेत्रों की ओर बहता है। यहाँ यह उच्च का है, इसलिए परंपरा के अनुसार इसके गुण सबसे प्रबल और रचनात्मक रूप में काम करते हैं।



## स्वयं और स्वभाव: मुख्य भाव

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: कुंडली का यही हिस्सा लोग सबसे पहले देखते हैं; यह आपकी पहली छाप और भरोसेमंद सहज प्रवृत्तियों को समझाता है।

यह अंक-पत्र स्वयं और स्वभाव के लिए सबसे महत्वपूर्ण भावों को देखता है। हर भाव को 10 में से अंक मिलते हैं, जिनमें उसके अष्टकवर्ग बिंदु, भावेश का बल और स्थिति, उस पर दृष्टियाँ और D9 में भावेश का बल शामिल है।

| भाव | राशि | स्वामी | स्वामी स्थित | सर्वा. | अंक | श्रेणी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम भाव | कर्क | चंद्र | एकादश | 29 | 7.0 / 10 | बलवान |
| पंचम भाव | वृश्चिक | मंगल | द्वादश | 22 | 4.5 / 10 | मध्यम |
| नवम भाव | मीन | गुरु | प्रथम | 31 | 7.0 / 10 | बलवान |

7 या अधिक अंक प्रबल, 4.5–7 मध्यम और 4.5 से कम तुलनात्मक रूप से निर्बल हैं। ये आपकी अपनी कुंडली के भावों की तुलना करते हैं, दूसरों से नहीं।

### ❖ प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) · 7.0/10

स्वामी-शृंखला: प्रथम भाव का स्वामी चंद्र आपके एकादश भाव में वृषभ राशि में है; उस राशि का स्वामी शुक्र आपके चतुर्थ भाव (स्वराशि) में है, इसलिए अंततः फल उसी पर निर्भर हैं। D9 में चंद्र षष्ठ भाव में सिंह राशि (मित्र राशि) में है। कुल मिलाकर प्रथम भाव प्रबल है (1 शुभ और 0 अन्य प्रभाव), इसलिए आप इस पर विश्वास से निर्माण कर सकते हैं।

### ❖ पंचम भाव (संतान और बुद्धि) · 4.5/10

स्वामी-शृंखला: पंचम भाव का स्वामी मंगल आपके द्वादश भाव में मिथुन राशि में है; उस राशि का स्वामी बुध आपके द्वितीय भाव (मित्र राशि) में है, इसलिए अंततः फल उसी पर निर्भर हैं। भावात् भावम् सिद्धांत से, पंचम भाव से उतनी ही दूर का भाव जितना वह लग्न से है, आपका नवम भाव (मीन) है, जिसमें शनि हैं; यह दिखाता है कि ये विषय कैसे परिपक्व होते हैं। D9 में मंगल द्वितीय भाव में मेष राशि (स्वराशि) में है। कुल मिलाकर पंचम भाव मध्यम है (2 शुभ और 0 अन्य प्रभाव): स्थिर प्रयास से अच्छे फल।

### ❖ नवम भाव (भाग्य और गुरु) · 7.0/10

स्वामी-शृंखला: नवम भाव का स्वामी गुरु आपके प्रथम भाव में कर्क राशि में है; उस राशि का स्वामी चंद्र आपके एकादश भाव (उच्च) में है, इसलिए अंततः फल उसी पर निर्भर हैं। भावात् भावम् (भाव से भाव) सिद्धांत से, नवम भाव से उतनी ही दूर का भाव जितना वह लग्न से है, आपका पंचम भाव (वृश्चिक) है, जिसमें कोई ग्रह नहीं है; यह दिखाता है कि ये विषय कैसे परिपक्व होते हैं। D9 में गुरु एकादश भाव में मकर राशि (नीच) में है। कुल मिलाकर नवम भाव प्रबल है (1 शुभ और 1 अन्य प्रभाव), इसलिए आप इस पर विश्वास से निर्माण कर सकते हैं।



## स्वयं और स्वभाव: कारक ग्रह

> यह आपसे कैसे जुड़ता है: "स्वयं और स्वभाव: कारक ग्रह" वृषभ राशि के स्थिर चंद्र वाले परवाह करने वाले कर्क लग्न के व्यक्ति के एक और पहलू को देखता है; इसे अपने कामकाजी जीवन को ध्यान में रखकर पढ़ें, क्योंकि आप चुनौती, गति और आगे बढ़कर नेतृत्व पसंद करते हैं।

कारक वे ग्रह हैं जो स्वभावतः स्वयं और स्वभाव के सूचक हैं। वर्गों में उनकी स्थिति, उनका अष्टकवर्ग और अगले दो वर्षों में उनकी चाल भाव-विश्लेषण में दूसरी परत जोड़ते हैं।

### ❖ सूर्य: आपकी मूल पहचान

वर्गों में सूर्य: D1 सिंह, D2 कर्क, D3 धनु, D4 कुंभ, D7 धनु, D9 कन्या, D10 कुंभ, D12 मीन, D24 तुला, D30 मिथुन, D60 सिंह।

सूर्य D1, D27, D40, D60 में उच्च या स्वराशि का है, और D24 में नीच का; इसका विंशोपक अंक 14.7/20 है।

सूर्य को मेष (6), मीन (6) और मिथुन (5) में सबसे अधिक सहयोग है, जो आपका दशम भाव, नवम भाव और द्वादश भाव है; इन राशियों से इसका गोचर प्रायः इसके सर्वोत्तम फल देता है।

### ❖ चंद्र: आपके मन

वर्गों में चंद्र: D1 वृषभ, D2 सिंह, D3 मकर, D4 कुंभ, D7 वृषभ, D9 सिंह, D10 कन्या, D12 मीन, D24 मेष, D30 वृश्चिक, D60 कन्या।

चंद्र D1, D7, D20 में उच्च या स्वराशि का है, और D30, D45 में नीच का; इसका विंशोपक अंक 14.2/20 है।

चंद्र को वृषभ (6), कुंभ (6) और कर्क (5) में सबसे अधिक सहयोग है, जो आपका एकादश भाव, अष्टम भाव और प्रथम भाव है; इन राशियों से इसका गोचर प्रायः इसके सर्वोत्तम फल देता है।



## सूर्य विस्तार से: वर्ग और गोचर

यह आपसे कैसे जुड़ता है: "सूर्य विस्तार से: वर्ग और गोचर" वृषभ राशि के स्थिर चंद्र वाले परवाह करने वाले कर्क लग्न के व्यक्ति के एक और पहलू को देखता है; देखें कि यह आपके क़रीबी लोगों के बारे में क्या कहता है, क्योंकि आप प्रेम में मित्रता और अच्छी बातचीत चाहते हैं।

इस रिपोर्ट में स्वयं और स्वभाव के प्रमुख कारकों में से एक सूर्य है। नीचे इसे सभी सोलह विभाजन कुंडलियों में और फिर अगले दो वर्षों के गोचर-मार्ग पर देखा गया है।

| वर्ग | नाम | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|---|
| D1 | राशि | सिंह | द्वितीय | स्वराशि |
| D2 | होरा | कर्क | द्वादश | मित्र राशि |
| D3 | द्रेष्काण | धनु | दशम | मित्र राशि |
| D4 | चतुर्थांश | कुंभ | एकादश | शत्रु राशि |
| D7 | सप्तांश | धनु | षष्ठ | मित्र राशि |
| D9 | नवांश | कन्या | सप्तम | सम राशि |
| D10 | दशमांश | कुंभ | तृतीय | शत्रु राशि |
| D12 | द्वादशांश | मीन | दशम | मित्र राशि |
| D16 | षोडशांश | वृषभ | एकादश | शत्रु राशि |
| D20 | विंशांश | धनु | तृतीय | मित्र राशि |
| D24 | चतुर्विंशांश | तुला | षष्ठ | नीच |
| D27 | भांश | सिंह | सप्तम | स्वराशि |
| D30 | त्रिंशांश | मिथुन | अष्टम | सम राशि |
| D40 | खवेदांश | मेष | षष्ठ | उच्च |
| D45 | अक्षवेदांश | वृश्चिक | द्वितीय | मित्र राशि |
| D60 | षष्ट्यंश | सिंह | षष्ठ | स्वराशि |

D2 (होरा, धन और संसाधन के लिए): सूर्य कर्क राशि में, उस कुंडली के द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष) में है। मित्र राशि में होने से यह इस क्षेत्र में सहज है।

D3 (द्रेष्काण, भाई-बहन, साहस और पहल के लिए): सूर्य धनु राशि में, उस कुंडली के दशम भाव (करियर और पद) में है।

D4 (चतुर्थांश, संपत्ति, घर और अचल संपदा के लिए): सूर्य कुंभ राशि में, उस कुंडली के एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) में है। शत्रु राशि में होने से इस क्षेत्र में इसे कुछ घर्षण मिलता है।

D7 (सप्तांश, संतान और सृजन के लिए): सूर्य धनु राशि में, उस कुंडली के षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) में है।

D9 (नवांश, विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल के लिए): सूर्य कन्या राशि में, उस कुंडली के सप्तम भाव (विवाह और साझेदार) में है। सम राशि में होने से फल अन्य कारकों पर निर्भर हैं।

D10 (दशमांश, करियर और सार्वजनिक उपलब्धि के लिए): सूर्य कुंभ राशि में, उस कुंडली के तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) में है।

D12 (द्वादशांश, माता-पिता और वंश के लिए): सूर्य मीन राशि में, उस कुंडली के दशम भाव (करियर और पद) में है।

D16 (षोडशांश, वाहन, सुख-सुविधा और प्रसन्नता के लिए): सूर्य वृषभ राशि में, उस कुंडली के एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) में है।

D20 (विंशांश, आध्यात्मिक साधना और भक्ति के लिए): सूर्य धनु राशि में, उस कुंडली के तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) में है।

D24 (चतुर्विंशांश, शिक्षा और विद्या के लिए): सूर्य तुला राशि में, उस कुंडली के षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) में है। यहाँ नीच का होने से इन विषयों में धैर्य और प्रयास चाहिए।

D27 (भांश, शक्तियाँ और दुर्बलताएँ के लिए): सूर्य सिंह राशि में, उस कुंडली के सप्तम भाव (विवाह और साझेदार) में है। यहाँ स्वराशि में होने से यह इन विषयों को आत्मविश्वास से सँभालता है।

D30 (त्रिंशांश, कठिनाइयाँ और उनका सामना के लिए): सूर्य मिथुन राशि में, उस कुंडली के अष्टम भाव (रूपांतरण और विरासत) में है।

D40 (खवेदांश, मातृ-पक्ष से शुभ-अशुभ प्रभाव के लिए): सूर्य मेष राशि में, उस कुंडली के षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) में है। यहाँ उच्च का होने से यह इन विषयों को प्रबल सहयोग देता है।

D45 (अक्षवेदांश, पितृ-पक्ष से चरित्र और आचरण के लिए): सूर्य वृश्चिक राशि में, उस कुंडली के द्वितीय भाव (धन और परिवार) में है।

D60 (षष्ट्यंश, पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील के लिए): सूर्य सिंह राशि में, उस कुंडली के षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) में है।

## ❖ 24 महीनों में सूर्य का गोचर-मार्ग

| राशि | से | तक | चंद्र से | लग्न से | बिंदु |
|---|---|---|---|---|---|
| कन्या | 11 अक्टूबर 2026 | 17 अक्टूबर 2026 | पंचम | तृतीय | 5 |
| तुला | 17 अक्टूबर 2026 | 16 नवंबर 2026 | षष्ठ | चतुर्थ | 4 |
| वृश्चिक | 16 नवंबर 2026 | 16 दिसंबर 2026 | सप्तम | पंचम | 3 |
| धनु | 16 दिसंबर 2026 | 14 जनवरी 2027 | अष्टम | षष्ठ | 5 |
| मकर | 14 जनवरी 2027 | 13 फ़रवरी 2027 | नवम | सप्तम | 3 |
| कुंभ | 13 फ़रवरी 2027 | 15 मार्च 2027 | दशम | अष्टम | 3 |
| मीन | 15 मार्च 2027 | 14 अप्रैल 2027 | एकादश | नवम | 6 |
| मेष | 14 अप्रैल 2027 | 15 मई 2027 | द्वादश | दशम | 6 |
| वृषभ | 15 मई 2027 | 15 जून 2027 | प्रथम | एकादश | 4 |
| मिथुन | 15 जून 2027 | 17 जुलाई 2027 | द्वितीय | द्वादश | 5 |
| कर्क | 17 जुलाई 2027 | 17 अगस्त 2027 | तृतीय | प्रथम | 3 |
| सिंह | 17 अगस्त 2027 | 17 सितंबर 2027 | चतुर्थ | द्वितीय | 1 |
| कन्या | 17 सितंबर 2027 | 18 अक्टूबर 2027 | पंचम | तृतीय | 5 |
| तुला | 18 अक्टूबर 2027 | 17 नवंबर 2027 | षष्ठ | चतुर्थ | 4 |
| वृश्चिक | 17 नवंबर 2027 | 16 दिसंबर 2027 | सप्तम | पंचम | 3 |
| धनु | 16 दिसंबर 2027 | 15 जनवरी 2028 | अष्टम | षष्ठ | 5 |

| राशि | से | तक | चंद्र से | लग्न से | बिंदु |
|---|---|---|---|---|---|
| मकर | 15 जनवरी 2028 | 13 फ़रवरी 2028 | नवम | सप्तम | 3 |
| कुंभ | 13 फ़रवरी 2028 | 14 मार्च 2028 | दशम | अष्टम | 3 |
| मीन | 14 मार्च 2028 | 13 अप्रैल 2028 | एकादश | नवम | 6 |
| मेष | 13 अप्रैल 2028 | 14 मई 2028 | द्वादश | दशम | 6 |
| वृषभ | 14 मई 2028 | 15 जून 2028 | प्रथम | एकादश | 4 |
| मिथुन | 15 जून 2028 | 16 जुलाई 2028 | द्वितीय | द्वादश | 5 |
| कर्क | 16 जुलाई 2028 | 16 अगस्त 2028 | तृतीय | प्रथम | 3 |
| सिंह | 16 अगस्त 2028 | 16 सितंबर 2028 | चतुर्थ | द्वितीय | 1 |
| कन्या | 16 सितंबर 2028 | 10 अक्टूबर 2028 | पंचम | तृतीय | 5 |

अक्टूबर 2026 से कन्या में: चंद्र से पाँचवें सूर्य संतान, अध्ययन और रचनात्मक कार्य पर ध्यान लाता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 5)।

अक्टूबर 2026 से तुला में: चंद्र से छठे सूर्य बाधाओं पर विजय और लंबित काम निपटाने में सहायक है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 4)।

नवंबर 2026 से वृश्चिक में: चंद्र से सातवें सूर्य साझेदारों और यात्रा को उभारता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 3)।

दिसंबर 2026 से धनु में: चंद्र से आठवें सूर्य स्वास्थ्य और छिपे मामलों में सावधानी की सलाह देता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 5)।

जनवरी 2027 से मकर में: चंद्र से नौवें सूर्य बड़ों, गुरुओं और सिद्धांतों से जुड़े प्रसंग लाता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 3)।

फ़रवरी 2027 से कुंभ में: चंद्र से दसवें सूर्य करियर में प्रगति और मान्यता का साथ देता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 3)।

मार्च 2027 से मीन में: चंद्र से ग्यारहवें सूर्य लाभ और वरिष्ठों का सहयोग लाता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 6)।

अप्रैल 2027 से मेष में: चंद्र से बारहवें सूर्य विश्राम, योजना और शांत कार्य के अनुकूल है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 6)।

मई 2027 से वृषभ में: चंद्र पर सूर्य ऊर्जा और दृश्यता बढ़ाता है, साथ ही चिड़चिड़ापन भी (वहाँ इसके अपने बिंदु: 4)।

जून 2027 से मिथुन में: चंद्र से दूसरे सूर्य धन और परिवार में वाणी को केंद्र में रखता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 5)।

जुलाई 2027 से कर्क में: चंद्र से तीसरे सूर्य पहल और प्रतिद्वंद्वियों पर सफलता का साथ देता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 3)।

अगस्त 2027 से सिंह में: चंद्र से चौथे सूर्य घर और मन की शांति को केंद्र में रखता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 1)।

सितंबर 2027 से कन्या में: चंद्र से पाँचवें सूर्य संतान, अध्ययन और रचनात्मक कार्य पर ध्यान लाता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 5)।

अक्टूबर 2027 से तुला में: चंद्र से छठे सूर्य बाधाओं पर विजय और लंबित काम निपटाने में सहायक है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 4)।

नवंबर 2027 से वृश्चिक में: चंद्र से सातवें सूर्य साझेदारों और यात्रा को उभारता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 3)।

दिसंबर 2027 से धनु में: चंद्र से आठवें सूर्य स्वास्थ्य और छिपे मामलों में सावधानी की सलाह देता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 5)।

जनवरी 2028 से मकर में: चंद्र से नौवें सूर्य बड़ों, गुरुओं और सिद्धांतों से जुड़े प्रसंग लाता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 3)।

फ़रवरी 2028 से कुंभ में: चंद्र से दसवें सूर्य करियर में प्रगति और मान्यता का साथ देता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 3)।

मार्च 2028 से मीन में: चंद्र से ग्यारहवें सूर्य लाभ और वरिष्ठों का सहयोग लाता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 6)।

अप्रैल 2028 से मेष में: चंद्र से बारहवें सूर्य विश्राम, योजना और शांत कार्य के अनुकूल है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 6)।

मई 2028 से वृषभ में: चंद्र पर सूर्य ऊर्जा और दृश्यता बढ़ाता है, साथ ही चिड़चिड़ापन भी (वहाँ इसके अपने बिंदु: 4)।

जून 2028 से मिथुन में: चंद्र से दूसरे सूर्य धन और परिवार में वाणी को केंद्र में रखता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 5)।

जुलाई 2028 से कर्क में: चंद्र से तीसरे सूर्य पहल और प्रतिद्वंद्वियों पर सफलता का साथ देता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 3)।

अगस्त 2028 से सिंह में: चंद्र से चौथे सूर्य घर और मन की शांति को केंद्र में रखता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 1)।

सितंबर 2028 से कन्या में: चंद्र से पाँचवें सूर्य संतान, अध्ययन और रचनात्मक कार्य पर ध्यान लाता है (वहाँ इसके अपने बिंदु: 5)।



# स्वयं और स्वभाव: समय-खिड़कियाँ

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: कौन सी अवधि क़दम उठाने की है और कौन सी धैर्य की, यह जानकर योजना बनाना आसान होता है; आप चुनौती, गति और आगे बढ़कर नेतृत्व पसंद करते हैं, इसलिए बड़े क़दमों का समय इससे तय करें।

अगले 10 वर्षों में स्वयं और स्वभाव के लिए समय-खिड़कियाँ, इस आधार पर क्रमबद्ध कि महादशा और अंतर्दशा स्वामी मुख्य भावों और कारकों से कितनी दृढ़ता से जुड़े हैं। अधिक अंक उन अवधियों को दर्शाते हैं जब ये विषय सबसे अधिक गतिशील होने की संभावना रखते हैं।

| अवधि | से | तक | अंक | कारण |
|---|---|---|---|---|
| मंगल / गुरु | जुलाई 2026 | जून 2027 | 6.2 | नवम भाव का स्वामी; प्रथम में स्थित; पंचम और नवम भाव पर दृष्टि |
| मंगल / शनि | जून 2027 | जुलाई 2028 | 3.2 | नवम में स्थित |
| मंगल / बुध | जुलाई 2028 | जुलाई 2029 | 1.2 | पंचम भाव का स्वामी |
| मंगल / केतु | जुलाई 2029 | दिसंबर 2029 | 1.2 | पंचम भाव का स्वामी |
| मंगल / शुक्र | दिसंबर 2029 | फ़रवरी 2031 | 1.2 | पंचम भाव का स्वामी |
| मंगल / सूर्य | फ़रवरी 2031 | जून 2031 | 2.7 | नैसर्गिक कारक |
| मंगल / चंद्र | जून 2031 | जनवरी 2032 | 5.2 | प्रथम भाव का स्वामी; नैसर्गिक कारक; पंचम भाव पर दृष्टि |
| राहु / गुरु | सितंबर 2034 | फ़रवरी 2037 | 5.0 | नवम भाव का स्वामी; प्रथम में स्थित; पंचम और नवम भाव पर दृष्टि |

### ❖ गुरु-शनि का दोहरा गोचर

एक शास्त्रीय समय-नियम: किसी भाव के विषय तब साकार होते हैं जब गोचर में गुरु और शनि दोनों एक साथ उस भाव (या उसके स्वामी) पर स्थित हों या दृष्टि डालें। नीचे अगले तीन वर्षों के वे महीने हैं जब दोनों आपके प्रथम भाव या उसके स्वामी को छूते हैं।

| से | तक | गुरु | शनि |
|---|---|---|---|
| दिसंबर 2027 | फ़रवरी 2028 | कन्या | मीन |
| अगस्त 2029 | अगस्त 2029 | कन्या | वृषभ |

### ❖ मंगल / गुरु · जुलाई 2026 – जून 2027

इस खिड़की में मंगल महादशा के अंतर्गत गुरु की अंतर्दशा (नवम भाव का स्वामी; प्रथम में स्थित; पंचम और नवम भाव पर दृष्टि) चलती है। गुरु आपके प्रथम भाव में है, इसलिए स्वयं और स्वभाव का संबंध स्वयं और स्वास्थ्य से जुड़ता है। इससे कोई दोहरा गोचर मेल नहीं खाता, इसलिए फल प्रयास और परिस्थिति पर अधिक निर्भर हैं।

### ❖ मंगल / शनि · जून 2027 – जुलाई 2028

इस खिड़की में मंगल महादशा के अंतर्गत शनि की अंतर्दशा (नवम में स्थित) चलती है। शनि आपके नवम भाव में है, इसलिए स्वयं और स्वभाव का संबंध भाग्य और गुरु से जुड़ता है। इस अवधि से गुरु-शनि का दोहरा गोचर मेल खाता है, जिसे परंपरा प्रबल प्रेरक मानती है।

### ❖ मंगल / बुध · जुलाई 2028 – जुलाई 2029

इस खिड़की में मंगल महादशा के अंतर्गत बुध की अंतर्दशा (पंचम भाव का स्वामी) चलती है। बुध आपके द्वितीय भाव में है, इसलिए स्वयं और स्वभाव का संबंध धन और परिवार से जुड़ता है।

### ❖ मंगल / केतु · जुलाई 2029 – दिसंबर 2029

इस खिड़की में मंगल महादशा के अंतर्गत केतु की अंतर्दशा (पंचम भाव का स्वामी) चलती है। केतु आपके द्वितीय भाव में है, इसलिए स्वयं और स्वभाव का संबंध धन और परिवार से जुड़ता है।

### ❖ मंगल / शुक्र · दिसंबर 2029 – फ़रवरी 2031

इस खिड़की में मंगल महादशा के अंतर्गत शुक्र की अंतर्दशा (पंचम भाव का स्वामी) चलती है। शुक्र आपके चतुर्थ भाव में है, इसलिए स्वयं और स्वभाव का संबंध घर और माता से जुड़ता है।

### ❖ मंगल / सूर्य · फ़रवरी 2031 – जून 2031

इस खिड़की में मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा (नैसर्गिक कारक) चलती है। सूर्य आपके द्वितीय भाव में है, इसलिए स्वयं और स्वभाव का संबंध धन और परिवार से जुड़ता है।

> समय-खिड़कियाँ ज़ोर के पारंपरिक संकेत हैं, घटनाओं की भविष्यवाणी नहीं। निर्णय आपकी परिस्थितियों और योग्य सलाह पर आधारित होने चाहिए।

ग्रह-दर-ग्रह विश्लेषण

## ग्रह-दर-ग्रह विश्लेषण

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: यहाँ हर ग्रह आपके व्यक्तित्व का एक पहलू बताता है, सोचने से लेकर प्रेम करने तक; इसे वृषभ राशि के स्थिर चंद्र वाले परवाह करने वाले कर्क लग्न के व्यक्ति के विस्तृत चित्र की तरह पढ़ें।

हर ग्रह को उसकी राशि, नक्षत्र और पद, भाव, स्वामित्व, दृष्टि, युति, गति, अस्तता, अवस्था और बल से पढ़ा गया है। नीचे के अनुच्छेद केवल आपकी कुंडली में उपस्थित कारकों से बने हैं।

### ❖ सूर्य: द्वितीय भाव · सिंह

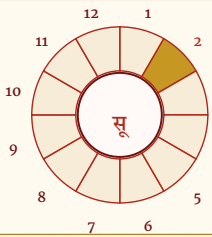


सूर्य: द्वितीय भाव · सिंह

18°11′ · सिंह

पूर्वा फाल्गुनी · 2

स्वराशि

सूर्य: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

सूर्य आपकी मूल पहचान, प्राण-शक्ति, पिता-तुल्य व्यक्तियों और अधिकार से आपके संबंध का कारक है। यह सिंह राशि में 18°11′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति सिंह की गरिमा के साथ: स्वाभिमानी, उदार, प्रभावशाली और नेतृत्व को उत्सुक। स्वराशि सिंह में सूर्य गरिमामय

और आत्मविश्वासी है, सार्वजनिकता और ज़िम्मेदारी में सहज। सूर्य स्वयं इस राशि का स्वामी है। यह अपने मूलत्रिकोण क्षेत्र में भी है, जहाँ यह विशेष उद्देश्य से कार्य करता है।

इसका नक्षत्र पूर्वा फाल्गुनी है, जिसके देवता भग (सौभाग्य और आनंद के देवता) और स्वामी शुक्र हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: उदारता; सामाजिक सहजता। नक्षत्र स्वामी शुक्र इस ग्रह का नैसर्गिक शत्रु है। 2वाँ पद कन्या नवांश में पड़ता है, जो इसे अर्थ (संसाधन और उपलब्धि) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके द्वितीय भाव में है। द्वितीय भाव संचित धन, परिवार, वाणी, खान-पान और प्रारंभिक शिक्षा से जुड़ा है। यह आपके द्वितीय भाव (धन और परिवार) का स्वामी है और इन विषयों को द्वितीय भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर सूर्य आपके लग्न के लिए सम है; इसके फल स्थिति से तय होते हैं।

सूर्य की दृष्टि आपके अष्टम भाव पर है, जो वहाँ स्पष्टता, स्वाभिमान और मान्यता की चाह लाती है। इसकी दृष्टि राहु पर पड़ती है। इस पर राहु की दृष्टि है (राहु: जुनून, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागतता)।

सूर्य की बुध के साथ युति है (7.6° की दूरी)। सूर्य-बुध युति पहचान और बुद्धि को जोड़ती है; मुखर, प्रशासनिक और स्पष्ट राय रखने वाला स्वभाव। सूर्य की केतु के साथ युति है (13.3° की दूरी)। सूर्य-केतु युति अहं को भीतर की ओर मोड़ती है; आध्यात्मिक या शोध-रुचि और विनम्र सार्वजनिक छवि।

सूर्य वृद्ध अवस्था में है: इसके फल विवेकपूर्ण पर धीमे और शांत होते हैं। बल: षड्बल में 7 में से 4वाँ स्थान (5.47 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 14.7/20, और अपनी राशि में 1 अष्टकवर्ग बिंदु।

सूर्य द्वितीय भाव (धन और परिवार) में उस भाव में हैं जिसे परंपरा दबाव और मुक्ति से भी जोड़ती है। सिंह में, पूर्वा फाल्गुनी पाद 2 के साथ, उपयोगी पाठ यह है कि आपकी मूल पहचान और धन और परिवार को साथ देखें, और दशा तिथियों को समीक्षा का समय मानें, गारंटी नहीं।

षड्बल (5.47 रूप) और विंशोपक (14.7) से सूर्य को इस कुंडली में मिश्रित समर्थन है। सूर्य की दशा में आपकी मूल पहचान के आसपास प्रयास और धैर्य दोनों की आवश्यकता रहती है।

क्योंकि सूर्य सिंह में हैं और आपकी मूल पहचान के विषय से जुड़े हैं, उनकी अगली दशा (लगभग 2129) धन और परिवार की समीक्षा का स्वाभाविक समय है। द्वितीय भाव वह स्थान है जहाँ यह कुंडली में दिखता है। यहाँ कोई निश्चित फल नहीं है।

## ❖ चंद्र: एकादश भाव · वृषभ

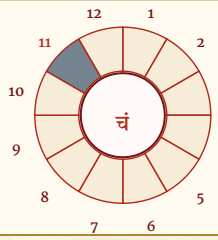


**चंद्र: एकादश भाव · वृषभ**

26°27′ · वृषभ

मृगशिरा · 1

उच्च

**चंद्र: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में**

चंद्र आपके मन, भावनाओं, माता, घरेलू जीवन और संतोष की क्षमता का कारक है। यह वृषभ राशि में 26°27′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति वृषभ की स्थिरता के साथ: धैर्यवान, सौंदर्य-प्रेमी, निष्ठावान और जल्दबाज़ी से दूर। वृषभ में उच्च का चंद्र सबसे स्थिर होता है: भावनात्मक संतुलन, अच्छी रुचि और दूसरों को अपनापन देने का गुण। राशि-स्वामी शुक्र, चंद्र के प्रति सम है, इसलिए फल कुंडली के अन्य कारकों पर निर्भर करते हैं।

इसका नक्षत्र मृगशिरा है, जिसके देवता सोम (चंद्रमा का अमृत) और स्वामी मंगल हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: कोमलता और संवेदनशीलता; शोध-क्षमता। नक्षत्र स्वामी मंगल इस ग्रह का नैसर्गिक सम है। 1वाँ पद सिंह नवांश में पड़ता है, जो इसे धर्म (उद्देश्य और सिद्धांत) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके एकादश भाव में है। एकादश भाव आय, लाभ, बड़े भाई-बहन, मित्र, नेटवर्क और इच्छा-पूर्ति से जुड़ा है। यह आपके प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) का स्वामी है और इन विषयों को एकादश भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर चंद्र आपके लग्न के लिए कारक-शुभ (functional benefic) है।

चंद्र की दृष्टि आपके पंचम भाव पर है, जो वहाँ संवेदनशीलता, देखभाल और परिवर्तनशीलता लाती है। इस पर शनि की दृष्टि है (शनि: विलंब, गंभीरता और स्थायी ढाँचा)।

चंद्र बाल अवस्था में है: इसके फल धीरे-धीरे आते हैं और बाद में परिपक्व होते हैं। बल: षड्बल में 7 में से 2वाँ स्थान (6.03 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 14.2/20, और अपनी राशि में 6 अष्टकवर्ग बिंदु।

चंद्र एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) में उपचय स्थिति है। वृषभ में, मृगशिरा पाद 1 के साथ, शास्त्र अक्सर कहते हैं कि आपके मन समय और स्थिर प्रयास से बढ़ सकता है, विशेषकर बाद की दशाओं में।

षड्बल (6.03 रूप) और विंशोपक (14.2) से चंद्र इस कुंडली में बेहतर समर्थित ग्रहों में हैं। चंद्र की दशा को आपके मन पर ध्यान देने का व्यावहारिक समय माना जाता है, फिर भी कोई वादा नहीं।

इस चंद्र पाठ का व्यावहारिक उपयोग यह है कि चंद्र की दशा में (अगली बार लगभग 2135) लाभ और नेटवर्क पर ध्यान दें। यह ग्रह आपके मन के कारक हैं और आपके एकादश भाव में वृषभ में हैं। तिथियाँ ध्यान का समय हैं, गारंटीकृत घटना नहीं।

## ❖ मंगल: द्वादश भाव · मिथुन

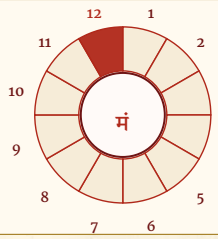


**मंगल: द्वादश भाव · मिथुन**

21°39′ · मिथुन

पुनर्वसु · 1

शत्रु राशि

**मंगल: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में**

मंगल आपकी प्रेरणा, साहस, शारीरिक ऊर्जा, भाई-बहनों और प्रतिस्पर्धा की रुचि का कारक है। यह मिथुन राशि में 21°39′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति मिथुन की जिज्ञासा के साथ: बातूनी, लचीला, चंचल और बहुमुखी। राशि-स्वामी बुध, मंगल का नैसर्गिक शत्रु है, इसलिए इसे कुछ घर्षण के बीच काम करना पड़ता है।

इसका नक्षत्र पुनर्वसु है, जिसके देवता अदिति (देवताओं की माता) और स्वामी गुरु हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: क्षमाशीलता; ज्ञान और उदारता। नक्षत्र स्वामी गुरु इस ग्रह का नैसर्गिक मित्र है। 1वाँ पद मेष नवांश में पड़ता है, जो इसे धर्म (उद्देश्य और सिद्धांत) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके द्वादश भाव में है। द्वादश भाव व्यय, निद्रा, विदेश, एकांत, दान और आध्यात्मिक मोक्ष से जुड़ा है। यह आपके पंचम भाव (संतान और बुद्धि) और दशम भाव (करियर और पद) का स्वामी है और इन विषयों को द्वादश भाव में ले आता है। केंद्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी होने से मंगल आपके लग्न के लिए योगकारक है, कुंडली के सबसे सहायक ग्रहों में से एक।

मंगल की दृष्टि आपके तृतीय भाव, षष्ठ भाव और सप्तम भाव पर है, जो वहाँ ऊर्जा, तत्परता और कभी-कभी टकराव लाती है।

मंगल वृद्ध अवस्था में है: इसके फल विवेकपूर्ण पर धीमे और शांत होते हैं। बल: षड्बल में 7 में से 7वाँ स्थान (4.39 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 14.7/20, और अपनी राशि में 5 अष्टकवर्ग बिंदु।

मंगल द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष) में एक अधिक माँग वाले भाव में हैं। मिथुन में, पुनर्वसु पाद 1 के साथ, सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में आपकी प्रेरणा और व्यय और मोक्ष पर अतिरिक्त ध्यान दें, निश्चित कष्ट न मानें।

षड्बल (4.39 रूप) और विंशोपक (14.7) से मंगल इस कुंडली में हल्के समर्थित हैं। इनकी दशा में आपकी प्रेरणा के बारे में योजनाएँ सरल रखना, और सबल ग्रहों से सहयोग लेना, सामान्य सलाह है; इसे निश्चित झटका न मानें।

मंगल पुनर्वसु में, द्वादश भाव में, आपकी प्रेरणा को व्यय और मोक्ष से जोड़ते हैं। लगभग 2026, जब मंगल की दशा आने वाली हो, उस संबंध को फिर से देखना और आदतें समायोजित करना सहायक हो सकता है, किसी निश्चित परिणाम की अपेक्षा बिना।

## ❖ बुध: द्वितीय भाव · सिंह

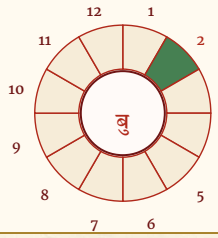


**बुध: द्वितीय भाव · सिंह**

25°45′ · सिंह

पूर्वा फाल्गुनी · 4

मित्र राशि

**बुध: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में**

बुध आपकी सोच, वाणी, सीखने की शैली, व्यापार और हास्य-बोध का कारक है। यह सिंह राशि में 25°45′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति सिंह की गरिमा के साथ: स्वाभिमानी, उदार, प्रभावशाली और नेतृत्व को उत्सुक। राशि-स्वामी सूर्य, बुध का नैसर्गिक मित्र है, इसलिए इसे सहयोग मिलता है।

इसका नक्षत्र पूर्वा फाल्गुनी है, जिसके देवता भग (सौभाग्य और आनंद के देवता) और स्वामी शुक्र हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: आत्मीयता और आकर्षण; रचनात्मकता। नक्षत्र स्वामी शुक्र इस ग्रह का नैसर्गिक मित्र है। 4वाँ पद वृश्चिक नवांश में पड़ता है, जो इसे मोक्ष (मुक्ति, अंतर्दृष्टि और आंतरिक जीवन) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके द्वितीय भाव में है। यह आपके तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) और द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष) का स्वामी है और इन विषयों को द्वितीय भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर बुध आपके लग्न के लिए कारक-पाप (functional malefic) है, इसलिए इसकी दशाओं में सावधानी उचित है।

बुध की दृष्टि आपके अष्टम भाव पर है, जो वहाँ विचारशीलता, संवाद और विश्लेषण लाती है। इसकी दृष्टि राहु पर पड़ती है।

बुध की सूर्य के साथ युति है (7.6° की दूरी)। बुध की केतु के साथ युति है (20.9° की दूरी)। बुध-केतु युति अंतर्ज्ञानी, गैर-रेखीय बुद्धि देती है; गणित, कोडिंग या गूढ़ अध्ययन।

बुध अस्त है, सूर्य से 7.6° पर। अस्त बुध बहुत सामान्य है; बुद्धि अहं की सेवा करती है, और सुनने का अभ्यास चाहिए। बुध मृत अवस्था में है: इसके फल सक्रिय करने के लिए सचेत प्रयास चाहिए। बल: षड्बल में 7 में से 5वाँ स्थान (5.06 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 12.5/20, और अपनी राशि में 4 अष्टकवर्ग बिंदु।

बुध द्वितीय भाव (धन और परिवार) में उस भाव में हैं जिसे परंपरा दबाव और मुक्ति से भी जोड़ती है। सिंह में, पूर्वा फाल्गुनी पाद 4 के साथ, उपयोगी पाठ यह है कि आपकी सोच और धन और परिवार को साथ देखें, और दशा तिथियों को समीक्षा का समय मानें, गारंटी नहीं।

षड्बल (5.06 रूप) और विंशोपक (12.5) से बुध को इस कुंडली में मिश्रित समर्थन है। बुध की दशा में आपकी सोच के आसपास प्रयास और धैर्य दोनों की आवश्यकता रहती है।

कुंडली बुध (आपकी सोच) को द्वितीय भाव में रखती है, इसलिए धन और परिवार वह भाव है जिसके माध्यम से इस ग्रह को पढ़ा जाता है। लगभग 2085 की बुध दशा जाँच का पारंपरिक समय है, कोई तिथि नहीं जिस पर कुछ घटित होना ही है।

## ❖ गुरु: प्रथम भाव · कर्क

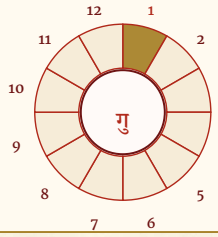


**गुरु: प्रथम भाव · कर्क**

20°18′ · कर्क

आश्लेषा · 2

उच्च

**गुरु: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में**

गुरु आपके ज्ञान, आस्था, गुरुजनों, संतान, धन और जीवन के अर्थ का कारक है। यह कर्क राशि में 20°18′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति कर्क की भावुकता के साथ: रक्षक, अंतर्ज्ञानी, घर और स्मृतियों से जुड़ा। कर्क में उच्च का गुरु आत्मीयता, उदारता और संरक्षक ज्ञान लाता है; परंपरा इसे अत्यंत शुभ स्थितियों में गिनती है। राशि-स्वामी चंद्र, गुरु का नैसर्गिक मित्र है, इसलिए इसे सहयोग मिलता है।

इसका नक्षत्र आश्लेषा है, जिसके देवता नाग देवता और स्वामी बुध हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: समझाने-मनाने की क्षमता; गहरी अंतर्दृष्टि। नक्षत्र स्वामी बुध इस ग्रह का नैसर्गिक शत्रु है। 2वाँ पद मकर नवांश में पड़ता है, जो इसे अर्थ (संसाधन और उपलब्धि) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके प्रथम भाव में है। प्रथम भाव (लग्न) शरीर, स्वास्थ्य, स्वभाव और जीवन को देखने का ढंग है; यह हर दूसरे भाव को प्रभावित करता है। यह आपके षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) और नवम भाव (भाग्य और गुरु) का स्वामी है और इन विषयों को प्रथम भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर गुरु आपके लग्न के लिए कारक-शुभ (functional benefic) है।

गुरु की दृष्टि आपके पंचम भाव, सप्तम भाव और नवम भाव पर है, जो वहाँ संरक्षण, वृद्धि और अच्छा परामर्श लाती है। इसकी दृष्टि शनि पर पड़ती है। गुरु पर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है, इसलिए यह अपनी शर्तों पर कार्य करता है।

गुरु कुमार अवस्था में है: यह आंशिक पर बढ़ते हुए फल देता है। बल: षड्बल में 7 में से 3वाँ स्थान (6.02 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 12.6/20, और अपनी राशि में 5 अष्टकवर्ग बिंदु।

गुरु प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) में एक केन्द्र स्थिति है। कर्क में, चन्द्र के नक्षत्र आश्लेषा (पाद 2) के साथ, सामान्य पाठ यह है कि आपके ज्ञान एक दिखाई देने वाले रूप में आता है। वास्तविक फल दशा और आपके चुनावों पर निर्भर रहता है।

षड्बल (6.02 रूप) और विंशोपक (12.6) से गुरु इस कुंडली में बेहतर समर्थित ग्रहों में हैं। गुरु की दशा को आपके ज्ञान पर ध्यान देने का व्यावहारिक समय माना जाता है, फिर भी कोई वादा नहीं।

इस कुंडली में गुरु सामान्यतः आपके ज्ञान के कारक हैं, और आपके प्रथम भाव में बैठे हैं, इसलिए यह विषय सबसे स्पष्ट स्वयं और स्वास्थ्य के माध्यम से महसूस होता है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं। जब गुरु की दशा चले (अगली बार लगभग 2050), तब इस क्षेत्र को ध्यान से देखना और सहायक आदतें चुनना उपयोगी रहता है।

## ❖ शुक्र: चतुर्थ भाव · तुला

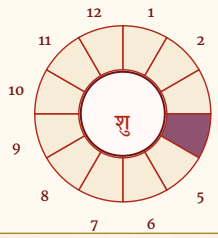


**शुक्र: चतुर्थ भाव · तुला**

1°59′ · तुला

चित्रा · 3

स्वराशि

**शुक्र: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में**

शुक्र आपके स्नेह, आनंद, कला, सुख-सुविधा, साझेदारी और रुचि का कारक है। यह तुला राशि में 1°59′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति तुला के संतुलन के साथ: कूटनीतिक, न्यायप्रिय, सौंदर्यबोधी और साझेदारी-प्रधान। स्वराशि में शुक्र शालीन और कलात्मक है, सुख-सुविधा और सौहार्दपूर्ण संगति आकर्षित करता है। शुक्र स्वयं इस राशि का स्वामी है।

इसका नक्षत्र चित्रा है, जिसके देवता त्वष्टा / विश्वकर्मा (दिव्य वास्तुकार) और स्वामी मंगल हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: सृजन की प्रेरणा; डिज़ाइन की समझ। 3वाँ पद तुला नवांश में पड़ता है, जो इसे काम (इच्छा, संबंध और आनंद) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके चतुर्थ भाव में है। चतुर्थ भाव माता, घर, वाहन, भूमि, मन की शांति और आधारभूत शिक्षा से जुड़ा है। यह आपके चतुर्थ भाव (घर और माता) और एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) का स्वामी है और इन विषयों को चतुर्थ भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर शुक्र आपके लग्न के लिए कारक-पाप (functional malefic) है, इसलिए इसकी दशाओं में सावधानी उचित है।

शुक्र की दृष्टि आपके दशम भाव पर है, जो वहाँ शालीनता, आनंद और सामंजस्य लाती है।

शुक्र बाल अवस्था में है: इसके फल धीरे-धीरे आते हैं और बाद में परिपक्व होते हैं। बल: षड्बल में 7 में से 1वाँ स्थान (6.49 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 17.0/20, और अपनी राशि में 5 अष्टकवर्ग बिंदु। शुक्र वर्गोत्तम है (D1 और D9 में एक ही राशि), जो इसके फलों को स्थिर करता है।

शुक्र चतुर्थ भाव (घर और माता) में एक केन्द्र स्थिति है। तुला में, चन्द्र के नक्षत्र चित्रा (पाद 3) के साथ, सामान्य पाठ यह है कि आपके स्नेह एक दिखाई देने वाले रूप में आता है।

षड्बल (6.49 रूप) और विंशोपक (17.0) से शुक्र इस कुंडली में बेहतर समर्थित ग्रहों में हैं। शुक्र की दशा को आपके स्नेह पर ध्यान देने का व्यावहारिक समय माना जाता है, फिर भी कोई वादा नहीं।

कुंडली शुक्र (आपके स्नेह) को चतुर्थ भाव में रखती है, इसलिए घर और माता वह भाव है जिसके माध्यम से इस ग्रह को पढ़ा जाता है। लगभग 2109 की शुक्र दशा जाँच का पारंपरिक समय है, कोई तिथि नहीं जिस पर कुछ घटित होना ही है।

## ❖ शनि: नवम भाव · मीन

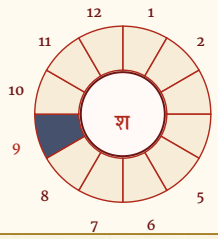


**शनि: नवम भाव · मीन**

19°13′ · मीन

रेवती · 1

सम राशि

**शनि: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में**

शनि आपके अनुशासन, सहनशक्ति, कर्म-निष्ठा, भय और दीर्घकालिक कर्म का कारक है। यह मीन राशि में 19°13′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति मीन की संवेदनशीलता के साथ: कल्पनाशील, करुणामय, आध्यात्मिक और भावों को सहज ग्रहण करने वाला। राशि-स्वामी गुरु, शनि के प्रति सम है, इसलिए फल कुंडली के अन्य कारकों पर निर्भर करते हैं।

इसका नक्षत्र रेवती है, जिसके देवता पूषा (यात्रियों के पोषक और रक्षक) और स्वामी बुध हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: कल्पनाशीलता; असहायों की रक्षा। नक्षत्र स्वामी बुध इस ग्रह का नैसर्गिक मित्र है। 1वाँ पद धनु नवांश में पड़ता है, जो इसे धर्म (उद्देश्य और सिद्धांत) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके नवम भाव में है। नवम भाव भाग्य, पिता, गुरुजन, धर्म, उच्च शिक्षा और लंबी यात्राओं से जुड़ा है। यह आपके सप्तम भाव (विवाह और साझेदार) और अष्टम भाव (रूपांतरण और विरासत) का स्वामी है और इन विषयों को नवम भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर शनि आपके लग्न के लिए कारक-पाप (functional malefic) है, इसलिए इसकी दशाओं में सावधानी उचित है।

शनि की दृष्टि आपके तृतीय भाव, षष्ठ भाव और एकादश भाव पर है, जो वहाँ विलंब, गंभीरता और स्थायी ढाँचा लाती है। इसकी दृष्टि चंद्र पर पड़ती है। इस पर गुरु की दृष्टि है (गुरु: संरक्षण, वृद्धि और अच्छा परामर्श)।

वक्री शनि कर्तव्य को भीतर ग्रहण करता है; कठोर आंतरिक आलोचक और अतीत की ज़िम्मेदारियाँ। शनि कुमार अवस्था में है: यह आंशिक पर बढ़ते हुए फल देता है। बल: षड्बल में 7 में से 6वाँ स्थान (4.58 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 12.6/20, और अपनी राशि में 5 अष्टकवर्ग बिंदु।

शनि नवम भाव (भाग्य और गुरु) में एक त्रिकोण स्थिति है। मीन में, रेवती पाद 1 के साथ, परंपरा अक्सर आपके अनुशासन को शोरभरी घटना से अधिक शांत सहयोग की तरह पढ़ती है। इसे प्रवृत्ति मानें, वादा नहीं।

षड्बल (4.58 रूप) और विंशोपक (12.6) से शनि को इस कुंडली में मिश्रित समर्थन है। शनि की दशा में आपके अनुशासन के आसपास प्रयास और धैर्य दोनों की आवश्यकता रहती है।

शनि रेवती में, नवम भाव में, आपके अनुशासन को भाग्य और गुरु से जोड़ते हैं। लगभग 2066, जब शनि की दशा आने वाली हो, उस संबंध को फिर से देखना और आदतें समायोजित करना सहायक हो सकता है, किसी निश्चित परिणाम की अपेक्षा बिना।

## ❖ राहु: अष्टम भाव · कुंभ

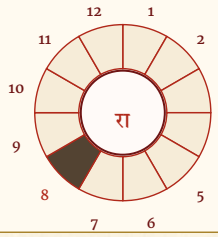


राहु: अष्टम भाव · कुंभ
4°52′ · कुंभ
धनिष्ठा · 4
छाया ग्रह

राहु: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

राहु आपकी सांसारिक भूख, महत्वाकांक्षा और नए व विदेशी के प्रति आकर्षण का कारक है। यह कुंभ राशि में 4°52′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति कुंभ की स्वतंत्रता के साथ: आदर्शवादी, अपरंपरागत, मानवतावादी और तटस्थ। छाया ग्रह होने से राहु अपने राशि-स्वामी शनि के फल देता है, जो आपके नवम भाव (सम राशि) में है।

इसका नक्षत्र धनिष्ठा है, जिसके देवता अष्ट वसु (तत्व देवता) और स्वामी मंगल हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: लय और समय की समझ; उदारता।

यह आपके अष्टम भाव में है। अष्टम भाव आयु, अचानक घटनाओं, विरासत, संयुक्त धन, शोध और गूढ़ विद्या से जुड़ा है।

राहु की दृष्टि आपके द्वितीय भाव, चतुर्थ भाव और द्वादश भाव पर है, जो वहाँ जुनून, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागतता लाती है। इसकी दृष्टि सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र और केतु पर पड़ती है। इस पर सूर्य, बुध और केतु की दृष्टि है (सूर्य: स्पष्टता, स्वाभिमान और मान्यता की चाह; बुध: विचारशीलता, संवाद और विश्लेषण; केतु: विरक्ति, अंतर्दृष्टि और अचानक मोड़)।

राहु अष्टम भाव (रूपांतरण और विरासत) में एक अधिक माँग वाले भाव में हैं। कुंभ में, धनिष्ठा पाद 4 के साथ, सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में आपकी सांसारिक भूख और रूपांतरण और विरासत पर अतिरिक्त ध्यान दें, निश्चित कष्ट न मानें।

कुंडली राहु (आपकी सांसारिक भूख) को अष्टम भाव में रखती है, इसलिए रूपांतरण और विरासत वह भाव है जिसके माध्यम से इस ग्रह को पढ़ा जाता है। लगभग 2032 की राहु दशा जाँच का पारंपरिक समय है, कोई तिथि नहीं जिस पर कुछ घटित होना ही है।

## ❖ केतु: द्वितीय भाव · सिंह

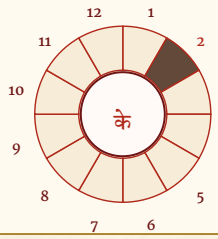


केतु: द्वितीय भाव · सिंह
4°52′ · सिंह
मघा · 2
छाया ग्रह

केतु: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

केतु आपकी विरक्ति, पूर्व-कौशल, अंतर्ज्ञान और आध्यात्मिक खोज का कारक है। यह सिंह राशि में 4°52′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति सिंह की गरिमा के साथ: स्वाभिमानी, उदार, प्रभावशाली और नेतृत्व को उत्सुक। छाया ग्रह होने से केतु अपने राशि-स्वामी सूर्य के फल देता है, जो आपके द्वितीय भाव (स्वराशि) में है।

इसका नक्षत्र मघा है, जिसके देवता पितर (पूर्वज) और स्वामी केतु हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: उदारता; महत्वाकांक्षा। 2वाँ पद वृषभ नवांश में पड़ता है, जो इसे अर्थ (संसाधन और उपलब्धि) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके द्वितीय भाव में है।

केतु की दृष्टि आपके षष्ठ भाव, अष्टम भाव और दशम भाव पर है, जो वहाँ विरक्ति, अंतर्दृष्टि और अचानक मोड़ लाती है। इसकी दृष्टि राहु पर पड़ती है।

केतु की सूर्य के साथ युति है (13.3° की दूरी)। केतु की बुध के साथ युति है (20.9° की दूरी)।

केतु द्वितीय भाव (धन और परिवार) में उस भाव में हैं जिसे परंपरा दबाव और मुक्ति से भी जोड़ती है। सिंह में, मघा पाद 2 के साथ, उपयोगी पाठ यह है कि आपकी विरक्ति और धन और परिवार को साथ देखें, और दशा तिथियों को समीक्षा का समय मानें, गारंटी नहीं।

केतु को यहाँ एक कार्य-मानचित्र की तरह पढ़ें: आपकी विरक्ति का धन और परिवार के माध्यम से व्यक्त होना, द्वितीय भाव में सिंह से। लगभग 2102 की अवधि को наблюдि और चुनाव के लिए उपयोग करें, भविष्यवाणी के रूप में नहीं।



# भाव-दर-भाव विश्लेषण

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: हर भाव रोज़ के जीवन का एक क्षेत्र है; यह अध्याय दिखाता है कि कौन से क्षेत्र आपके लिए सहज हैं और कौन से प्रयास से निखरते हैं।

हर भाव को उसकी राशि, उसके स्वामी और उसकी स्थिति, भाव में स्थित ग्रहों, उस पर दृष्टियों, उसके नैसर्गिक कारक और उसके अष्टकवर्ग अंक से पढ़ा गया है।

| भाव | क्षेत्र | राशि | स्वामी | स्वामी स्थित | ग्रह | सर्वा. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | स्वयं और स्वास्थ्य | कर्क | चंद्र | एकादश | गुरु | 29 |
| 2 | धन और परिवार | सिंह | सूर्य | द्वितीय | सूर्य, बुध, केतु | 24 |
| 3 | पराक्रम और भाई-बहन | कन्या | बुध | द्वितीय | - | 22 |
| 4 | घर और माता | तुला | शुक्र | चतुर्थ | शुक्र | 29 |
| 5 | संतान और बुद्धि | वृश्चिक | मंगल | द्वादश | - | 22 |
| 6 | सेवा और बाधाएँ | धनु | गुरु | प्रथम | - | 31 |
| 7 | विवाह और साझेदार | मकर | शनि | नवम | - | 27 |
| 8 | रूपांतरण और विरासत | कुंभ | शनि | नवम | राहु | 23 |
| 9 | भाग्य और गुरु | मीन | गुरु | प्रथम | शनि | 31 |
| 10 | करियर और पद | मेष | मंगल | द्वादश | - | 30 |
| 11 | लाभ और नेटवर्क | वृषभ | शुक्र | चतुर्थ | चंद्र | 35 |
| 12 | व्यय और मोक्ष | मिथुन | बुध | द्वितीय | मंगल | 34 |

## ❖ प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य · कर्क

1

**प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य · कर्क**

कर्क

गुरु

**स्वामी: चंद्र**

एकादश भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 29

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य · कर्क**

आपका प्रथम भाव कर्क राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, कर्क की भावुकता के साथ: रक्षक, अंतर्ज्ञानी, घर और स्मृतियों से जुड़ा (मुख्य विषय: देखभाल, जड़ें, भावना)।

इसका स्वामी चंद्र एकादश भाव में है, उपचय भाव, जहाँ फल समय के साथ लगातार सुधरते हैं, वृषभ राशि (उच्च) में, जो स्वयं और स्वास्थ्य को लाभ और नेटवर्क से जोड़ता है। भावेश अपने भाव से ग्यारहवें स्थान पर है, जो परंपरा में इन विषयों में लाभ का सहायक है।

प्रथम भाव में ग्रह: गुरु। गुरु (उच्च) स्वयं और स्वास्थ्य में आपके ज्ञान का प्रभाव लाता है।

इसका नैसर्गिक कारक सूर्य आपके द्वितीय भाव (स्वराशि) में है। 29 बिंदुओं के साथ (लगभग औसत 28) यह भाव सामान्य, संतुलित फल देता है। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका तृतीय भाव है।

प्रथम भाव कर्क में शरीर, स्वभाव और पहले प्रभाव का भाव है। स्वामी चंद्र (उच्च) एकादश भाव में हैं और अष्टकवर्ग 29 है। यह बताता है कि प्राण और आत्म-प्रस्तुति कैसे समर्थित हैं, कोई निश्चित चरित्र नहीं। स्थित ग्रह: गुरु।

प्रथम भाव पारंपरिक रूप से स्वयं और स्वास्थ्य के बारे में है। स्वामी एकादश भाव में हैं और राशि पर अष्टकवर्ग 29 है। कुंडली सहयोग और प्रयास का मिश्रण बताती है, कोई निश्चित फल नहीं। दशा अध्यायों से देखें कि यह भाव कब अधिक सक्रिय है, और उन तिथियों को चिंतन का समय मानें, गारंटी नहीं।

## ❖ द्वितीय भाव: धन और परिवार · सिंह

2

**द्वितीय भाव: धन और परिवार · सिंह**

सिंह

सूर्य, बुध, केतु

**स्वामी: सूर्य**

द्वितीय भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 24

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**द्वितीय भाव: धन और परिवार · सिंह**

आपका द्वितीय भाव सिंह राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, सिंह की गरिमा के साथ: स्वाभिमानी, उदार, प्रभावशाली और नेतृत्व को उत्सुक (मुख्य विषय: नेतृत्व, सृजन, गरिमा)।

इसका स्वामी सूर्य इसी भाव में है, द्वितीय भाव, संसाधन और वाणी का भाव, सिंह राशि (स्वराशि) में। भावेश स्वयं इसी भाव में बैठा है, जो इसके विषयों की रक्षा करता और उन्हें बल देता है।

द्वितीय भाव में ग्रह: सूर्य, बुध और केतु। सूर्य (स्वराशि) धन और परिवार में आपकी मूल पहचान का प्रभाव लाता है। बुध (मित्र राशि) धन और परिवार में आपकी सोच का प्रभाव लाता है। केतु (छाया ग्रह) धन और परिवार में आपकी विरक्ति का प्रभाव लाता है।

द्वितीय भाव पर राहु (अष्टम भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा राहु से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक गुरु आपके प्रथम भाव (उच्च) में है। 24 बिंदुओं के साथ (औसत से कम) यह भाव अधिक सचेत प्रयास चाहता है; इससे होकर महत्वपूर्ण गोचरों में धैर्य रखें। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका चतुर्थ भाव है।

द्वितीय भाव सिंह में परिवार के संसाधन, वाणी और प्रारंभिक बचत के लिए पढ़ा जाता है। स्वामी सूर्य (स्वराशि) द्वितीय भाव में हैं, राशि पर 24 बिंदु हैं, स्थित ग्रह सूर्य, बुध और केतु। इस स्वामी की दशा को धन की आदतों और पारिवारिक बातचीत की समीक्षा का समय मानें, लाभ या हानि का वादा नहीं।

द्वितीय भाव सिंह में, स्वामी सूर्य द्वितीय भाव में, धन और परिवार का कार्य-चित्र हैं। जब उस स्वामी की दशा चले, इस पृष्ठ पर लौटें, और इसे जाँच-सूची की तरह उपयोग करें, भविष्यवाणी की तरह नहीं।

## ❖ तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन · कन्या

3

तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन · कन्या

कन्या

–

स्वामी: बुध

द्वितीय भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 22

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन · कन्या

आपका तृतीय भाव कन्या राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, कन्या की सूक्ष्मता के साथ: विश्लेषणात्मक, विनम्र, सहायक और अधूरे कामों का आलोचक (मुख्य विषय: कौशल, सेवा, स्वास्थ्य)। तृतीय भाव साहस, प्रयास, छोटे भाई-बहन, छोटी यात्राएँ, संवाद-कौशल और शौक से जुड़ा है।

इसका स्वामी बुध द्वितीय भाव में है, द्वितीय भाव, संसाधन और वाणी का भाव, सिंह राशि (मित्र राशि) में, जो पराक्रम और भाई-बहन को धन और परिवार से जोड़ता है। भावेश अपने भाव से बारहवें स्थान पर है, जो इन विषयों पर ऊर्जा या संसाधन खर्च होने का पारंपरिक संकेत है। भावेश अस्त है, इसलिए ये विषय चुपचाप या किसी और की छाया में चलते हैं।

तृतीय भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यतः भावेश बुध से आते हैं।

तृतीय भाव पर मंगल (द्वादश भाव से) और शनि (नवम भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा मंगल और शनि से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक मंगल आपके द्वादश भाव (शत्रु राशि) में है। 22 बिंदुओं के साथ (औसत से कम) यह भाव अधिक सचेत प्रयास चाहता है; इससे होकर महत्वपूर्ण गोचरों में धैर्य रखें। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका पंचम भाव है।

तृतीय भाव कन्या में प्रयास, भाई-बहन और छोटी यात्रा का भाव है। स्वामी बुध (मित्र राशि) द्वितीय भाव में, 22 बिंदु, स्थित ग्रह कोई नहीं। परंपरा यहाँ साहस और दैनिक पहल देखती है। ये गुण अवधि के उपयोग पर निर्भर हैं, किसी गारंटी पर नहीं।

तृतीय भाव पारंपरिक रूप से पराक्रम और भाई-बहन के बारे में है। स्वामी द्वितीय भाव में हैं और राशि पर अष्टकवर्ग 22 है।

## ❖ चतुर्थ भाव: घर और माता · तुला

4

चतुर्थ भाव: घर और माता · तुला

तुला

शुक्र

स्वामी: शुक्र

चतुर्थ भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 29

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

चतुर्थ भाव: घर और माता · तुला

आपका चतुर्थ भाव तुला राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, तुला के संतुलन के साथ: कूटनीतिक, न्यायप्रिय, सौंदर्यबोधी और साझेदारी-प्रधान (मुख्य विषय: संतुलन, साझेदारी, सौंदर्य)।

इसका स्वामी शुक्र इसी भाव में है, केंद्र, कुंडली का स्तंभ जहाँ ग्रह स्पष्ट रूप से कार्य करते हैं, तुला राशि (स्वराशि) में।

चतुर्थ भाव में ग्रह: शुक्र। शुक्र (स्वराशि) घर और माता में आपके स्नेह का प्रभाव लाता है।

चतुर्थ भाव पर राहु (अष्टम भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा राहु से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक चंद्र आपके एकादश भाव (उच्च) में है। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका षष्ठ भाव है।

चतुर्थ भाव तुला में घर, माता और भीतरी सहजता का भाव है। स्वामी शुक्र (स्वराशि) चतुर्थ भाव में हैं, राशि पर 29 बिंदु हैं, स्थित ग्रह शुक्र। इस स्वामी की दशा घर और भावनात्मक नींव पर ध्यान देने का पारंपरिक समय है, वादा नहीं।

चतुर्थ भाव को घर और माता के मानचित्र की तरह पढ़ें: राशि तुला, स्वामी शुक्र चतुर्थ भाव में, 29 बिंदु। यह मानचित्र संबंधित दशाओं में चिंतन के लिए है, परिणाम बाँधने के लिए नहीं।

## ❖ पंचम भाव: संतान और बुद्धि · वृश्चिक

5

**पंचम भाव: संतान और बुद्धि · वृश्चिक**

वृश्चिक

–

**स्वामी: मंगल**

द्वादश भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 22

| 1 | 2 | 3 | 4 | **5** | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**पंचम भाव: संतान और बुद्धि · वृश्चिक**

आपका पंचम भाव वृश्चिक राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, वृश्चिक की गहराई के साथ: गोपनीय, खोजी, निष्ठावान और देर से क्षमा करने वाला (मुख्य विषय: गहराई, शोध, रूपांतरण)। पंचम भाव बुद्धि, सृजन, संतान, प्रेम, मंत्र और पूर्व-पुण्य से जुड़ा है।

इसका स्वामी मंगल द्वादश भाव में है, दु:स्थान (6, 8 या 12), जहाँ फल प्रयास, परिवर्तन या त्याग से आते हैं, मिथुन राशि (शत्रु राशि) में, जो संतान और बुद्धि को व्यय और मोक्ष से जोड़ता है। दु:स्थान में स्थित भावेश इन विषयों को बाधाओं, सेवा या रूपांतरण से होकर ले जाता है; फल अर्जित होते हैं, सहज नहीं मिलते। भावेश अपने भाव से आठवें स्थान पर है, इसलिए ये विषय उथल-पुथल और नवीनीकरण के दौर से गुज़रते हैं।

पंचम भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यत: भावेश मंगल से आते हैं।

पंचम भाव पर चंद्र (एकादश भाव से) और गुरु (प्रथम भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग चंद्र और गुरु से मिलता है।

चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका सप्तम भाव है।

पंचम भाव वृश्चिक में सृजन, संतान, विद्या और कुंडली की बुद्धि के लिए पढ़ा जाता है। स्वामी मंगल (शत्रु राशि) द्वादश भाव में हैं, 22 बिंदु और स्थित ग्रह कोई नहीं। संबंधित दशाओं में इस भाव को अध्ययन और अभिव्यक्ति का क्षेत्र मानें, विशिष्ट घटनाओं का पूर्वानुमान नहीं।

पंचम भाव को संतान और बुद्धि के मानचित्र की तरह पढ़ें: राशि वृश्चिक, स्वामी मंगल द्वादश भाव में, 22 बिंदु।

## ❖ षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ · धनु

6

**षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ · धनु**

धनु

–

**स्वामी: गुरु**

प्रथम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 31

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | **6** | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ · धनु**

आपका षष्ठ भाव धनु राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, धनु के आशावाद के साथ: सिद्धांतवादी, दार्शनिक, खरा और स्वतंत्रता-प्रेमी (मुख्य विषय: आस्था, शिक्षा, यात्रा)। षष्ठ भाव स्वास्थ्य की दिनचर्या, सेवा, प्रतियोगिता, ऋण, विवाद और बाधाओं पर विजय से जुड़ा है।

इसका स्वामी गुरु प्रथम भाव में है, केंद्र, कुंडली का स्तंभ जहाँ ग्रह स्पष्ट रूप से कार्य करते हैं, कर्क राशि (उच्च) में, जो सेवा और बाधाएँ को स्वयं और स्वास्थ्य से जोड़ता है। केंद्र या त्रिकोण में स्थित भावेश इस भाव के विषयों को मज़बूत, सहयोगी क्षेत्र में ले जाता है।

षष्ठ भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यतः भावेश गुरु से आते हैं।

षष्ठ भाव पर मंगल (द्वादश भाव से), शनि (नवम भाव से) और केतु (द्वितीय भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा मंगल, शनि और केतु से आती है।

31 बिंदुओं के साथ (औसत 28 से अधिक) यह भाव अच्छी तरह समर्थित है; इससे होकर गोचर प्रायः अच्छे फल देते हैं। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका अष्टम भाव है।

षष्ठ भाव धनु में कार्य, ऋण, स्पर्धा और स्वास्थ्य-दिनचर्या का भाव है। स्वामी गुरु (उच्च) प्रथम भाव में, 31 बिंदु, स्थित ग्रह कोई नहीं। सामान्य सलाह है कि जब यह भाव सक्रिय हो, आदतें और विवाद संभालें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

षष्ठ भाव पारंपरिक रूप से सेवा और बाधाएँ के बारे में है। स्वामी प्रथम भाव में हैं और राशि पर अष्टकवर्ग 31 है।

## ❖ सप्तम भाव: विवाह और साझेदार · मकर

7

**सप्तम भाव: विवाह और साझेदार · मकर**

मकर

–

**स्वामी: शनि**

नवम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 27

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**सप्तम भाव: विवाह और साझेदार · मकर**

आपका सप्तम भाव मकर राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, मकर की महत्वाकांक्षा के साथ: अनुशासित, व्यावहारिक, सतर्क और दूरदर्शी (मुख्य विषय: कर्तव्य, ढाँचा, प्रतिष्ठा)। सप्तम भाव विवाह, व्यावसायिक साझेदार, अनुबंध, जनता और काम के लिए विदेश-यात्रा से जुड़ा है।

इसका स्वामी शनि नवम भाव में है, त्रिकोण, कृपा और पुण्य का भाव, मीन राशि (सम राशि) में, जो विवाह और साझेदार को भाग्य और गुरु से जोड़ता है। भावेश वक्री है, इसलिए इन विषयों पर समय-समय पर लौटना और उन्हें नए सिरे से गढ़ना होता है।

सप्तम भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यतः भावेश शनि से आते हैं।

सप्तम भाव पर मंगल (द्वादश भाव से) और गुरु (प्रथम भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग गुरु से मिलता है। दबाव या प्रेरणा मंगल से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक शुक्र आपके चतुर्थ भाव (स्वराशि) में है। 27 बिंदुओं के साथ (लगभग औसत 28) यह भाव सामान्य, संतुलित फल देता है। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका नवम भाव है।

सप्तम भाव मकर में साझेदारी, समझौते और सार्वजनिक "अन्य" का भाव है। स्वामी शनि (सम राशि) नवम भाव में हैं, राशि पर 27 बिंदु हैं, स्थित ग्रह कोई नहीं। इस स्वामी की दशा समझौतों और निकट संबंधों की समीक्षा का उपयोगी समय है, विवाह या विच्छेद की गारंटी वाली तिथि नहीं।

सप्तम भाव पारंपरिक रूप से विवाह और साझेदार के बारे में है। स्वामी नवम भाव में हैं और राशि पर अष्टकवर्ग 27 है।

## ❖ अष्टम भाव: रूपांतरण और विरासत · कुंभ

8

**अष्टम भाव: रूपांतरण और विरासत · कुंभ**

कुंभ

राहु

स्वामी: शनि

नवम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 23

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**अष्टम भाव: रूपांतरण और विरासत · कुंभ**

आपका अष्टम भाव कुंभ राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, कुंभ की स्वतंत्रता के साथ: आदर्शवादी, अपरंपरागत, मानवतावादी और तटस्थ (मुख्य विषय: नेटवर्क, आदर्श, नवाचार)।

इसका स्वामी शनि नवम भाव में है, त्रिकोण, कृपा और पुण्य का भाव, मीन राशि (सम राशि) में, जो रूपांतरण और विरासत को भाग्य और गुरु से जोड़ता है। भावेश अपने भाव से दूसरे स्थान पर है, जो परंपरा में इन विषयों की वृद्धि और पोषण का संकेत है।

अष्टम भाव में ग्रह: राहु। राहु (छाया ग्रह) रूपांतरण और विरासत में आपकी सांसारिक भूख का प्रभाव लाता है।

अष्टम भाव पर सूर्य (द्वितीय भाव से), बुध (द्वितीय भाव से) और केतु (द्वितीय भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग बुध से मिलता है। दबाव या प्रेरणा सूर्य और केतु से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक शनि आपके नवम भाव (सम राशि) में है। 23 बिंदुओं के साथ (औसत से कम) यह भाव अधिक सचेत प्रयास चाहता है; इससे होकर महत्वपूर्ण गोचरों में धैर्य रखें। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका दशम भाव है।

अष्टम भाव कुंभ में साझा संसाधन, शोध और जीवन के गहरे परिवर्तनों के लिए पढ़ा जाता है। स्वामी शनि (सम राशि) नवम भाव में हैं, 23 बिंदु और स्थित ग्रह राहु। इसकी दशाओं को सावधानीपूर्ण योजना और ईमानदार जायजे का समय मानें, संकट की भविष्यवाणी नहीं।

क्योंकि अष्टम भाव के स्वामी नवम भाव में हैं, रूपांतरण और विरासत समय में उस दूसरे भाव से जुड़ता है। कुंभ पर 23 बिंदु सहयोग या प्रयास का संकेत देते हैं। यहाँ कोई वादा नहीं है।

## ❖ नवम भाव: भाग्य और गुरु · मीन

9

**नवम भाव: भाग्य और गुरु · मीन**

मीन

शनि

स्वामी: गुरु

प्रथम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 31

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**नवम भाव: भाग्य और गुरु · मीन**

आपका नवम भाव मीन राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, मीन की संवेदनशीलता के साथ: कल्पनाशील, करुणामय, आध्यात्मिक और भावों को सहज ग्रहण करने वाला (मुख्य विषय: समर्पण, कल्पना, मुक्ति)।

इसका स्वामी गुरु प्रथम भाव में है, केंद्र, कुंडली का स्तंभ जहाँ ग्रह स्पष्ट रूप से कार्य करते हैं, कर्क राशि (उच्च) में, जो भाग्य और गुरु को स्वयं और स्वास्थ्य से जोड़ता है।

नवम भाव में ग्रह: शनि। शनि (सम राशि) भाग्य और गुरु में आपके अनुशासन का प्रभाव लाता है।

नवम भाव पर गुरु (प्रथम भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग गुरु से मिलता है।

चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका एकादश भाव है।

नवम भाव मीन में धर्म, उच्च अध्ययन, अर्थपूर्ण यात्रा और पिता या मार्गदर्शक का भाव है। स्वामी गुरु (उच्च) प्रथम भाव में, 31 बिंदु, स्थित ग्रह शनि। परंपरा यहाँ दिशा का बोध देखती है। इस स्वामी की दशा उस दिशा को फिर देखने का समय है, वादा किया आशीर्वाद नहीं।

नवम भाव (भाग्य और गुरु) का व्यावहारिक पाठ यह है कि जब इसका स्वामी, जो प्रथम भाव में है, दशा चलाए, तब इस भाव को देखें। मीन पर 31 बिंदु हैं। वे तिथियाँ ध्यान का समय हैं, निर्णय नहीं।

## ❖ दशम भाव: करियर और पद · मेष

10

दशम भाव: करियर और पद · मेष

मेष

–

स्वामी: मंगल

द्वादश भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 30

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

दशम भाव: करियर और पद · मेष

आपका दशम भाव मेष राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, मेष की सीधी शैली में: शीघ्र आरंभ, प्रतिस्पर्धी और स्पष्टवादिता की हद तक ईमानदार (मुख्य विषय: पहल, साहस, गति)। दशम भाव करियर, पद, अधिकार, सार्वजनिक प्रतिष्ठा और संसार में कर्म से जुड़ा है।

इसका स्वामी मंगल द्वादश भाव में है, दु:स्थान (6, 8 या 12), जहाँ फल प्रयास, परिवर्तन या त्याग से आते हैं, मिथुन राशि (शत्रु राशि) में, जो करियर और पद को व्यय और मोक्ष से जोड़ता है।

दशम भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यत: भावेश मंगल से आते हैं।

दशम भाव पर शुक्र (चतुर्थ भाव से) और केतु (द्वितीय भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग शुक्र से मिलता है। दबाव या प्रेरणा केतु से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक बुध आपके द्वितीय भाव (मित्र राशि) में है। 30 बिंदुओं के साथ (औसत 28 से अधिक) यह भाव अच्छी तरह समर्थित है; इससे होकर गोचर प्राय: अच्छे फल देते हैं। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका द्वादश भाव है।

दशम भाव मेष में लोक में कार्य, स्थिति और सार्वजनिक दायित्व का भाव है। स्वामी मंगल (शत्रु राशि) द्वादश भाव में हैं, राशि पर 30 बिंदु हैं, स्थित ग्रह कोई नहीं। इस स्वामी की दशा को करियर दिशा और प्रतिष्ठा की समीक्षा के लिए उपयोग करें, किसी तिथि को पदोन्नति या झटके की गारंटी न मानें।

क्योंकि दशम भाव के स्वामी द्वादश भाव में हैं, करियर और पद समय में उस दूसरे भाव से जुड़ता है। मेष पर 30 बिंदु सहयोग या प्रयास का संकेत देते हैं। यहाँ कोई वादा नहीं है।

## ❖ एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क · वृषभ

11

एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क · वृषभ

वृषभ

चंद्र

स्वामी: शुक्र

चतुर्थ भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 35

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क · वृषभ

आपका एकादश भाव वृषभ राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, वृषभ की स्थिरता के साथ: धैर्यवान, सौंदर्य-प्रेमी, निष्ठावान और जल्दबाज़ी से दूर (मुख्य विषय: स्थिरता, सुख, मूल्य)।

इसका स्वामी शुक्र चतुर्थ भाव में है, केंद्र, कुंडली का स्तंभ जहाँ ग्रह स्पष्ट रूप से कार्य करते हैं, तुला राशि (स्वराशि) में, जो लाभ और नेटवर्क को घर और माता से जोड़ता है। भावेश अपने भाव से छठे स्थान पर है, इसलिए इन विषयों में प्रतियोगिता या समस्या-समाधान जुड़ा रहता है।

एकादश भाव में ग्रह: चंद्र। चंद्र (उच्च) लाभ और नेटवर्क में आपके मन का प्रभाव लाता है।

एकादश भाव पर शनि (नवम भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा शनि से आती है।

35 बिंदुओं के साथ (औसत 28 से अधिक) यह भाव अच्छी तरह समर्थित है; इससे होकर गोचर प्रायः अच्छे फल देते हैं। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका प्रथम भाव है।

एकादश भाव वृषभ में लाभ, सहयोगी और लंबे लक्ष्यों के लिए पढ़ा जाता है। स्वामी शुक्र (स्वराशि) चतुर्थ भाव में हैं, 35 बिंदु और स्थित ग्रह चंद्र। इस स्वामी की दशा मित्रता और लक्ष्यों का जायजा लेने का पारंपरिक समय है, किसी विशेष लाभ का पूर्वानुमान नहीं।

एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) का व्यावहारिक पाठ यह है कि जब इसका स्वामी, जो चतुर्थ भाव में है, दशा चलाए, तब इस भाव को देखें। वृषभ पर 35 बिंदु हैं।

## ❖ द्वादश भाव: व्यय और मोक्ष · मिथुन

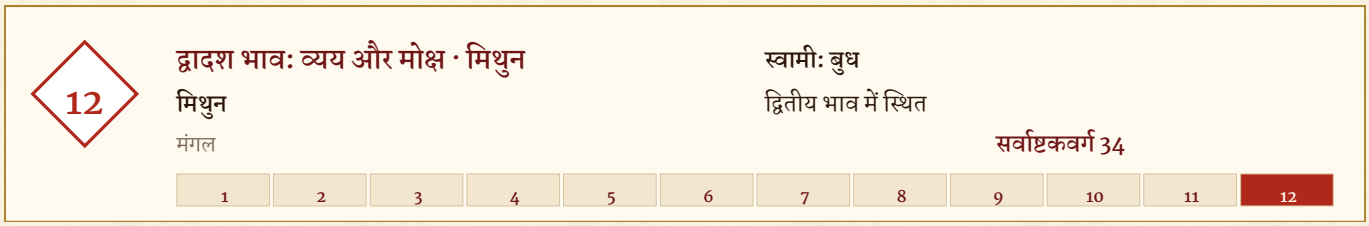


द्वादश भाव: व्यय और मोक्ष · मिथुन

आपका द्वादश भाव मिथुन राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, मिथुन की जिज्ञासा के साथ: बातूनी, लचीला, चंचल और बहुमुखी (मुख्य विषय: संवाद, अध्ययन, व्यापार)।

इसका स्वामी बुध द्वितीय भाव में है, द्वितीय भाव, संसाधन और वाणी का भाव, सिंह राशि (मित्र राशि) में, जो व्यय और मोक्ष को धन और परिवार से जोड़ता है।

द्वादश भाव में ग्रह: मंगल। मंगल (शत्रु राशि) व्यय और मोक्ष में आपकी प्रेरणा का प्रभाव लाता है।

द्वादश भाव पर राहु (अष्टम भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा राहु से आती है।

34 बिंदुओं के साथ (औसत 28 से अधिक) यह भाव अच्छी तरह समर्थित है; इससे होकर गोचर प्रायः अच्छे फल देते हैं। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका द्वितीय भाव है।

द्वादश भाव मिथुन में एकांत, विदेश, निद्रा और छोड़ने का भाव है। स्वामी बुध (मित्र राशि) द्वितीय भाव में, 34 बिंदु, स्थित ग्रह मंगल। सामान्य सलाह है कि जब यह भाव सक्रिय हो, विश्राम, व्यय और एकांत पर ध्यान दें, इसे निश्चित हानि न मानें।

द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष) का व्यावहारिक पाठ यह है कि जब इसका स्वामी, जो द्वितीय भाव में है, दशा चलाए, तब इस भाव को देखें। मिथुन पर 34 बिंदु हैं।

## विभाजन कुंडलियाँ (षोडशवर्ग)

# विभाजन कुंडलियाँ (षोडशवर्ग)

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: यहाँ मापी गई शक्तियाँ और कमज़ोरियाँ बताती हैं कि जीवन के कुछ क्षेत्र सहज और कुछ प्रयास वाले क्यों लगते हैं।

विभाजन कुंडलियाँ (वर्ग) हर राशि को समान भागों में बाँटकर जीवन के किसी एक क्षेत्र को विस्तार से दिखाती हैं। नीचे की सोलह कुंडलियाँ पाराशरी पद्धति पर हैं। D9 और इस रिपोर्ट के विषय की कुंडली का विस्तृत फल दिया गया है; शेष संदर्भ और बल-गणना के लिए हैं।

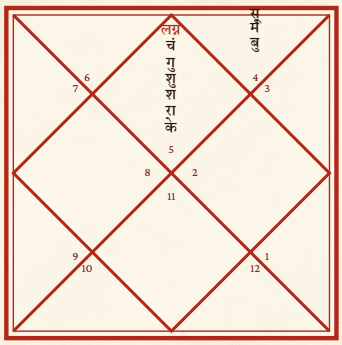


D2 · होरा

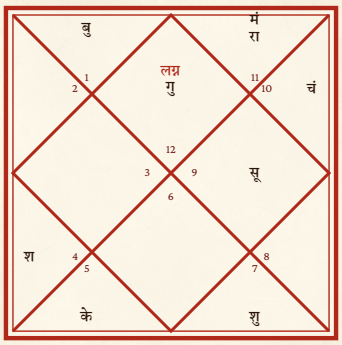


D3 · द्रेष्काण

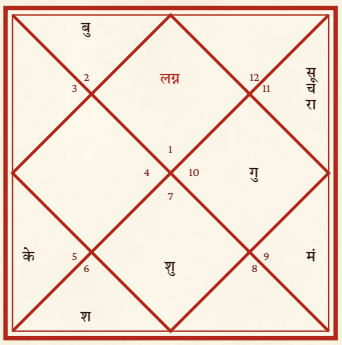


D4 · चतुर्थांश

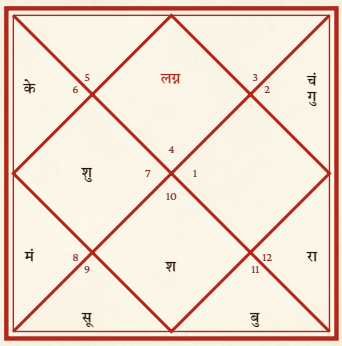


D7 · सप्तांश

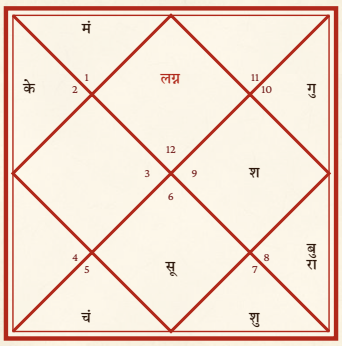


D9 · नवांश

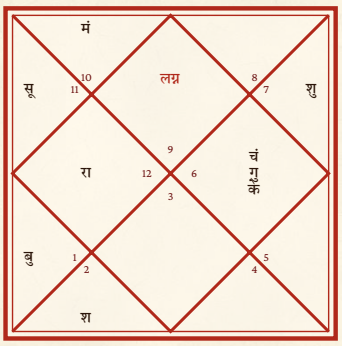


D10 · दशमांश

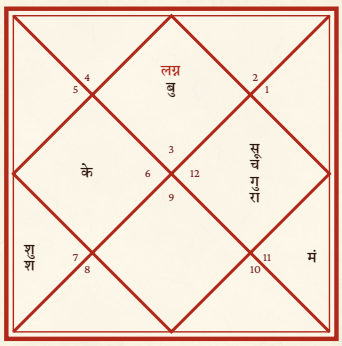


D12 · द्वादशांश

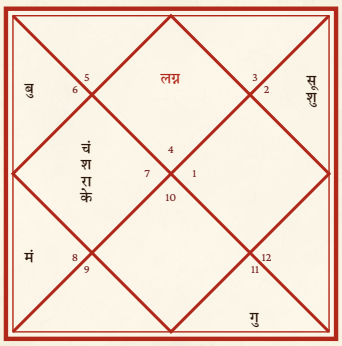


D16 · षोडशांश

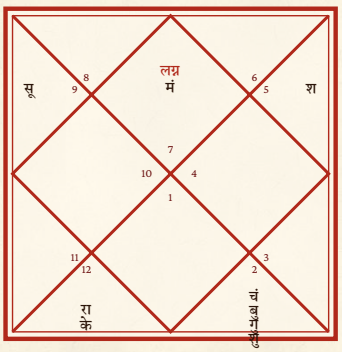


D20 · विंशांश

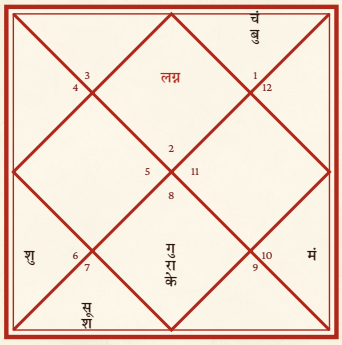


D24 · चतुर्विंशांश

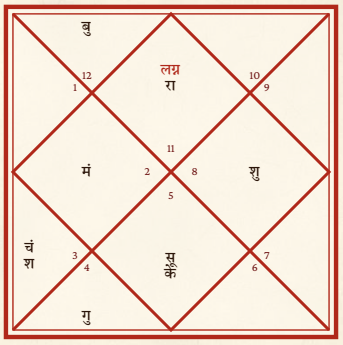


D27 · भांश

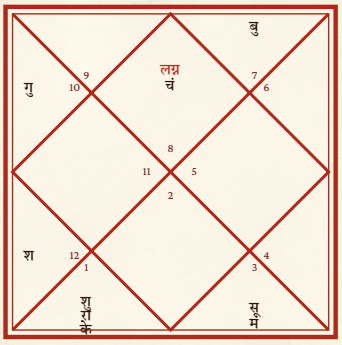


D30 · त्रिंशांश

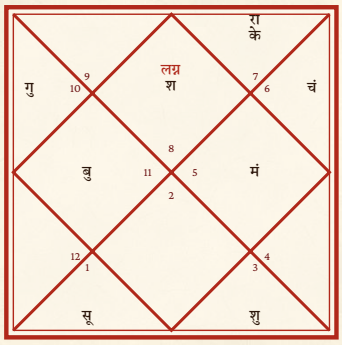


D40 · खवेदांश

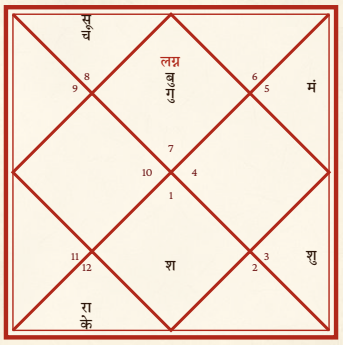


D45 · अक्षवेदांश

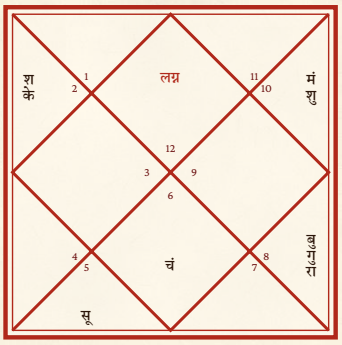


D60 · षष्ट्यंश

## ❖ सोलह वर्गों में ग्रहों की राशियाँ

| ग्रह | D1 | D2 | D3 | D4 | D7 | D9 | D10 | D12 | D16 | D20 | D24 | D27 | D30 | D40 | D45 | D60 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | कर्क | सिंह | मीन | मेष | कर्क | मीन | धनु | मिथुन | कर्क | तुला | वृषभ | कुंभ | वृश्चिक | वृश्चिक | तुला | मीन |
| सूर्य | सिंह | कर्क | धनु | कुंभ | धनु | कन्या | कुंभ | मीन | वृषभ | धनु | तुला | सिंह | मिथुन | मेष | वृश्चिक | सिंह |
| चंद्र | वृषभ | सिंह | मकर | कुंभ | वृषभ | सिंह | कन्या | मीन | तुला | वृषभ | मेष | मिथुन | वृश्चिक | कन्या | वृश्चिक | कन्या |
| मंगल | मिथुन | कर्क | कुंभ | धनु | वृश्चिक | मेष | मकर | कुंभ | वृश्चिक | तुला | मकर | वृषभ | मिथुन | सिंह | सिंह | मकर |
| बुध | सिंह | कर्क | मेष | वृषभ | कुंभ | वृश्चिक | मेष | मिथुन | कन्या | वृषभ | मेष | मीन | तुला | कुंभ | तुला | वृश्चिक |
| गुरु | कर्क | सिंह | मीन | मकर | वृषभ | मकर | कन्या | मीन | कुंभ | वृषभ | वृश्चिक | कर्क | मकर | मकर | तुला | वृश्चिक |
| शुक्र | तुला | सिंह | तुला | तुला | तुला | तुला | तुला | तुला | वृषभ | वृषभ | कन्या | वृश्चिक | मेष | मिथुन | मिथुन | मकर |
| शनि | मीन | सिंह | कर्क | कन्या | मकर | धनु | वृषभ | तुला | तुला | सिंह | तुला | मिथुन | मीन | वृश्चिक | मेष | वृषभ |
| राहु | कुंभ | सिंह | कुंभ | कुंभ | मीन | वृश्चिक | मीन | मीन | तुला | मीन | वृश्चिक | कुंभ | मेष | तुला | मीन | वृश्चिक |
| केतु | सिंह | सिंह | सिंह | सिंह | कन्या | वृषभ | कन्या | कन्या | तुला | मीन | वृश्चिक | सिंह | मेष | तुला | मीन | वृषभ |

## ❖ विंशोपक बल

विंशोपक सोलह वर्गों में ग्रह की गरिमा को 20-अंकीय पैमाने पर आँकता है, जिसमें D1, D9 और D60 का भार सबसे अधिक है। 15 से ऊपर बलवान; 10 से नीचे प्रयास की आवश्यकता।

| ग्रह | विंशोपक (20 में से) | श्रेणी | वर्गोत्तम |
|---|---|---|---|
| सूर्य | 14.7 | मध्यम | नहीं |
| चंद्र | 14.2 | मध्यम | नहीं |
| मंगल | 14.7 | मध्यम | नहीं |
| बुध | 12.5 | मध्यम | नहीं |
| गुरु | 12.6 | मध्यम | नहीं |
| शुक्र | 17.0 | बलवान | हाँ |
| शनि | 12.6 | मध्यम | नहीं |

वर्गोत्तम ग्रह (D1 और D9 में एक ही राशि) अतिरिक्त स्थिरता से कार्य करते हैं: शुक्र।

## ❖ D1 (राशि) का फल: शरीर और संपूर्ण जीवन

D1 का लग्न कर्क है; इसका स्वामी चंद्र इस कुंडली के एकादश भाव में वृषभ राशि (उच्च) में है। D1 में, जिसे परंपरा शरीर और संपूर्ण जीवन के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी मंगल हैं, द्वादश भाव में मिथुन में (शत्रु राशि)। यह स्थिति इस वर्ग-कुंडली के विषय को सहारा या तनाव कैसे देती है, इसका पहला संकेत मानी जाती है। D1 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य, चंद्र, गुरु और शुक्र, जो शरीर और संपूर्ण जीवन में सहायक है। D1 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: गुरु और शुक्र।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | सिंह | द्वितीय भाव | स्वराशि |
| चंद्र | वृषभ | एकादश भाव | उच्च |
| मंगल | मिथुन | द्वादश भाव | शत्रु राशि |
| बुध | सिंह | द्वितीय भाव | मित्र राशि |
| गुरु | कर्क | प्रथम भाव | उच्च |
| शुक्र | तुला | चतुर्थ भाव | स्वराशि |
| शनि | मीन | नवम भाव | सम राशि |
| राहु | कुंभ | अष्टम भाव | छाया ग्रह |
| केतु | सिंह | द्वितीय भाव | छाया ग्रह |

D1 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) सिंह में द्वितीय भाव में हैं, गरिमा स्वराशि। इस वर्ग में द्वितीय भाव पारंपरिक रूप से धन और परिवार से जुड़ा है; इसे शरीर और संपूर्ण जीवन के आसपास दबाव या मुक्ति के बिंदु की तरह पढ़ें, निर्णय की तरह नहीं।

D1 में गुरु (आपके ज्ञान) कर्क में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा उच्च। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर शरीर और संपूर्ण जीवन के क्षेत्र में स्वयं और स्वास्थ्य को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D1 में शुक्र (आपके स्नेह) तुला में चतुर्थ भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा स्वराशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर शरीर और संपूर्ण जीवन के क्षेत्र में घर और माता को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D1 में शनि (आपके अनुशासन) मीन में नवम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा सम राशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर शरीर और संपूर्ण जीवन के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

ऊपर का D1 पाठ शरीर और संपूर्ण जीवन का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। यह जन्म कुंडली का स्थान नहीं लेता, और घटनाओं की गारंटी नहीं देता। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D2 (होरा) का फल: धन और संसाधन

D2 का लग्न सिंह है; इसका स्वामी सूर्य इस कुंडली के द्वादश भाव में कर्क राशि (मित्र राशि) में है। D2 में, जिसे परंपरा धन और संसाधन के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी शुक्र हैं, प्रथम भाव में सिंह में (शत्रु राशि)। D2 में नीच: मंगल; यहाँ इन विषयों में धैर्य चाहिए। D2 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: चंद्र, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | कर्क | द्वादश भाव | मित्र राशि |
| चंद्र | सिंह | प्रथम भाव | मित्र राशि |
| मंगल | कर्क | द्वादश भाव | नीच |
| बुध | कर्क | द्वादश भाव | शत्रु राशि |
| गुरु | सिंह | प्रथम भाव | मित्र राशि |
| शुक्र | सिंह | प्रथम भाव | शत्रु राशि |
| शनि | सिंह | प्रथम भाव | शत्रु राशि |

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| राहु | सिंह | प्रथम भाव | छाया ग्रह |
| केतु | सिंह | प्रथम भाव | छाया ग्रह |

D2 में चंद्र (आपके मन) सिंह में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा मित्र राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर धन और संसाधन के क्षेत्र में स्वयं और स्वास्थ्य को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D2 में मंगल (आपकी प्रेरणा) कर्क में द्वादश भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा नीच। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में व्यय और मोक्ष और धन और संसाधन पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

D2 में गुरु (आपके ज्ञान) सिंह में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा मित्र राशि। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D2 में शनि (आपके अनुशासन) सिंह में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा शत्रु राशि। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

ऊपर का D2 पाठ धन और संसाधन का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D3 (द्रेष्काण) का फल: भाई-बहन, साहस और पहल

D3 का लग्न मीन है; इसका स्वामी गुरु इस कुंडली के प्रथम भाव में मीन राशि (स्वराशि) में है। D3 में, जिसे परंपरा भाई-बहन, साहस और पहल के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी गुरु हैं, प्रथम भाव में मीन में (स्वराशि)। D3 में बलवान (उच्च या स्वराशि): गुरु और शुक्र, जो भाई-बहन, साहस और पहल में सहायक है। D3 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: सूर्य और गुरु।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | धनु | दशम भाव | मित्र राशि |
| चंद्र | मकर | एकादश भाव | सम राशि |
| मंगल | कुंभ | द्वादश भाव | सम राशि |
| बुध | मेष | द्वितीय भाव | सम राशि |
| गुरु | मीन | प्रथम भाव | स्वराशि |
| शुक्र | तुला | अष्टम भाव | स्वराशि |
| शनि | कर्क | पंचम भाव | शत्रु राशि |
| राहु | कुंभ | द्वादश भाव | छाया ग्रह |
| केतु | सिंह | षष्ठ भाव | छाया ग्रह |

D3 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) धनु में दशम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा मित्र राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर भाई-बहन, साहस और पहल के क्षेत्र में करियर और पद को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D3 में शुक्र (आपके स्नेह) तुला में अष्टम भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा स्वराशि। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में रूपांतरण और विरासत और भाई-बहन, साहस और पहल पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

D3 में शनि (आपके अनुशासन) कर्क में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा शत्रु राशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर भाई-बहन, साहस और पहल के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

ऊपर का D3 पाठ भाई-बहन, साहस और पहल का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D4 (चतुर्थांश) का फल: संपत्ति, घर और अचल संपदा

D4 का लग्न मेष है; इसका स्वामी मंगल इस कुंडली के नवम भाव में धनु राशि (मित्र राशि) में है। D4 में, जिसे परंपरा संपत्ति, घर और अचल संपदा के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी शनि हैं, षष्ठ भाव में कन्या में (मित्र राशि)। D4 में बलवान (उच्च या स्वराशि): शुक्र, जो संपत्ति, घर और अचल संपदा में सहायक है। D4 में नीच: गुरु; यहाँ इन विषयों में धैर्य चाहिए। D4 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: गुरु और शुक्र।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | कुंभ | एकादश भाव | शत्रु राशि |
| चंद्र | कुंभ | एकादश भाव | सम राशि |
| मंगल | धनु | नवम भाव | मित्र राशि |
| बुध | वृषभ | द्वितीय भाव | मित्र राशि |
| गुरु | मकर | दशम भाव | नीच |
| शुक्र | तुला | सप्तम भाव | स्वराशि |
| शनि | कन्या | षष्ठ भाव | मित्र राशि |
| राहु | कुंभ | एकादश भाव | छाया ग्रह |
| केतु | सिंह | पंचम भाव | छाया ग्रह |

D4 में गुरु (आपके ज्ञान) मकर में दशम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा नीच। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर संपत्ति, घर और अचल संपदा के क्षेत्र में करियर और पद को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D4 में शुक्र (आपके स्नेह) तुला में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा स्वराशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर संपत्ति, घर और अचल संपदा के क्षेत्र में विवाह और साझेदार को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D4 में केतु (आपकी विरक्ति) सिंह में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा छाया ग्रह। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर संपत्ति, घर और अचल संपदा के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

ऊपर का D4 पाठ संपत्ति, घर और अचल संपदा का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D7 (सप्तांश) का फल: संतान और सृजन

D7 का लग्न कर्क है; इसका स्वामी चंद्र इस कुंडली के एकादश भाव में वृषभ राशि (उच्च) में है। D7 में, जिसे परंपरा संतान और सृजन के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी मंगल हैं, पंचम भाव में वृश्चिक में (स्वराशि)। D7 में बलवान (उच्च या स्वराशि): चंद्र, मंगल, शुक्र और शनि, जो संतान और सृजन में सहायक है। D7 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: शुक्र और शनि।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | धनु | षष्ठ भाव | मित्र राशि |
| चंद्र | वृषभ | एकादश भाव | उच्च |
| मंगल | वृश्चिक | पंचम भाव | स्वराशि |
| बुध | कुंभ | अष्टम भाव | सम राशि |
| गुरु | वृषभ | एकादश भाव | शत्रु राशि |
| शुक्र | तुला | चतुर्थ भाव | स्वराशि |
| शनि | मकर | सप्तम भाव | स्वराशि |
| राहु | मीन | नवम भाव | छाया ग्रह |
| केतु | कन्या | तृतीय भाव | छाया ग्रह |

D7 में शुक्र (आपके स्नेह) तुला में चतुर्थ भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा स्वराशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर संतान और सृजन के क्षेत्र में घर और माता को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D7 में शनि (आपके अनुशासन) मकर में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा स्वराशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर संतान और सृजन के क्षेत्र में विवाह और साझेदार को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D7 में राहु (आपकी सांसारिक भूख) मीन में नवम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा छाया ग्रह। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर संतान और सृजन के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

ऊपर का D7 पाठ संतान और सृजन का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

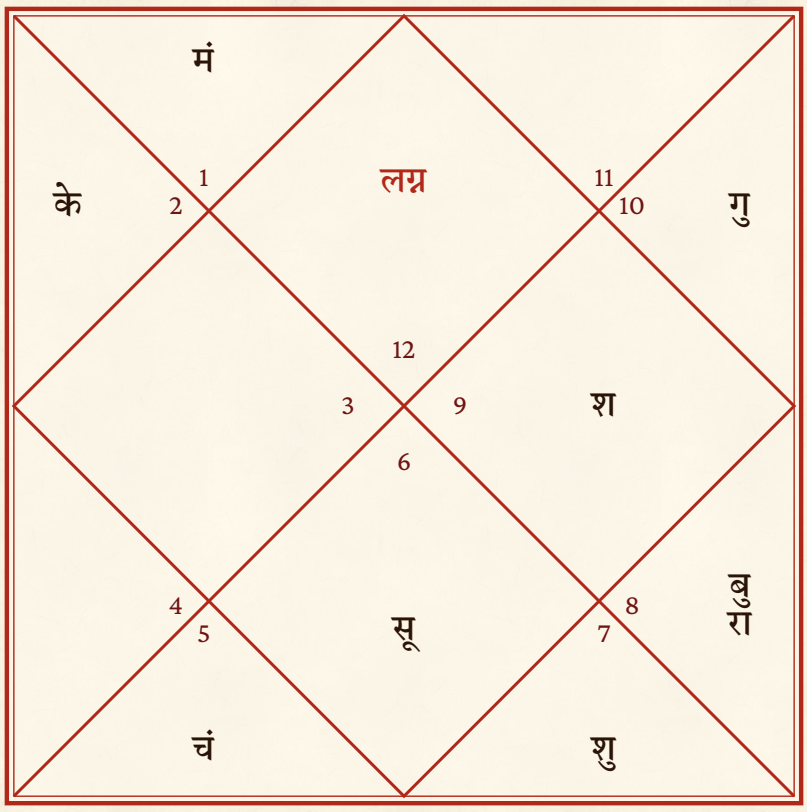


D9 · नवांश: उत्तरी शैली




D9 · नवांश: दक्षिणी शैली

## ❖ D9 (नवांश) का फल: विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल

D9 का लग्न मीन है; इसका स्वामी गुरु इस कुंडली के एकादश भाव में मकर राशि (नीच) में है। D9 में, जिसे परंपरा विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी गुरु हैं, एकादश भाव में मकर में (नीच)। D9 में बलवान (उच्च या स्वराशि): मंगल और शुक्र, जो विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल में सहायक है। D9 में नीच: गुरु; यहाँ इन विषयों में धैर्य चाहिए। D9 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: सूर्य और शनि।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | कन्या | सप्तम भाव | सम राशि |

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| चंद्र | सिंह | षष्ठ भाव | मित्र राशि |
| मंगल | मेष | द्वितीय भाव | स्वराशि |
| बुध | वृश्चिक | नवम भाव | सम राशि |
| गुरु | मकर | एकादश भाव | नीच |
| शुक्र | तुला | अष्टम भाव | स्वराशि |
| शनि | धनु | दशम भाव | सम राशि |
| राहु | वृश्चिक | नवम भाव | छाया ग्रह |
| केतु | वृषभ | तृतीय भाव | छाया ग्रह |

D9 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) कन्या में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा सम राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल के क्षेत्र में विवाह और साझेदार को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D9 में मंगल (आपकी प्रेरणा) मेष में द्वितीय भाव में हैं, गरिमा स्वराशि। इस वर्ग में द्वितीय भाव पारंपरिक रूप से धन और परिवार से जुड़ा है; इसे विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल के आसपास दबाव या मुक्ति के बिंदु की तरह पढ़ें, निर्णय की तरह नहीं।

D9 में बुध (आपकी सोच) वृश्चिक में नवम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा सम राशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

D9 में शुक्र (आपके स्नेह) तुला में अष्टम भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा स्वराशि। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में रूपांतरण और विरासत और विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

ऊपर का D9 पाठ विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

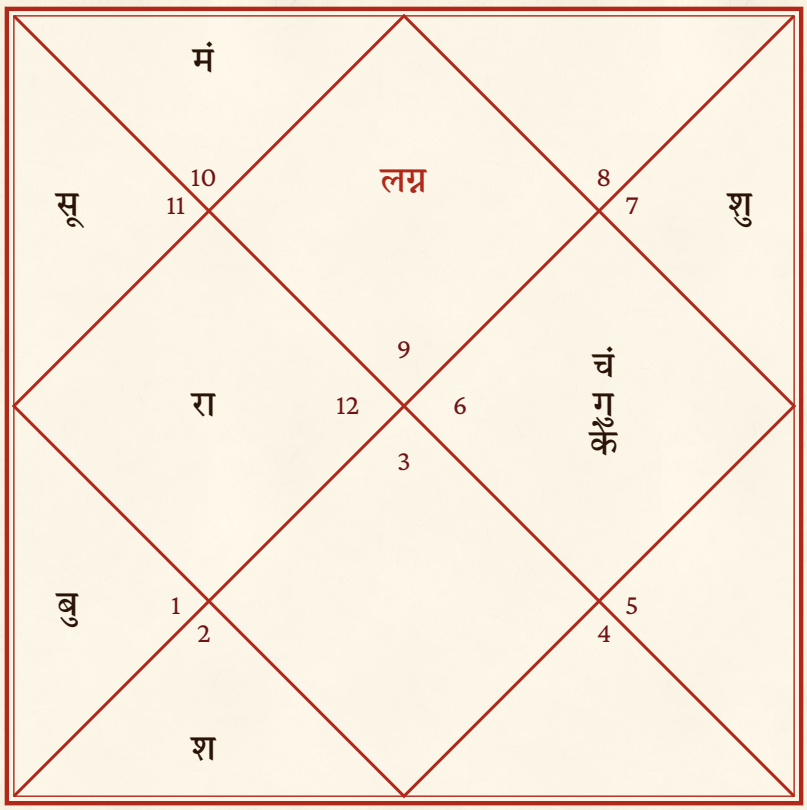


D10 · दशमांश: उत्तरी शैली




D10 · दशमांश: दक्षिणी शैली

## ❖ D10 (दशमांश) का फल: करियर और सार्वजनिक उपलब्धि

D10 का लग्न धनु है; इसका स्वामी गुरु इस कुंडली के दशम भाव में कन्या राशि (शत्रु राशि) में है। D10 में, जिसे परंपरा करियर और सार्वजनिक उपलब्धि के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी बुध हैं, पंचम भाव में मेष में (सम राशि)। D10 में बलवान (उच्च या स्वराशि): मंगल और शुक्र, जो करियर और सार्वजनिक उपलब्धि में सहायक है। D10 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: चंद्र, गुरु, राहु और केतु।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | कुंभ | तृतीय भाव | शत्रु राशि |

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| चंद्र | कन्या | दशम भाव | मित्र राशि |
| मंगल | मकर | द्वितीय भाव | उच्च |
| बुध | मेष | पंचम भाव | सम राशि |
| गुरु | कन्या | दशम भाव | शत्रु राशि |
| शुक्र | तुला | एकादश भाव | स्वराशि |
| शनि | वृषभ | षष्ठ भाव | मित्र राशि |
| राहु | मीन | चतुर्थ भाव | छाया ग्रह |
| केतु | कन्या | दशम भाव | छाया ग्रह |

D10 में चंद्र (आपके मन) कन्या में दशम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा मित्र राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर करियर और सार्वजनिक उपलब्धि के क्षेत्र में करियर और पद को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D10 में मंगल (आपकी प्रेरणा) मकर में द्वितीय भाव में हैं, गरिमा उच्च। इस वर्ग में द्वितीय भाव पारंपरिक रूप से धन और परिवार से जुड़ा है; इसे करियर और सार्वजनिक उपलब्धि के आसपास दबाव या मुक्ति के बिंदु की तरह पढ़ें, निर्णय की तरह नहीं।

D10 में शुक्र (आपके स्नेह) तुला में एकादश भाव में हैं, जो इस वर्ग का उपचय है, गरिमा स्वराशि। ऐसी स्थितियों के बारे में अक्सर कहा जाता है कि करियर और सार्वजनिक उपलब्धि के क्षेत्र में प्रयास से ये बढ़ती हैं।

D10 में केतु (आपकी विरक्ति) कन्या में दशम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा छाया ग्रह। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

ऊपर का D10 पाठ करियर और सार्वजनिक उपलब्धि का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D12 (द्वादशांश) का फल: माता-पिता और वंश

D12 का लग्न मिथुन है; इसका स्वामी बुध इस कुंडली के प्रथम भाव में मिथुन राशि (स्वराशि) में है। D12 में, जिसे परंपरा माता-पिता और वंश के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी गुरु हैं, दशम भाव में मीन में (स्वराशि)। D12 में बलवान (उच्च या स्वराशि): बुध, गुरु, शुक्र और शनि, जो माता-पिता और वंश में सहायक है। D12 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु, राहु और केतु।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | मीन | दशम भाव | मित्र राशि |
| चंद्र | मीन | दशम भाव | सम राशि |
| मंगल | कुंभ | नवम भाव | सम राशि |
| बुध | मिथुन | प्रथम भाव | स्वराशि |
| गुरु | मीन | दशम भाव | स्वराशि |
| शुक्र | तुला | पंचम भाव | स्वराशि |
| शनि | तुला | पंचम भाव | उच्च |
| राहु | मीन | दशम भाव | छाया ग्रह |
| केतु | कन्या | चतुर्थ भाव | छाया ग्रह |

D12 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) मीन में दशम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा मित्र राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर माता-पिता और वंश के क्षेत्र में करियर और पद को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D12 में चंद्र (आपके मन) मीन में दशम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा सम राशि। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D12 में मंगल (आपकी प्रेरणा) कुंभ में नवम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा सम राशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर माता-पिता और वंश के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

D12 में शुक्र (आपके स्नेह) तुला में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा स्वराशि।

ऊपर का D12 पाठ माता-पिता और वंश का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D16 (षोडशांश) का फल: वाहन, सुख-सुविधा और प्रसन्नता

D16 का लग्न कर्क है; इसका स्वामी चंद्र इस कुंडली के चतुर्थ भाव में तुला राशि (सम राशि) में है। D16 में, जिसे परंपरा वाहन, सुख-सुविधा और प्रसन्नता के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी मंगल हैं, पंचम भाव में वृश्चिक में (स्वराशि)। D16 में बलवान (उच्च या स्वराशि): मंगल, बुध, शुक्र और शनि, जो वाहन, सुख-सुविधा और प्रसन्नता में सहायक है। D16 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: चंद्र, शनि, राहु और केतु।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | वृषभ | एकादश भाव | शत्रु राशि |
| चंद्र | तुला | चतुर्थ भाव | सम राशि |
| मंगल | वृश्चिक | पंचम भाव | स्वराशि |
| बुध | कन्या | तृतीय भाव | उच्च |
| गुरु | कुंभ | अष्टम भाव | सम राशि |
| शुक्र | वृषभ | एकादश भाव | स्वराशि |
| शनि | तुला | चतुर्थ भाव | उच्च |
| राहु | तुला | चतुर्थ भाव | छाया ग्रह |
| केतु | तुला | चतुर्थ भाव | छाया ग्रह |

D16 में बुध (आपकी सोच) कन्या में तृतीय भाव में हैं, जो इस वर्ग का उपचय है, गरिमा उच्च। ऐसी स्थितियों के बारे में अक्सर कहा जाता है कि वाहन, सुख-सुविधा और प्रसन्नता के क्षेत्र में प्रयास से ये बढ़ती हैं।

D16 में शुक्र (आपके स्नेह) वृषभ में एकादश भाव में हैं, जो इस वर्ग का उपचय है, गरिमा स्वराशि।

D16 में शनि (आपके अनुशासन) तुला में चतुर्थ भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा उच्च। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर वाहन, सुख-सुविधा और प्रसन्नता के क्षेत्र में घर और माता को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

ऊपर का D16 पाठ वाहन, सुख-सुविधा और प्रसन्नता का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D20 (विंशांश) का फल: आध्यात्मिक साधना और भक्ति

D20 का लग्न तुला है; इसका स्वामी शुक्र इस कुंडली के अष्टम भाव में वृषभ राशि (स्वराशि) में है। D20 में, जिसे परंपरा आध्यात्मिक साधना और भक्ति के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी चंद्र हैं, अष्टम भाव में वृषभ में (उच्च)। D20 में बलवान (उच्च या स्वराशि): चंद्र और शुक्र, जो आध्यात्मिक साधना और भक्ति में सहायक है। D20 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: मंगल।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | धनु | तृतीय भाव | मित्र राशि |
| चंद्र | वृषभ | अष्टम भाव | उच्च |
| मंगल | तुला | प्रथम भाव | सम राशि |
| बुध | वृषभ | अष्टम भाव | मित्र राशि |
| गुरु | वृषभ | अष्टम भाव | शत्रु राशि |
| शुक्र | वृषभ | अष्टम भाव | स्वराशि |
| शनि | सिंह | एकादश भाव | शत्रु राशि |
| राहु | मीन | षष्ठ भाव | छाया ग्रह |
| केतु | मीन | षष्ठ भाव | छाया ग्रह |

D20 में मंगल (आपकी प्रेरणा) तुला में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा सम राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर आध्यात्मिक साधना और भक्ति के क्षेत्र में स्वयं और स्वास्थ्य को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

ऊपर का D20 पाठ आध्यात्मिक साधना और भक्ति का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D24 (चतुर्विंशांश) का फल: शिक्षा और विद्या

D24 का लग्न वृषभ है; इसका स्वामी शुक्र इस कुंडली के पंचम भाव में कन्या राशि (नीच) में है। D24 में, जिसे परंपरा शिक्षा और विद्या के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी शनि हैं, षष्ठ भाव में तुला में (उच्च)। D24 में बलवान (उच्च या स्वराशि): मंगल और शनि, जो शिक्षा और विद्या में सहायक है। D24 में नीच: सूर्य और शुक्र; यहाँ इन विषयों में धैर्य चाहिए। D24 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: गुरु, राहु और केतु।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | तुला | षष्ठ भाव | नीच |
| चंद्र | मेष | द्वादश भाव | सम राशि |
| मंगल | मकर | नवम भाव | उच्च |
| बुध | मेष | द्वादश भाव | सम राशि |
| गुरु | वृश्चिक | सप्तम भाव | मित्र राशि |
| शुक्र | कन्या | पंचम भाव | नीच |
| शनि | तुला | षष्ठ भाव | उच्च |
| राहु | वृश्चिक | सप्तम भाव | छाया ग्रह |
| केतु | वृश्चिक | सप्तम भाव | छाया ग्रह |

D24 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) तुला में षष्ठ भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा नीच। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में सेवा और बाधाएँ और शिक्षा और विद्या पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

D24 में मंगल (आपकी प्रेरणा) मकर में नवम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा उच्च। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर शिक्षा और विद्या के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

D24 में गुरु (आपके ज्ञान) वृश्चिक में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा मित्र राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर शिक्षा और विद्या के क्षेत्र में विवाह और साझेदार को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D24 में राहु (आपकी सांसारिक भूख) वृश्चिक में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा छाया ग्रह। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

ऊपर का D24 पाठ शिक्षा और विद्या का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D27 (भांश) का फल: शक्तियाँ और दुर्बलताएँ

D27 का लग्न कुंभ है; इसका स्वामी शनि इस कुंडली के पंचम भाव में मिथुन राशि (मित्र राशि) में है। D27 में, जिसे परंपरा शक्तियाँ और दुर्बलताएँ के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी मंगल हैं, चतुर्थ भाव में वृषभ में (सम राशि)। D27 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य और गुरु, जो शक्तियाँ और दुर्बलताएँ में सहायक है। D27 में नीच: बुध; यहाँ इन विषयों में धैर्य चाहिए। D27 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: सूर्य, मंगल, शुक्र, राहु और केतु।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | सिंह | सप्तम भाव | स्वराशि |
| चंद्र | मिथुन | पंचम भाव | मित्र राशि |
| मंगल | वृषभ | चतुर्थ भाव | सम राशि |
| बुध | मीन | द्वितीय भाव | नीच |
| गुरु | कर्क | षष्ठ भाव | उच्च |

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| शुक्र | वृश्चिक | दशम भाव | सम राशि |
| शनि | मिथुन | पंचम भाव | मित्र राशि |
| राहु | कुंभ | प्रथम भाव | छाया ग्रह |
| केतु | सिंह | सप्तम भाव | छाया ग्रह |

D27 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) सिंह में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा स्वराशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर शक्तियाँ और दुर्बलताएँ के क्षेत्र में विवाह और साझेदार को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D27 में चंद्र (आपके मन) मिथुन में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा मित्र राशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर शक्तियाँ और दुर्बलताएँ के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

D27 में बुध (आपकी सोच) मीन में द्वितीय भाव में हैं, गरिमा नीच। इस वर्ग में द्वितीय भाव पारंपरिक रूप से धन और परिवार से जुड़ा है; इसे शक्तियाँ और दुर्बलताएँ के आसपास दबाव या मुक्ति के बिंदु की तरह पढ़ें, निर्णय की तरह नहीं।

D27 में गुरु (आपके ज्ञान) कर्क में षष्ठ भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा उच्च। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में सेवा और बाधाएँ और शक्तियाँ और दुर्बलताएँ पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

ऊपर का D27 पाठ शक्तियाँ और दुर्बलताएँ का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D30 (त्रिंशांश) का फल: कठिनाइयाँ और उनका सामना

D30 का लग्न वृश्चिक है; इसका स्वामी मंगल इस कुंडली के अष्टम भाव में मिथुन राशि (शत्रु राशि) में है। D30 में, जिसे परंपरा कठिनाइयाँ और उनका सामना के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी सूर्य हैं, अष्टम भाव में मिथुन में (सम राशि)। D30 में नीच: चंद्र और गुरु; यहाँ इन विषयों में धैर्य चाहिए। D30 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: चंद्र।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | मिथुन | अष्टम भाव | सम राशि |
| चंद्र | वृश्चिक | प्रथम भाव | नीच |
| मंगल | मिथुन | अष्टम भाव | शत्रु राशि |
| बुध | तुला | द्वादश भाव | मित्र राशि |
| गुरु | मकर | तृतीय भाव | नीच |
| शुक्र | मेष | षष्ठ भाव | सम राशि |
| शनि | मीन | पंचम भाव | सम राशि |
| राहु | मेष | षष्ठ भाव | छाया ग्रह |
| केतु | मेष | षष्ठ भाव | छाया ग्रह |

D30 में चंद्र (आपके मन) वृश्चिक में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा नीच। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर कठिनाइयाँ और उनका सामना के क्षेत्र में स्वयं और स्वास्थ्य को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D30 में गुरु (आपके ज्ञान) मकर में तृतीय भाव में हैं, जो इस वर्ग का उपचय है, गरिमा नीच। ऐसी स्थितियों के बारे में अक्सर कहा जाता है कि कठिनाइयाँ और उनका सामना के क्षेत्र में प्रयास से ये बढ़ती हैं।

D30 में शनि (आपके अनुशासन) मीन में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा सम राशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर कठिनाइयाँ और उनका सामना के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

ऊपर का D30 पाठ कठिनाइयाँ और उनका सामना का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D40 (खवेदांश) का फल: मातृ-पक्ष से शुभ-अशुभ प्रभाव

D40 का लग्न वृश्चिक है; इसका स्वामी मंगल इस कुंडली के दशम भाव में सिंह राशि (मित्र राशि) में है। D40 में, जिसे परंपरा मातृ-पक्ष से शुभ-अशुभ प्रभाव के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी सूर्य हैं, षष्ठ भाव में मेष में (उच्च)। D40 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य, जो मातृ-पक्ष से शुभ-अशुभ प्रभाव में सहायक है। D40 में नीच: गुरु; यहाँ इन विषयों में धैर्य चाहिए। D40 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: मंगल, बुध और शनि।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | मेष | षष्ठ भाव | उच्च |
| चंद्र | कन्या | एकादश भाव | मित्र राशि |
| मंगल | सिंह | दशम भाव | मित्र राशि |
| बुध | कुंभ | चतुर्थ भाव | सम राशि |
| गुरु | मकर | तृतीय भाव | नीच |
| शुक्र | मिथुन | अष्टम भाव | मित्र राशि |
| शनि | वृश्चिक | प्रथम भाव | शत्रु राशि |
| राहु | तुला | द्वादश भाव | छाया ग्रह |
| केतु | तुला | द्वादश भाव | छाया ग्रह |

D40 में गुरु (आपके ज्ञान) मकर में तृतीय भाव में हैं, जो इस वर्ग का उपचय है, गरिमा नीच। ऐसी स्थितियों के बारे में अक्सर कहा जाता है कि मातृ-पक्ष से शुभ-अशुभ प्रभाव के क्षेत्र में प्रयास से ये बढ़ती हैं।

D40 में शनि (आपके अनुशासन) वृश्चिक में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा शत्रु राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर मातृ-पक्ष से शुभ-अशुभ प्रभाव के क्षेत्र में स्वयं और स्वास्थ्य को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

ऊपर का D40 पाठ मातृ-पक्ष से शुभ-अशुभ प्रभाव का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D45 (अक्षवेदांश) का फल: पितृ-पक्ष से चरित्र और आचरण

D45 का लग्न तुला है; इसका स्वामी शुक्र इस कुंडली के नवम भाव में मिथुन राशि (मित्र राशि) में है। D45 में, जिसे परंपरा पितृ-पक्ष से चरित्र और आचरण के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी चंद्र हैं, द्वितीय भाव में वृश्चिक में (नीच)। D45 में नीच: चंद्र और शनि; यहाँ इन विषयों में धैर्य चाहिए। D45 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: बुध, गुरु और शनि।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | वृश्चिक | द्वितीय भाव | मित्र राशि |
| चंद्र | वृश्चिक | द्वितीय भाव | नीच |
| मंगल | सिंह | एकादश भाव | मित्र राशि |
| बुध | तुला | प्रथम भाव | मित्र राशि |
| गुरु | तुला | प्रथम भाव | शत्रु राशि |
| शुक्र | मिथुन | नवम भाव | मित्र राशि |
| शनि | मेष | सप्तम भाव | नीच |
| राहु | मीन | षष्ठ भाव | छाया ग्रह |
| केतु | मीन | षष्ठ भाव | छाया ग्रह |

D45 में बुध (आपकी सोच) तुला में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा मित्र राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर पितृ-पक्ष से चरित्र और आचरण के क्षेत्र में स्वयं और स्वास्थ्य को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D45 में गुरु (आपके ज्ञान) तुला में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा शत्रु राशि। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D45 में शनि (आपके अनुशासन) मेष में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा नीच। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर पितृ-पक्ष से चरित्र और आचरण के क्षेत्र में विवाह और साझेदार को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

ऊपर का D45 पाठ पितृ-पक्ष से चरित्र और आचरण का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D60 (षष्ट्यंश) का फल: पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील

D60 का लग्न मीन है; इसका स्वामी गुरु इस कुंडली के नवम भाव में वृश्चिक राशि (मित्र राशि) में है। D60 में, जिसे परंपरा पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी गुरु हैं, नवम भाव में वृश्चिक में (मित्र राशि)। D60 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य और मंगल, जो पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील में सहायक है। D60 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: चंद्र।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | सिंह | षष्ठ भाव | स्वराशि |
| चंद्र | कन्या | सप्तम भाव | मित्र राशि |
| मंगल | मकर | एकादश भाव | उच्च |
| बुध | वृश्चिक | नवम भाव | सम राशि |
| गुरु | वृश्चिक | नवम भाव | मित्र राशि |
| शुक्र | मकर | एकादश भाव | मित्र राशि |
| शनि | वृषभ | तृतीय भाव | मित्र राशि |
| राहु | वृश्चिक | नवम भाव | छाया ग्रह |
| केतु | वृषभ | तृतीय भाव | छाया ग्रह |

D60 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) सिंह में षष्ठ भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा स्वराशि। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में सेवा और बाधाएँ और पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

D60 में चंद्र (आपके मन) कन्या में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा मित्र राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील के क्षेत्र में विवाह और साझेदार को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D60 में मंगल (आपकी प्रेरणा) मकर में एकादश भाव में हैं, जो इस वर्ग का उपचय है, गरिमा उच्च। ऐसी स्थितियों के बारे में अक्सर कहा जाता है कि पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील के क्षेत्र में प्रयास से ये बढ़ती हैं।

D60 में बुध (आपकी सोच) वृश्चिक में नवम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा सम राशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

ऊपर का D60 पाठ पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

# ग्रह-बल: षड्बल और अष्टकवर्ग

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: बाद में आप जिस भी ज्योतिषी से मिलें, वे ठीक यही आँकड़े माँगेंगे; यह पृष्ठ सँभालकर रखें।

षड्बल ग्रहों के बल को छह प्रकार से मापता है। यह रिपोर्ट उच्च बल, सप्तवर्गज बल (सात वर्गों में गरिमा), ओज-युग्म बल, केंद्रादि बल, दिग्बल, पक्ष बल, अनुमानित चेष्टा बल और नैसर्गिक बल की गणना विरूपों में करती है (60 विरूप = 1 रूप)। कुछ काल-आधारित घटक और दृग्बल छोड़े गए हैं, इसलिए योग को शास्त्रीय न्यूनतम से नहीं, अपने ग्रहों की आपसी तुलना के रूप में पढ़ें।

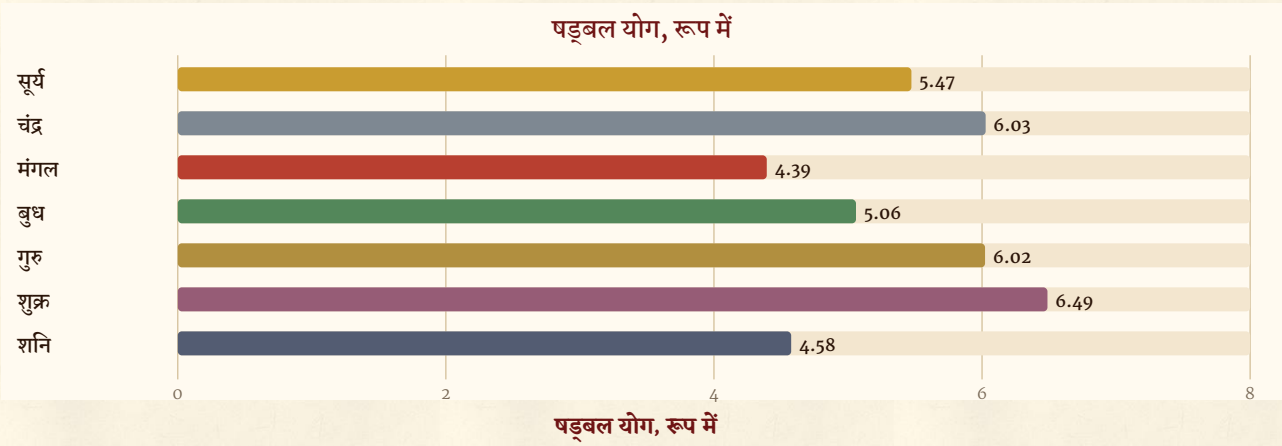


षड्बल योग रूप में दिखाए गए हैं। ऊँचा स्तंभ इस कुंडली में उस ग्रह को शास्त्रीय दृष्टि से अधिक समर्थित बताता है।

| ग्रह | उच्च | सप्तवर्गज | ओज | केंद्र | दिक् | पक्ष | चेष्टा | नैसर्गिक | योग | रूप |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 17 | 120 | 15 | 30 | 23 | 33 | 30 | 60 | 328 | 5.47 |
| चंद्र | 52 | 122 | 15 | 30 | 9 | 54 | 27 | 51 | 362 | 6.03 |
| मंगल | 12 | 84 | 30 | 15 | 42 | 33 | 30 | 17 | 264 | 4.39 |
| बुध | 54 | 86 | 15 | 30 | 51 | 27 | 15 | 26 | 304 | 5.06 |
| गुरु | 55 | 112 | 0 | 60 | 57 | 27 | 15 | 34 | 361 | 6.02 |
| शुक्र | 2 | 176 | 0 | 60 | 51 | 27 | 30 | 43 | 389 | 6.49 |
| शनि | 10 | 90 | 15 | 15 | 43 | 33 | 60 | 9 | 275 | 4.58 |

इन मापों से आपके सबसे बलवान ग्रह शुक्र और चंद्र हैं, इसलिए आपके स्नेह एक भरोसेमंद संसाधन है। सबसे कम सहयोग शनि और मंगल को है, इसलिए आपकी प्रेरणा से जुड़े विषयों में अतिरिक्त ध्यान और धैर्य फल देता है।

दिग्बल गुरु का सबसे अधिक और चंद्र का सबसे कम है। दिग्बल बताता है कि क्षितिज और मध्याह्न-रेखा के सापेक्ष ग्रह कितनी अच्छी स्थिति में है।

## ❖ अष्टकवर्ग

अष्टकवर्ग हर ग्रह को हर राशि में अधिकतम 8 शुभ बिंदु देता है, जो सात ग्रहों और लग्न से आते हैं। अंतिम पंक्ति (सर्वाष्टकवर्ग) इनका योग है: औसत लगभग 28 प्रति राशि, कुल सदा 337।

| ग्रह | मेष | वृषभ | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुंभ | मीन | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 6 | 4 | 5 | 3 | 1 | 5 | 4 | 3 | 5 | 3 | 3 | 6 | 48 |

| ग्रह | मेष | वृषभ | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुंभ | मीन | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चंद्र | 4 | 6 | 4 | 5 | 4 | 1 | 5 | 3 | 3 | 4 | 6 | 4 | 49 |
| मंगल | 3 | 4 | 5 | 3 | 1 | 4 | 4 | 1 | 6 | 4 | 0 | 4 | 39 |
| बुध | 5 | 4 | 7 | 4 | 4 | 2 | 5 | 2 | 8 | 5 | 5 | 3 | 54 |
| गुरु | 5 | 5 | 5 | 5 | 6 | 5 | 3 | 5 | 3 | 5 | 4 | 5 | 56 |
| शुक्र | 4 | 6 | 5 | 5 | 4 | 2 | 5 | 5 | 4 | 4 | 4 | 4 | 52 |
| शनि | 3 | 6 | 3 | 4 | 4 | 3 | 3 | 3 | 2 | 2 | 1 | 5 | 39 |
| सर्वाष्टकवर्ग | 30 | 35 | 34 | 29 | 24 | 22 | 29 | 22 | 31 | 27 | 23 | 31 | 337 |

### अष्टकवर्ग बिंदु मानचित्र

| | मेष | वृषभ | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुंभ | मीन | tot |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 6 | 4 | 5 | 3 | 1 | 5 | 4 | 3 | 5 | 3 | 3 | 6 | 48 |
| चंद्र | 4 | 6 | 4 | 5 | 4 | 1 | 5 | 3 | 3 | 4 | 6 | 4 | 49 |
| मंगल | 3 | 4 | 5 | 3 | 1 | 4 | 4 | 1 | 6 | 4 | 0 | 4 | 39 |
| बुध | 5 | 4 | 7 | 4 | 4 | 2 | 5 | 2 | 8 | 5 | 5 | 3 | 54 |
| गुरु | 5 | 5 | 5 | 5 | 6 | 5 | 3 | 5 | 3 | 5 | 4 | 5 | 56 |
| शुक्र | 4 | 6 | 5 | 5 | 4 | 2 | 5 | 5 | 4 | 4 | 4 | 4 | 52 |
| शनि | 3 | 6 | 3 | 4 | 4 | 3 | 3 | 3 | 2 | 2 | 1 | 5 | 39 |
| सर्वाष्टकवर्ग | 30 | 35 | 34 | 29 | 24 | 22 | 29 | 22 | 31 | 27 | 23 | 31 | 337 |

**अष्टकवर्ग बिंदु मानचित्र**

गहरे कोष्ठकों में अधिक अष्टकवर्ग बिंदु हैं (0 से 8)। अंतिम स्तंभ पंक्ति का योग है। यह समर्थन का मानचित्र है, पूर्वानुमान नहीं।

आपकी सबसे समर्थित राशियाँ वृषभ (एकादश भाव, 35 बिंदु) और मिथुन (द्वादश भाव, 34) हैं, इसलिए लाभ और नेटवर्क को स्थिर सहयोग मिलता है। वृश्चिक (पंचम भाव, 22) सबसे कम समर्थित है, इसलिए संतान और बुद्धि में धैर्य चाहिए, विशेषकर जब धीमे ग्रह वहाँ से गोचर करें।

पुरुषार्थ के अनुसार: धर्म भाव (1, 5, 9) का योग 82, अर्थ भाव (2, 6, 10) 85, काम भाव (3, 7, 11) 84 और मोक्ष भाव (4, 8, 12) 86। ज़ोर मोक्ष: आंतरिक जीवन, शोध और मुक्ति पर है।

आपके लाभ भाव (एकादश) में 35 बिंदु और व्यय भाव (द्वादश) में 34 बिंदु हैं। परंपरा में द्वादश से अधिक बिंदु एकादश में होना बचत के अनुकूल माना जाता है।

सूर्य: अपनी जन्म-राशि सिंह में 1 बिंदु (औसत से कम); कुल 48, सबसे अच्छी राशि मेष।

चंद्र: अपनी जन्म-राशि वृषभ में 6 बिंदु (प्रबल); कुल 49, सबसे अच्छी राशि वृषभ।

मंगल: अपनी जन्म-राशि मिथुन में 5 बिंदु (प्रबल); कुल 39, सबसे अच्छी राशि धनु।

बुध: अपनी जन्म-राशि सिंह में 4 बिंदु (औसत); कुल 54, सबसे अच्छी राशि धनु।

गुरु: अपनी जन्म-राशि कर्क में 5 बिंदु (प्रबल); कुल 56, सबसे अच्छी राशि सिंह।

शुक्र: अपनी जन्म-राशि तुला में 5 बिंदु (प्रबल); कुल 52, सबसे अच्छी राशि वृषभ।

शनि: अपनी जन्म-राशि मीन में 5 बिंदु (प्रबल); कुल 39, सबसे अच्छी राशि वृषभ।

## ग्रह मैत्री (पंचधा मैत्री)

# ग्रह मैत्री (पंचधा मैत्री)

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: जब रिपोर्ट की कोई बात बहुत सच या बहुत ग़लत लगे, तो यहीं देख सकते हैं कि वह किस कारक से आई।

शास्त्रीय ज्योतिष ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री को आपकी कुंडली की तात्कालिक मैत्री से जोड़ता है (एक-दूसरे से 2, 3, 4, 10, 11 या 12वें ग्रह तात्कालिक मित्र होते हैं)। परिणाम के पाँच स्तर हैं, अधिमित्र से अधिशत्रु तक।

| | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | – | अमि | अमि | श | अमि | स | अश |
| चंद्र | अमि | – | मि | अमि | मि | श | मि |
| मंगल | अमि | अमि | – | स | अमि | श | मि |
| बुध | स | स | मि | – | मि | अमि | श |
| गुरु | अमि | अमि | अमि | स | – | स | श |
| शुक्र | स | अश | श | अमि | मि | – | स |
| शनि | अश | स | स | स | श | स | – |

संकेत: अमि अधिमित्र, मि मित्र, स सम, श शत्रु, अश अधिशत्रु। पंक्ति में पढ़ें: पंक्ति का ग्रह स्तंभ के ग्रह को कैसे देखता है।

आपकी कुंडली में सूर्य चंद्र, मंगल और गुरु को अधिमित्र और शनि को अधिशत्रु मानता है, इसलिए चंद्र, मंगल और गुरु के साथ जुड़ी दशाओं और योगों में यह सबसे सहज रहता है।

आपकी कुंडली में चंद्र सूर्य और बुध को अधिमित्र मानता है, इसलिए इनके साथ जुड़ी दशाएँ प्रायः सहज चलती हैं।

आपकी कुंडली में मंगल सूर्य, चंद्र और गुरु को अधिमित्र मानता है, इसलिए इनके साथ जुड़ी दशाएँ प्रायः सहज चलती हैं।

आपकी कुंडली में बुध शुक्र को अधिमित्र मानता है, इसलिए दोनों से जुड़ी दशाएँ प्रायः सहज चलती हैं।

आपकी कुंडली में गुरु सूर्य, चंद्र और मंगल को अधिमित्र मानता है, इसलिए इनके साथ जुड़ी दशाएँ प्रायः सहज चलती हैं।

आपकी कुंडली में शुक्र बुध को अधिमित्र और चंद्र को अधिशत्रु मानता है, इसलिए बुध के साथ जुड़ी दशाओं और योगों में यह सबसे सहज रहता है।

आपकी कुंडली में शनि सूर्य को अधिशत्रु मानता है, इसलिए दोनों से जुड़ी दशाओं में अधिक धैर्य चाहिए।

ग्रह अवस्थाएँ (जाग्रदादि और दीप्तादि)

# ग्रह अवस्थाएँ (जाग्रदादि और दीप्तादि)

यह आपसे कैसे जुड़ता है: "ग्रह अवस्थाएँ (जाग्रदादि और दीप्तादि)" वृषभ राशि के स्थिर चंद्र वाले परवाह करने वाले कर्क लग्न के व्यक्ति के एक और पहलू को देखता है; इसकी व्यावहारिक बातें खोजें, क्योंकि आप साहस से कमाते और उत्साह वाली चीज़ों पर ख़र्च करते हैं।

दो शास्त्रीय पद्धतियाँ हर ग्रह की मनःस्थिति बताती हैं। जाग्रदादि (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति) बताती है कि वह कितनी तत्परता से फल देता है; दीप्तादि (एक प्रचलित पद्धति में नौ अवस्थाएँ) उन फलों की गुणवत्ता बताती है।

| ग्रह | राशि | बल | जाग्रदादि | दीप्तादि |
|---|---|---|---|---|
| सूर्य | सिंह | स्वराशि | जाग्रत | स्वस्थ |
| चंद्र | वृषभ | उच्च | जाग्रत | दीप्त |
| मंगल | मिथुन | शत्रु राशि | सुषुप्ति | दीन |
| बुध | सिंह | मित्र राशि | स्वप्न | विकल |
| गुरु | कर्क | उच्च | जाग्रत | दीप्त |
| शुक्र | तुला | स्वराशि | जाग्रत | स्वस्थ |
| शनि | मीन | सम राशि | स्वप्न | दुःखित |

सूर्य जाग्रत अवस्था में है: यह अपने फल पूर्ण रूप से और शीघ्र देता है। दीप्तादि पद्धति में यह स्वस्थ है, स्वराशि: स्वास्थ्य, सुख और स्थिर सफलता।

चंद्र जाग्रत अवस्था में है: यह अपने फल पूर्ण रूप से और शीघ्र देता है। दीप्तादि पद्धति में यह दीप्त है, उच्च: उज्ज्वल फल और मान्यता।

मंगल सुषुप्ति अवस्था में है: यह दशा या गोचर से सक्रिय हुए बिना कम फल देता है। दीप्तादि पद्धति में यह दीन है, आपकी कुंडली में राशि-स्वामी सम: साधारण फल।

बुध स्वप्न अवस्था में है: यह मध्यम फल देता है जिन्हें पाने के लिए प्रयास चाहिए। दीप्तादि पद्धति में यह विकल है, अस्त: इसके विषय सूर्य की छाया में रहते हैं।

गुरु जाग्रत अवस्था में है: यह अपने फल पूर्ण रूप से और शीघ्र देता है।

शुक्र जाग्रत अवस्था में है: यह अपने फल पूर्ण रूप से और शीघ्र देता है।

शनि स्वप्न अवस्था में है: यह मध्यम फल देता है जिन्हें पाने के लिए प्रयास चाहिए। दीप्तादि पद्धति में यह दुःखित है, आपकी कुंडली में राशि-स्वामी शत्रु: प्रयास और कुछ खिन्नता।

आपकी कुंडली के योग और दोष

# आपकी कुंडली के योग और दोष

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: योग आपकी कुंडली में बनी प्रतिभाओं का वर्णन करते हैं; वृषभ राशि के स्थिर चंद्र वाले परवाह करने वाले कर्क लग्न के व्यक्ति होने के नाते आप इनमें से कुछ अपने जीवन में पहले ही देख सकते हैं।

योग ग्रहों के परिभाषित संयोजन हैं; दोष पारंपरिक पीड़ा-संयोजन हैं। हर एक के साथ आपकी कुंडली में मिली सटीक स्थिति दी गई है। योग वह संभावना दिखाता है जो मुख्यतः उसे बनाने वाले ग्रहों की दशाओं में फलती है।

| संयोजन | प्रकार |
|---|---|
| बुधादित्य योग | योग |
| हंस योग (पंच महापुरुष) | योग |
| मालव्य योग (पंच महापुरुष) | योग |
| सुनफा योग | योग |
| वाशि योग | योग |
| सरस्वती योग | योग |
| योगकारक | योग |
| लक्ष्मी योग | योग |
| पर्वत योग | योग |
| ग्रहण दोष (पारंपरिक) | दोष / टिप्पणी |
| मांगलिक (कुज) स्थिति | दोष / टिप्पणी |

### इस कुंडली में पाए गए योग और दोष

- बुधादित्य योग — योग
- हंस योग (पंच महापुरुष) — योग
- मालव्य योग (पंच महापुरुष) — योग
- सुनफा योग — योग
- वाशि योग — योग
- सरस्वती योग — योग
- योगकारक — योग
- लक्ष्मी योग — योग
- पर्वत योग — योग
- ग्रहण दोष (पारंपरिक) — दोष / टिप्पणी
- मांगलिक (कुज) स्थिति — दोष / टिप्पणी

इस कुंडली में पाए गए योग और दोष

प्रत्येक कार्ड एक नामित योग है जो वास्तव में इस जन्म कुंडली में है। सोने की किनारी वाले कार्ड सहायक योग हैं; लाल किनारी वाले दोष हैं जो सावधानी माँगते हैं। नामित योग एक पारंपरिक पैटर्न है, फल की गारंटी नहीं। नीचे के नोट प्रत्येक को इस कुंडली के संदर्भ में समझाते हैं।

### ❖ उपस्थित योग

### ❖ बुधादित्य योग

सूर्य और बुध एक ही राशि में हैं।

बुद्धि, स्पष्ट वाणी और प्रशासनिक क्षमता। यह बहुत सामान्य है; बुध के अस्त न होने पर अधिक प्रबल।

यहाँ बुध अस्त है, इसलिए यह योग शांत, आंतरिक रूप में कार्य करता है।

### ❖ हंस योग (पंच महापुरुष)

गुरु प्रथम भाव में उच्च है, जो एक केंद्र है।

ज्ञान, नैतिकता, दूसरों से सम्मान और गुरु-सुलभ गरिमा।

### ❖ मालव्य योग (पंच महापुरुष)

शुक्र चतुर्थ भाव में स्वराशि है, जो एक केंद्र है।

आकर्षण, कलात्मक परिष्कार, सुख-सुविधाएँ और सौहार्दपूर्ण संबंध।

### ❖ सुनफा योग

चंद्र से दूसरे भाव में मंगल।

स्व-अर्जित संसाधन, बुद्धि और अपने प्रयास से बनी अच्छी प्रतिष्ठा।

### ❖ वाशि योग

सूर्य से बारहवें भाव में गुरु।

उदारता, कौशल और अधिकारियों से मान्यता।

### ❖ सरस्वती योग

गुरु, शुक्र और बुध केंद्र, त्रिकोण या द्वितीय भाव में हैं और गुरु सुस्थित है।

विद्या, वाक्पटुता, कलाएँ और ज्ञान के प्रति आदर।

### ❖ योगकारक

मंगल केंद्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी है (पंचम और दशम)।

ऐसा एकल ग्रह जो स्वयं राजयोग की क्षमता रखता है; इसकी दशाएँ परंपरा में महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

इसकी महादशा एक मुख्य अवधि है: मंगल (2025–2032)।

### ❖ लक्ष्मी योग

नवमेश गुरु बलवान और सुस्थित है।

भाग्य, कृपा और समृद्धि, जिसे परंपरा बड़ों और गुरुजनों के आशीर्वाद से जोड़ती है।

### ❖ पर्वत योग

केंद्रों में केवल शुभ ग्रह हैं।

उदारता, प्रतिष्ठा और स्थिर, समृद्ध जीवन।

### ❖ दोष और पारंपरिक टिप्पणियाँ

### ❖ ग्रहण दोष (पारंपरिक)

सूर्य केतु के साथ एक ही राशि में है (13.3° दूरी)।

लोक-परंपरा इसे ऐसे दौर से जोड़ती है जब स्वयं और पिता को लेकर स्पष्टता धुँधली हो; यह बहुत सामान्य है और किसी हानि की भविष्यवाणी नहीं।

### ❖ मांगलिक (कुज) स्थिति

मंगल लग्न और चंद्र से मांगलिक भाव में है।

यह केवल पारंपरिक विवाह-मिलान का कारक है; लगभग आधी कुंडलियाँ किसी न किसी नियम से इसमें आती हैं। परिहार: कोई नहीं।

> योग और दोष पारंपरिक संभावनाओं और प्रवृत्तियों का वर्णन करते हैं। इनमें से कोई भी गारंटी या दंड नहीं है, और किसी को "ठीक" करने के लिए कोई अनुष्ठान या ख़रीद आवश्यक नहीं।



## जैमिनी चर कारक

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: रोज़ के जीवन से आगे, यह अध्याय उस बारे में है जो आपको अर्थ देता है; वृषभ राशि के स्थिर चंद्र वाले परवाह करने वाले कर्क लग्न के व्यक्ति होने के नाते देखें कि कौन सी बातें सच लगती हैं।

जैमिनी पद्धति में सात ग्रहों को राशि के भीतर उनके अंशों के क्रम में रखा जाता है। हर भूमिका जीवन के एक भाग का वर्णन करती है।

| कारक | ग्रह | अंश | वर्णन |
|---|---|---|---|
| आत्मकारक | चंद्र | 26°27′ | आत्मा का मुख्य पाठ |
| अमात्यकारक | बुध | 25°45′ | करियर और परामर्श |
| भ्रातृकारक | मंगल | 21°39′ | भाई-बहन और साहस |
| मातृकारक | गुरु | 20°18′ | माता और भावनात्मक सुरक्षा |
| पुत्रकारक | शनि | 19°13′ | संतान और सृजन |
| ज्ञातिकारक | सूर्य | 18°11′ | बाधाएँ, प्रतिद्वंद्वी और उपचार |
| दारकारक | शुक्र | 1°59′ | जीवनसाथी और साझेदारी |

आपका आत्मकारक चंद्र है, जो आपके मन, भावनाओं, माता, घरेलू जीवन और संतोष की क्षमता का कारक है। इसकी नवांश राशि (कारकांश) सिंह है, इसलिए आत्मा का मार्ग, सिंह की गरिमा के साथ: स्वाभिमानी, उदार, प्रभावशाली और नेतृत्व को उत्सुक।

# विंशोत्तरी दशा: अवधियाँ और फल

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: यह आपकी कुंडली का कैलेंडर है; अगले एक-दो वर्ष की तारीख़ें चिह्नित करें और उनके हिसाब से योजना बनाएँ, जैसे परीक्षा या त्योहार के लिए बनाते हैं।

आपका विंशोत्तरी क्रम मंगल से आरंभ होता है, जो आपके जन्म-नक्षत्र मृगशिरा का स्वामी है; जन्म के समय उस दशा के 5.4 वर्ष शेष थे। वर्तमान अवधि को रेखांकित किया गया है।

विंशोत्तरी महादशा समय-रेखा

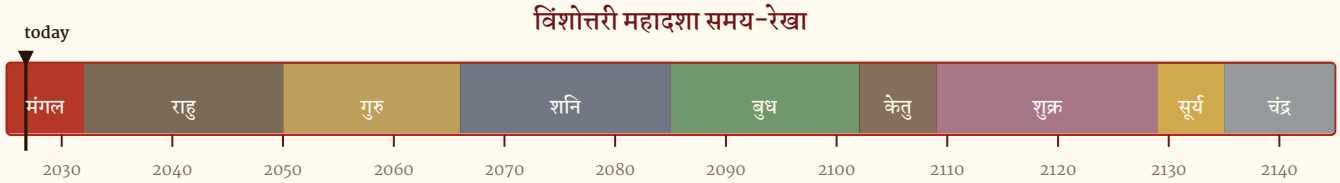


विंशोत्तरी महादशा समय-रेखा

प्रत्येक खंड जन्म से एक महादशा है। चिह्न आज की तिथि है। इसे पारंपरिक समय का मानचित्र मानें, घटनाओं की गारंटी नहीं।

| महादशा | से | तक | वर्ष | स्वामी स्थित |
|---|---|---|---|---|
| **मंगल** | **15 जनवरी 2025** | **15 जनवरी 2032** | **7.0** | **द्वादश भाव** |
| राहु | 15 जनवरी 2032 | 15 जनवरी 2050 | 18.0 | अष्टम भाव |
| गुरु | 15 जनवरी 2050 | 15 जनवरी 2066 | 16.0 | प्रथम भाव |
| शनि | 15 जनवरी 2066 | 14 जनवरी 2085 | 19.0 | नवम भाव |
| बुध | 14 जनवरी 2085 | 15 जनवरी 2102 | 17.0 | द्वितीय भाव |
| केतु | 15 जनवरी 2102 | 15 जनवरी 2109 | 7.0 | द्वितीय भाव |
| शुक्र | 15 जनवरी 2109 | 15 जनवरी 2129 | 20.0 | चतुर्थ भाव |

वर्तमान महादशा: अंतर्दशा समय-रेखा

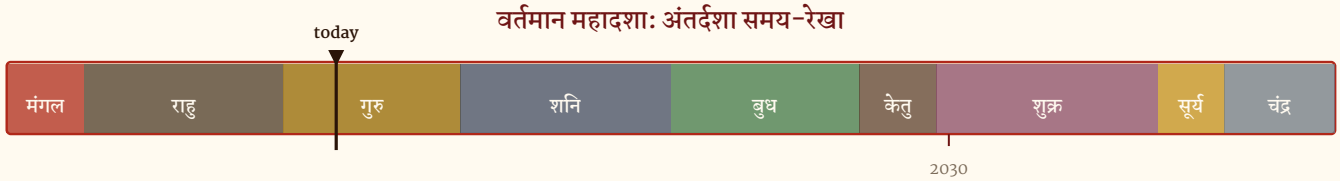


वर्तमान महादशा: अंतर्दशा समय-रेखा

यही महादशा अपनी अंतर्दशाओं में बँटी है। चिह्नित भाग अभी चल रही अंतर्दशा है।

### ❖ मंगल महादशा · 2025–2032

2025 से 2032 तक मंगल महादशा आपकी प्रेरणा, साहस, शारीरिक ऊर्जा, भाई-बहनों और प्रतिस्पर्धा की रुचि को अग्रभूमि में लाती है।

मंगल आपके द्वादश भाव में मिथुन राशि में है और शत्रु राशि में है, इसलिए इसके फलों के लिए अधिक प्रयास चाहिए, इसलिए व्यय और मोक्ष पर ज़ोर रहता है।

पंचम भाव और दशम भाव का स्वामी होने से यह संतान और बुद्धि; करियर और पद को भी सक्रिय करता है।

षड्बल में मंगल का 7 में से 7वाँ स्थान है और इसकी राशि में 5 बिंदु हैं।

मंगल से जुड़े योग: सुनफा योग और योगकारक; परंपरा के अनुसार ये इसी अवधि में फलते हैं।

### ❖ राहु महादशा · 2032–2050

2032 से 2050 तक राहु महादशा आपकी सांसारिक भूख, महत्वाकांक्षा और नए व विदेशी के प्रति आकर्षण को अग्रभूमि में लाती है।

राहु आपके अष्टम भाव में कुंभ राशि में है और छाया ग्रह है जो अपने राशि-स्वामी शनि के माध्यम से कार्य करता है, इसलिए रूपांतरण और विरासत पर ज़ोर रहता है।

### ❖ गुरु महादशा · 2050–2066

2050 से 2066 तक गुरु महादशा आपके ज्ञान, आस्था, गुरुजनों, संतान, धन और जीवन के अर्थ को अग्रभूमि में लाती है।

गुरु आपके प्रथम भाव में कर्क राशि में है और उच्च का है, इसलिए परंपरा में इसके फल प्रबल होते हैं, इसलिए स्वयं और स्वास्थ्य पर ज़ोर रहता है।

षष्ठ भाव और नवम भाव का स्वामी होने से यह सेवा और बाधाएँ; भाग्य और गुरु को भी सक्रिय करता है।

षड्बल में गुरु का 7 में से 3वाँ स्थान है और इसकी राशि में 5 बिंदु हैं।

गुरु से जुड़े योग: हंस योग (पंच महापुरुष), वाशि योग और लक्ष्मी योग; परंपरा के अनुसार ये इसी अवधि में फलते हैं।

### ❖ शनि महादशा · 2066–2085

2066 से 2085 तक शनि महादशा आपके अनुशासन, सहनशक्ति, कर्म-निष्ठा, भय और दीर्घकालिक कर्म को अग्रभूमि में लाती है।

शनि आपके नवम भाव में मीन राशि में है और सम राशि में है, इसलिए भाग्य और गुरु पर ज़ोर रहता है।

सप्तम भाव और अष्टम भाव का स्वामी होने से यह विवाह और साझेदार; रूपांतरण और विरासत को भी सक्रिय करता है।

षड्बल में शनि का 7 में से 6वाँ स्थान है और इसकी राशि में 5 बिंदु हैं।

### ❖ अगले 20 वर्षों की अंतर्दशाएँ, एक-एक कर

हर अंतर्दशा महादशा-स्वामी और अंतर्दशा-स्वामी को जोड़ती है। फल में उनकी मित्रता, आपसी दूरी, अंतर्दशा-स्वामी का भाव और बल, उसके स्वामित्व वाले भाव, और अवधि के मध्य में गुरु व शनि का गोचर देखा गया है।

| अवधि | से | तक |
|---|---|---|
| **मंगल / गुरु** | **1 जुलाई 2026** | **7 जून 2027** |
| मंगल / शनि | 7 जून 2027 | 16 जुलाई 2028 |
| मंगल / बुध | 16 जुलाई 2028 | 13 जुलाई 2029 |
| मंगल / केतु | 13 जुलाई 2029 | 9 दिसंबर 2029 |
| मंगल / शुक्र | 9 दिसंबर 2029 | 8 फ़रवरी 2031 |
| मंगल / सूर्य | 8 फ़रवरी 2031 | 16 जून 2031 |

| अवधि | से | तक |
|---|---|---|
| मंगल / चंद्र | 16 जून 2031 | 15 जनवरी 2032 |
| राहु / राहु | 15 जनवरी 2032 | 28 सितंबर 2034 |
| राहु / गुरु | 28 सितंबर 2034 | 20 फ़रवरी 2037 |
| राहु / शनि | 20 फ़रवरी 2037 | 28 दिसंबर 2039 |
| राहु / बुध | 28 दिसंबर 2039 | 16 जुलाई 2042 |
| राहु / केतु | 16 जुलाई 2042 | 4 अगस्त 2043 |
| राहु / शुक्र | 4 अगस्त 2043 | 4 अगस्त 2046 |
| राहु / सूर्य | 4 अगस्त 2046 | 28 जून 2047 |

### ❖ मंगल / गुरु · जुलाई 2026 – जून 2027

मंगल और गुरु नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। गुरु और मंगल एक-दूसरे से दूसरे/बारहवें हैं, जो लाभ और व्यय को जोड़ता है। गुरु आपके प्रथम भाव में है, इसलिए स्वयं और स्वास्थ्य आगे आते हैं; यह उच्च का है, इसलिए परंपरा में इसके फल प्रबल होते हैं। गुरु सेवा और बाधाएँ; भाग्य और गुरु का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके चतुर्थ भाव में (मिश्रित) और शनि एकादश भाव में (सहायक) गोचर करता है। गुरु आश्लेषा में, पाद 2, प्रथम भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः स्वयं और स्वास्थ्य के माध्यम से पढ़ा जाता है। यह स्थिति-पाठ है, उप-अवधि में किसी विशेष घटना का पूर्वानुमान नहीं। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: सीखें, सिखाएँ, मार्गदर्शक खोजें और दीर्घकालिक वृद्धि में निवेश करें।

### ❖ मंगल / शनि · जून 2027 – जुलाई 2028

मंगल और शनि एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर शनि की स्थिति से तय होता है। शनि, मंगल से केंद्र में है, जो ठोस कार्य में सहायक है। शनि आपके नवम भाव में है, इसलिए भाग्य और गुरु आगे आते हैं; यह सम राशि में है। शनि विवाह और साझेदार; रूपांतरण और विरासत का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके पंचम भाव में (सहायक) और शनि एकादश भाव में (सहायक) गोचर करता है। शनि रेवती में, पाद 1, नवम भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः भाग्य और गुरु के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: स्थिर कार्य के प्रति प्रतिबद्ध रहें और दायित्वों को सरल करें।

### ❖ मंगल / बुध · जुलाई 2028 – जुलाई 2029

मंगल और बुध नैसर्गिक शत्रु हैं, इसलिए दोनों ग्रहों के विषयों में कुछ खिंचाव की अपेक्षा रखें। बुध, मंगल से 3 राशि दूर है। बुध आपके द्वितीय भाव में है, इसलिए धन और परिवार आगे आते हैं; यह मित्र राशि में है। बुध पराक्रम और भाई-बहन; व्यय और मोक्ष का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके षष्ठ भाव में (मिश्रित) और शनि द्वादश भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। बुध पूर्वा फाल्गुनी में, पाद 4, द्वितीय भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः धन और परिवार के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: अध्ययन, लेखन, वार्ता और व्यवस्था करें।

### ❖ मंगल / केतु · जुलाई 2029 – दिसंबर 2029

मंगल और केतु एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर केतु की स्थिति से तय होता है। केतु, मंगल से 3 राशि दूर है। केतु आपके द्वितीय भाव में है, इसलिए धन और परिवार आगे आते हैं; यह छाया ग्रह है जो अपने राशि-स्वामी सूर्य के माध्यम से कार्य करता है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके षष्ठ भाव में (मिश्रित) और शनि प्रथम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। केतु मघा में, पाद 2, द्वितीय भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः धन और परिवार के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: पुराने काम पूरे करें, शोध करें और भीतर की ओर मुड़ें।

### ❖ मंगल / शुक्र · दिसंबर 2029 – फ़रवरी 2031

मंगल और शुक्र एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर शुक्र की स्थिति से तय होता है। शुक्र, मंगल से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। शुक्र आपके चतुर्थ भाव में है, इसलिए घर और माता आगे आते हैं; यह स्वराशि में है, इसलिए यह आत्मविश्वास से फल

देता है। शुक्र घर और माता; लाभ और नेटवर्क का भी स्वामी है। शुक्र चित्रा में, पाद 3, चतुर्थ भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः घर और माता के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: संबंधों, सुख-सुविधा और रचनात्मक कार्य को पोषित करें।

### ❖ मंगल / सूर्य · फ़रवरी 2031 – जून 2031

मंगल और सूर्य नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। सूर्य, मंगल से 3 राशि दूर है। सूर्य आपके द्वितीय भाव में है, इसलिए धन और परिवार आगे आते हैं; यह स्वराशि में है, इसलिए यह आत्मविश्वास से फल देता है। सूर्य धन और परिवार का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके अष्टम भाव में (मिश्रित) और शनि प्रथम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। सूर्य पूर्वा फाल्गुनी में, पाद 2, द्वितीय भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः धन और परिवार के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: ज़िम्मेदारी लें और दिखने वाली भूमिकाओं में आगे आएँ।

### ❖ मंगल / चंद्र · जून 2031 – जनवरी 2032

मंगल और चंद्र नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। चंद्र और मंगल एक-दूसरे से दूसरे/बारहवें हैं, जो लाभ और व्यय को जोड़ता है। चंद्र आपके एकादश भाव में है, इसलिए लाभ और नेटवर्क आगे आते हैं; यह उच्च का है, इसलिए परंपरा में इसके फल प्रबल होते हैं। चंद्र स्वयं और स्वास्थ्य का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके सप्तम भाव में (सहायक) और शनि प्रथम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। चंद्र मृगशिरा में, पाद 1, एकादश भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः लाभ और नेटवर्क के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: विश्राम और परिवार के समय की रक्षा करें और अंतर्ज्ञान पर चलें।

### ❖ राहु / राहु · जनवरी 2032 – सितंबर 2034

यह महादशा की पहली अंतर्दशा है, जब राहु के विषय अपने शुद्धतम रूप में आते हैं। राहु आपके अष्टम भाव में है, इसलिए रूपांतरण और विरासत आगे आते हैं; यह छाया ग्रह है जो अपने राशि-स्वामी शनि के माध्यम से कार्य करता है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके दशम भाव में (मिश्रित) और शनि द्वितीय भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। राहु धनिष्ठा में, पाद 4, अष्टम भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः रूपांतरण और विरासत के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: तथ्यों की सावधानी से जाँच करते हुए नए क्षेत्र खोजें।

### ❖ राहु / गुरु · सितंबर 2034 – फ़रवरी 2037

राहु और गुरु एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर गुरु की स्थिति से तय होता है। गुरु और राहु एक-दूसरे से छठे/आठवें हैं, परंपरा में चुनौतीपूर्ण कोण जो सावधानी का फल देता है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके द्वादश भाव में (मिश्रित) और शनि तृतीय भाव में (सहायक) गोचर करता है।

### ❖ राहु / शनि · फ़रवरी 2037 – दिसंबर 2039

राहु और शनि एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर शनि की स्थिति से तय होता है। शनि और राहु एक-दूसरे से दूसरे/बारहवें हैं, जो लाभ और व्यय को जोड़ता है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके तृतीय भाव में (मिश्रित) और शनि चतुर्थ भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

### ❖ राहु / बुध · दिसंबर 2039 – जुलाई 2042

राहु और बुध एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर बुध की स्थिति से तय होता है। बुध, राहु से केंद्र में है, जो ठोस कार्य में सहायक है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके षष्ठ भाव में (मिश्रित) और शनि पंचम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

### ❖ राहु / केतु · जुलाई 2042 – अगस्त 2043

राहु और केतु एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर केतु की स्थिति से तय होता है। केतु, राहु से केंद्र में है, जो ठोस कार्य में सहायक है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके सप्तम भाव में (सहायक) और शनि षष्ठ भाव में (सहायक) गोचर करता है।

### ❖ राहु / शुक्र · अगस्त 2043 – अगस्त 2046

राहु और शुक्र एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर शुक्र की स्थिति से तय होता है। शुक्र, राहु से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके नवम भाव में (सहायक) और शनि सप्तम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

### ❖ राहु / सूर्य · अगस्त 2046 – जून 2047

राहु और सूर्य एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर सूर्य की स्थिति से तय होता है। सूर्य, राहु से केंद्र में है, जो ठोस कार्य में सहायक है। सूर्य धन और परिवार का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके एकादश भाव में (सहायक) और शनि अष्टम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

### ❖ मंगल / गुरु के भीतर प्रत्यंतर दशाएँ

| प्रत्यंतर | से | तक | केंद्र-विषय |
|---|---|---|---|
| गुरु | 1 जुलाई 2026 | 16 अगस्त 2026 | प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य |
| शनि | 16 अगस्त 2026 | 9 अक्टूबर 2026 | नवम भाव: भाग्य और गुरु |
| **बुध** | **9 अक्टूबर 2026** | **26 नवंबर 2026** | **द्वितीय भाव: धन और परिवार** |
| केतु | 26 नवंबर 2026 | 16 दिसंबर 2026 | द्वितीय भाव: धन और परिवार |
| शुक्र | 16 दिसंबर 2026 | 11 फ़रवरी 2027 | चतुर्थ भाव: घर और माता |
| सूर्य | 11 फ़रवरी 2027 | 28 फ़रवरी 2027 | द्वितीय भाव: धन और परिवार |
| चंद्र | 28 फ़रवरी 2027 | 28 मार्च 2027 | एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क |
| मंगल | 28 मार्च 2027 | 17 अप्रैल 2027 | द्वादश भाव: व्यय और मोक्ष |
| राहु | 17 अप्रैल 2027 | 7 जून 2027 | अष्टम भाव: रूपांतरण और विरासत |

### ❖ मंगल / शनि के भीतर प्रत्यंतर दशाएँ

| प्रत्यंतर | से | तक | केंद्र-विषय |
|---|---|---|---|
| शनि | 7 जून 2027 | 10 अगस्त 2027 | नवम भाव: भाग्य और गुरु |
| बुध | 10 अगस्त 2027 | 7 अक्टूबर 2027 | द्वितीय भाव: धन और परिवार |
| केतु | 7 अक्टूबर 2027 | 30 अक्टूबर 2027 | द्वितीय भाव: धन और परिवार |
| शुक्र | 30 अक्टूबर 2027 | 6 जनवरी 2028 | चतुर्थ भाव: घर और माता |
| सूर्य | 6 जनवरी 2028 | 26 जनवरी 2028 | द्वितीय भाव: धन और परिवार |
| चंद्र | 26 जनवरी 2028 | 29 फ़रवरी 2028 | एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क |
| मंगल | 29 फ़रवरी 2028 | 23 मार्च 2028 | द्वादश भाव: व्यय और मोक्ष |
| राहु | 23 मार्च 2028 | 23 मई 2028 | अष्टम भाव: रूपांतरण और विरासत |
| गुरु | 23 मई 2028 | 16 जुलाई 2028 | प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य |

# जीवन भर की विंशोत्तरी दशा: सभी महादशाएँ और अंतर्दशाएँ

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: अवधियाँ घटनाएँ नहीं बनातीं, पर बताती हैं कि कब कौन से विषय अधिक दबाव डालते हैं; आप चुनौती, गति और आगे बढ़कर नेतृत्व पसंद करते हैं, इसलिए देखें कि कौन सी तारीख़ें प्रयास की हैं और कौन सी तैयारी की।

पारंपरिक जन्म पत्रिका में जीवन की हर महादशा उसकी नौ अंतर्दशाओं सहित लिखी जाती है। नीचे हर अंतर्दशा का आकलन आपकी अपनी कुंडली से किया गया है: उसका स्वामी महादशा-स्वामी का नैसर्गिक मित्र है या शत्रु, दोनों एक-दूसरे से कितनी दूरी पर हैं (केंद्र और त्रिकोण की दूरी सहायक, छठी, आठवीं और बारहवीं दूरी कठिन), और अंतर्दशा-स्वामी की अपनी गरिमा। सहायक अवधियाँ नए काम शुरू करने के लिए अच्छी हैं; परिश्रम-साध्य अवधियों में धैर्य, तैयारी और नियमितता फल देती है। चालू अंतर्दशा रेखांकित है।

## ❖ मंगल महादशा · 5 सितंबर 2026 – 15 जनवरी 2032 (आयु 0–5)

मंगल आपके द्वादश भाव में मिथुन राशि में (शत्रु राशि) है। यह पंचम और दशम भावों का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: गुरु, शुक्र और सूर्य। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: बुध।

| अंतर्दशा | से | तक | स्थिति | महादशा-स्वामी से | संबंध | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| गुरु | 5 सितंबर 2026 | 7 जून 2027 | प्रथम भाव | द्वितीय | मित्र | सहायक |
| शनि | 7 जून 2027 | 16 जुलाई 2028 | नवम भाव | दशम | सम | मिश्रित |
| बुध | 16 जुलाई 2028 | 13 जुलाई 2029 | द्वितीय भाव | तृतीय | शत्रु | परिश्रम-साध्य |
| केतु | 13 जुलाई 2029 | 9 दिसंबर 2029 | द्वितीय भाव | तृतीय | सम | मिश्रित |
| शुक्र | 9 दिसंबर 2029 | 8 फ़रवरी 2031 | चतुर्थ भाव | पंचम | सम | सहायक |
| सूर्य | 8 फ़रवरी 2031 | 16 जून 2031 | द्वितीय भाव | तृतीय | मित्र | सहायक |
| चंद्र | 16 जून 2031 | 15 जनवरी 2032 | एकादश भाव | द्वादश | मित्र | मिश्रित |

## ❖ राहु महादशा · 15 जनवरी 2032 – 15 जनवरी 2050 (आयु 5–23)

राहु आपके अष्टम भाव में कुंभ राशि में (छाया ग्रह) है। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शुक्र, सूर्य और चंद्र। यहाँ कोई अंतर्दशा स्पष्ट रूप से कठिन नहीं है।

| अंतर्दशा | से | तक | स्थिति | महादशा-स्वामी से | संबंध | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| राहु | 15 जनवरी 2032 | 28 सितंबर 2034 | अष्टम भाव | प्रथम | स्वयं की | मिश्रित |
| गुरु | 28 सितंबर 2034 | 20 फ़रवरी 2037 | प्रथम भाव | षष्ठ | सम | मिश्रित |
| शनि | 20 फ़रवरी 2037 | 28 दिसंबर 2039 | नवम भाव | द्वितीय | सम | मिश्रित |
| बुध | 28 दिसंबर 2039 | 16 जुलाई 2042 | द्वितीय भाव | सप्तम | सम | मिश्रित |
| केतु | 16 जुलाई 2042 | 4 अगस्त 2043 | द्वितीय भाव | सप्तम | सम | मिश्रित |
| शुक्र | 4 अगस्त 2043 | 4 अगस्त 2046 | चतुर्थ भाव | नवम | सम | सहायक |
| सूर्य | 4 अगस्त 2046 | 28 जून 2047 | द्वितीय भाव | सप्तम | सम | सहायक |
| चंद्र | 28 जून 2047 | 27 दिसंबर 2048 | एकादश भाव | चतुर्थ | सम | सहायक |
| मंगल | 27 दिसंबर 2048 | 15 जनवरी 2050 | द्वादश भाव | पंचम | सम | मिश्रित |

## ❖ गुरु महादशा · 15 जनवरी 2050 – 15 जनवरी 2066 (आयु 23–39)

गुरु आपके प्रथम भाव में कर्क राशि में (उच्च) है। यह षष्ठ और नवम भावों का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: सूर्य और चंद्र। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: बुध और राहु।

| अंतर्दशा | से | तक | स्थिति | महादशा-स्वामी से | संबंध | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| गुरु | 15 जनवरी 2050 | 4 मार्च 2052 | प्रथम भाव | प्रथम | स्वयं की | सहायक |
| शनि | 4 मार्च 2052 | 15 सितंबर 2054 | नवम भाव | नवम | सम | मिश्रित |
| बुध | 15 सितंबर 2054 | 21 दिसंबर 2056 | द्वितीय भाव | द्वितीय | शत्रु | परिश्रम-साध्य |
| केतु | 21 दिसंबर 2056 | 27 नवंबर 2057 | द्वितीय भाव | द्वितीय | सम | मिश्रित |
| शुक्र | 27 नवंबर 2057 | 28 जुलाई 2060 | चतुर्थ भाव | चतुर्थ | शत्रु | मिश्रित |
| सूर्य | 28 जुलाई 2060 | 16 मई 2061 | द्वितीय भाव | द्वितीय | मित्र | सहायक |
| चंद्र | 16 मई 2061 | 15 सितंबर 2062 | एकादश भाव | एकादश | मित्र | सहायक |
| मंगल | 15 सितंबर 2062 | 22 अगस्त 2063 | द्वादश भाव | द्वादश | मित्र | मिश्रित |
| राहु | 22 अगस्त 2063 | 15 जनवरी 2066 | अष्टम भाव | अष्टम | सम | परिश्रम-साध्य |

## ❖ शनि महादशा · 15 जनवरी 2066 – 14 जनवरी 2085 (आयु 39–58)

शनि आपके नवम भाव में मीन राशि में (सम राशि) है। यह सप्तम और अष्टम भावों का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: गुरु। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: केतु, सूर्य और राहु।

| अंतर्दशा | से | तक | स्थिति | महादशा-स्वामी से | संबंध | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 15 जनवरी 2066 | 17 जनवरी 2069 | नवम भाव | प्रथम | स्वयं की | मिश्रित |
| बुध | 17 जनवरी 2069 | 28 सितंबर 2071 | द्वितीय भाव | षष्ठ | मित्र | मिश्रित |
| केतु | 28 सितंबर 2071 | 5 नवंबर 2072 | द्वितीय भाव | षष्ठ | सम | परिश्रम-साध्य |
| शुक्र | 5 नवंबर 2072 | 6 जनवरी 2076 | चतुर्थ भाव | अष्टम | मित्र | मिश्रित |
| सूर्य | 6 जनवरी 2076 | 18 दिसंबर 2076 | द्वितीय भाव | षष्ठ | शत्रु | परिश्रम-साध्य |
| चंद्र | 18 दिसंबर 2076 | 19 जुलाई 2078 | एकादश भाव | तृतीय | शत्रु | मिश्रित |
| मंगल | 19 जुलाई 2078 | 28 अगस्त 2079 | द्वादश भाव | चतुर्थ | शत्रु | मिश्रित |
| राहु | 28 अगस्त 2079 | 4 जुलाई 2082 | अष्टम भाव | द्वादश | सम | परिश्रम-साध्य |
| गुरु | 4 जुलाई 2082 | 14 जनवरी 2085 | प्रथम भाव | पंचम | सम | सहायक |

## ❖ बुध महादशा · 14 जनवरी 2085 – 15 जनवरी 2102 (आयु 58–75)

बुध आपके द्वितीय भाव में सिंह राशि में (मित्र राशि) है। यह तृतीय और द्वादश भावों का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शुक्र और सूर्य। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: शनि।

| अंतर्दशा | से | तक | स्थिति | महादशा-स्वामी से | संबंध | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बुध | 14 जनवरी 2085 | 13 जून 2087 | द्वितीय भाव | प्रथम | स्वयं की | मिश्रित |
| केतु | 13 जून 2087 | 9 जून 2088 | द्वितीय भाव | प्रथम | सम | मिश्रित |
| शुक्र | 9 जून 2088 | 10 अप्रैल 2091 | चतुर्थ भाव | तृतीय | मित्र | सहायक |
| सूर्य | 10 अप्रैल 2091 | 14 फ़रवरी 2092 | द्वितीय भाव | प्रथम | मित्र | सहायक |
| चंद्र | 14 फ़रवरी 2092 | 16 जुलाई 2093 | एकादश भाव | दशम | शत्रु | मिश्रित |
| मंगल | 16 जुलाई 2093 | 13 जुलाई 2094 | द्वादश भाव | एकादश | सम | मिश्रित |
| राहु | 13 जुलाई 2094 | 29 जनवरी 2097 | अष्टम भाव | सप्तम | सम | मिश्रित |
| गुरु | 29 जनवरी 2097 | 7 मई 2099 | प्रथम भाव | द्वादश | सम | मिश्रित |
| शनि | 7 मई 2099 | 15 जनवरी 2102 | नवम भाव | अष्टम | सम | परिश्रम-साध्य |

### ❖ केतु महादशा · 15 जनवरी 2102 – 15 जनवरी 2109 (आयु 75–82)

केतु आपके द्वितीय भाव में सिंह राशि में (छाया ग्रह) है। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: सूर्य और चंद्र। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: शनि।

| अंतर्दशा | से | तक | स्थिति | महादशा-स्वामी से | संबंध | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| केतु | 15 जनवरी 2102 | 14 जून 2102 | द्वितीय भाव | प्रथम | स्वयं की | मिश्रित |
| शुक्र | 14 जून 2102 | 14 अगस्त 2103 | चतुर्थ भाव | तृतीय | सम | मिश्रित |
| सूर्य | 14 अगस्त 2103 | 19 दिसंबर 2103 | द्वितीय भाव | प्रथम | सम | सहायक |
| चंद्र | 19 दिसंबर 2103 | 20 जुलाई 2104 | एकादश भाव | दशम | सम | सहायक |
| मंगल | 20 जुलाई 2104 | 16 दिसंबर 2104 | द्वादश भाव | एकादश | सम | मिश्रित |
| राहु | 16 दिसंबर 2104 | 3 जनवरी 2106 | अष्टम भाव | सप्तम | सम | मिश्रित |
| गुरु | 3 जनवरी 2106 | 10 दिसंबर 2106 | प्रथम भाव | द्वादश | सम | मिश्रित |
| शनि | 10 दिसंबर 2106 | 19 जनवरी 2108 | नवम भाव | अष्टम | सम | परिश्रम-साध्य |
| बुध | 19 जनवरी 2108 | 15 जनवरी 2109 | द्वितीय भाव | प्रथम | सम | मिश्रित |

### ❖ शुक्र महादशा · 15 जनवरी 2109 – 17 मार्च 2119 (आयु 82–92)

शुक्र आपके चतुर्थ भाव में तुला राशि में (स्वराशि) है। यह चतुर्थ और एकादश भावों का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। यहाँ कोई अंतर्दशा स्पष्ट रूप से सहायक नहीं आती, इसलिए समय से अधिक निरंतर प्रयास का महत्व है। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: चंद्र।

| अंतर्दशा | से | तक | स्थिति | महादशा-स्वामी से | संबंध | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शुक्र | 15 जनवरी 2109 | 17 मई 2112 | चतुर्थ भाव | प्रथम | स्वयं की | सहायक |
| सूर्य | 17 मई 2112 | 17 मई 2113 | द्वितीय भाव | एकादश | शत्रु | मिश्रित |
| चंद्र | 17 मई 2113 | 16 जनवरी 2115 | एकादश भाव | अष्टम | शत्रु | परिश्रम-साध्य |
| मंगल | 16 जनवरी 2115 | 17 मार्च 2116 | द्वादश भाव | नवम | सम | मिश्रित |
| राहु | 17 मार्च 2116 | 17 मार्च 2119 | अष्टम भाव | पंचम | सम | मिश्रित |

# प्रत्यंतर दशा सारणी: अगले 3 वर्ष

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: अगर कभी लगा हो कि किसी वर्ष का "एक विषय" था, तो कुंडली का यही हिस्सा उसका वर्णन करता है; पहले वर्तमान और अगली प्रविष्टियाँ पढ़ें।

प्रत्यंतर दशा विंशोत्तरी समय का तीसरा स्तर है, जो कुछ दिनों से कुछ महीनों तक चलती है। नीचे की सारणियाँ अगले 3 वर्षों में चलने वाली हर उस अंतर्दशा को दिखाती हैं जो दशा अध्याय में दी गई दो सारणियों के बाद आती है। हर प्रत्यंतर का आकलन ऊपर की तरह उसके अंतर्दशा-स्वामी के सापेक्ष किया गया है, और केंद्र-विषय वह भाव है जिसमें प्रत्यंतर-स्वामी आपकी कुंडली में बैठा है।

## ❖ मंगल / बुध के भीतर प्रत्यंतर दशाएँ · जुलाई 2028 – जुलाई 2029

श्रेष्ठ समय: शुक्र (सितंबर 2028) और सूर्य (नवंबर 2028)। सावधानी से चलें: शनि (मई 2029)।

| प्रत्यंतर | से | तक | केंद्र-विषय | स्वर |
|---|---|---|---|---|
| बुध | 16 जुलाई 2028 | 5 सितंबर 2028 | द्वितीय भाव: धन और परिवार | मिश्रित |
| केतु | 5 सितंबर 2028 | 26 सितंबर 2028 | द्वितीय भाव: धन और परिवार | मिश्रित |
| शुक्र | 26 सितंबर 2028 | 26 नवंबर 2028 | चतुर्थ भाव: घर और माता | सहायक |
| सूर्य | 26 नवंबर 2028 | 14 दिसंबर 2028 | द्वितीय भाव: धन और परिवार | सहायक |
| चंद्र | 14 दिसंबर 2028 | 13 जनवरी 2029 | एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क | मिश्रित |
| मंगल | 13 जनवरी 2029 | 3 फ़रवरी 2029 | द्वादश भाव: व्यय और मोक्ष | मिश्रित |
| राहु | 3 फ़रवरी 2029 | 30 मार्च 2029 | अष्टम भाव: रूपांतरण और विरासत | मिश्रित |
| गुरु | 30 मार्च 2029 | 17 मई 2029 | प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य | मिश्रित |
| शनि | 17 मई 2029 | 13 जुलाई 2029 | नवम भाव: भाग्य और गुरु | परिश्रम-साध्य |

## ❖ मंगल / केतु के भीतर प्रत्यंतर दशाएँ · जुलाई 2029 – दिसंबर 2029

श्रेष्ठ समय: सूर्य (अगस्त 2029) और चंद्र (अगस्त 2029)। सावधानी से चलें: शनि (अक्टूबर 2029)।

| प्रत्यंतर | से | तक | केंद्र-विषय | स्वर |
|---|---|---|---|---|
| केतु | 13 जुलाई 2029 | 22 जुलाई 2029 | द्वितीय भाव: धन और परिवार | मिश्रित |
| शुक्र | 22 जुलाई 2029 | 16 अगस्त 2029 | चतुर्थ भाव: घर और माता | मिश्रित |
| सूर्य | 16 अगस्त 2029 | 23 अगस्त 2029 | द्वितीय भाव: धन और परिवार | सहायक |
| चंद्र | 23 अगस्त 2029 | 5 सितंबर 2029 | एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क | सहायक |
| मंगल | 5 सितंबर 2029 | 13 सितंबर 2029 | द्वादश भाव: व्यय और मोक्ष | मिश्रित |
| राहु | 13 सितंबर 2029 | 6 अक्टूबर 2029 | अष्टम भाव: रूपांतरण और विरासत | मिश्रित |
| गुरु | 6 अक्टूबर 2029 | 26 अक्टूबर 2029 | प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य | मिश्रित |
| शनि | 26 अक्टूबर 2029 | 18 नवंबर 2029 | नवम भाव: भाग्य और गुरु | परिश्रम-साध्य |
| बुध | 18 नवंबर 2029 | 9 दिसंबर 2029 | द्वितीय भाव: धन और परिवार | मिश्रित |

# योगिनी दशा

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: आप तनाव में अड़कर और मेहनत करने लगते हैं, इसलिए पहले से जानना मदद करता है कि कौन से महीने भारी लग सकते हैं, ताकि आप तब अपने आराम और दिनचर्या की रक्षा कर सकें।

योगिनी दशा दूसरी पारंपरिक समय-पद्धति है, जिसे प्रायः विंशोत्तरी के साथ देखा जाता है। इसकी आठ योगिनियाँ, प्रत्येक एक ग्रह से जुड़ी, 36 वर्ष के चक्र में 1 से 8 वर्ष तक चलती हैं, जो जन्म-नक्षत्र से आरंभ होता है। आपका क्रम संकटा (राहु) से आरंभ हुआ, और जन्म के समय इसके 6.1 वर्ष शेष थे।

| योगिनी | ग्रह | से | तक | वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| **संकटा** | **राहु** | **5 सितंबर 2026** | **21 अक्टूबर 2032** | **6.1** |
| मंगला | चंद्र | 21 अक्टूबर 2032 | 21 अक्टूबर 2033 | 1.0 |
| पिंगला | सूर्य | 21 अक्टूबर 2033 | 22 अक्टूबर 2035 | 2.0 |
| धान्या | गुरु | 22 अक्टूबर 2035 | 22 अक्टूबर 2038 | 3.0 |
| भ्रामरी | मंगल | 22 अक्टूबर 2038 | 22 अक्टूबर 2042 | 4.0 |
| भद्रिका | बुध | 22 अक्टूबर 2042 | 22 अक्टूबर 2047 | 5.0 |
| उल्का | शनि | 22 अक्टूबर 2047 | 21 अक्टूबर 2053 | 6.0 |
| सिद्धा | शुक्र | 21 अक्टूबर 2053 | 21 अक्टूबर 2060 | 7.0 |
| संकटा | राहु | 21 अक्टूबर 2060 | 21 अक्टूबर 2068 | 8.0 |
| मंगला | चंद्र | 21 अक्टूबर 2068 | 21 अक्टूबर 2069 | 1.0 |
| पिंगला | सूर्य | 21 अक्टूबर 2069 | 22 अक्टूबर 2071 | 2.0 |
| धान्या | गुरु | 22 अक्टूबर 2071 | 21 अक्टूबर 2074 | 3.0 |
| भ्रामरी | मंगल | 21 अक्टूबर 2074 | 21 अक्टूबर 2078 | 4.0 |
| भद्रिका | बुध | 21 अक्टूबर 2078 | 22 अक्टूबर 2083 | 5.0 |
| उल्का | शनि | 22 अक्टूबर 2083 | 21 अक्टूबर 2089 | 6.0 |
| सिद्धा | शुक्र | 21 अक्टूबर 2089 | 21 अक्टूबर 2096 | 7.0 |
| संकटा | राहु | 21 अक्टूबर 2096 | 22 अक्टूबर 2104 | 8.0 |
| मंगला | चंद्र | 22 अक्टूबर 2104 | 22 अक्टूबर 2105 | 1.0 |
| पिंगला | सूर्य | 22 अक्टूबर 2105 | 22 अक्टूबर 2107 | 2.0 |
| धान्या | गुरु | 22 अक्टूबर 2107 | 22 अक्टूबर 2110 | 3.0 |
| भ्रामरी | मंगल | 22 अक्टूबर 2110 | 22 अक्टूबर 2114 | 4.0 |
| भद्रिका | बुध | 22 अक्टूबर 2114 | 22 अक्टूबर 2119 | 5.0 |

### ❖ संकटा (राहु) · सितंबर 2026 – अक्टूबर 2032

परंपरा में यह अवधि इन बातों से जुड़ी है: परीक्षा भरी परिस्थितियाँ और अचानक बदलाव; धैर्य और विवेक रक्षा करते हैं। इसका ग्रह राहु आपके अष्टम भाव में है (छाया ग्रह), इसलिए ये विषय रूपांतरण और विरासत के माध्यम से प्रकट होते हैं।

इसी समय विंशोत्तरी में मंगल/केतु चल रही है; दोनों को साथ पढ़ें: विंशोत्तरी मुख्य कथा दिखाती है, योगिनी उसकी पृष्ठभूमि का स्वर।

### ❖ मंगला (चंद्र) · अक्टूबर 2032 – अक्टूबर 2033

परंपरा में यह अवधि इन बातों से जुड़ी है: शुभ आरंभ, भावनात्मक सहजता और परिवार व स्त्रियों से सहयोग। इसका ग्रह चंद्र आपके एकादश भाव में है (उच्च), इसलिए ये विषय लाभ और नेटवर्क के माध्यम से प्रकट होते हैं।

इसी समय विंशोत्तरी में राहु/राहु चल रही है; दोनों को साथ पढ़ें: विंशोत्तरी मुख्य कथा दिखाती है, योगिनी उसकी पृष्ठभूमि का स्वर।

### ❖ पिंगला (सूर्य) · अक्टूबर 2033 – अक्टूबर 2035

परंपरा में यह अवधि इन बातों से जुड़ी है: महत्वाकांक्षा, अधिकार और संबंधों में कुछ उष्णता; स्वास्थ्य का ध्यान रखें। इसका ग्रह सूर्य आपके द्वितीय भाव में है (स्वराशि), इसलिए ये विषय धन और परिवार के माध्यम से प्रकट होते हैं।

इसी समय विंशोत्तरी में राहु/गुरु चल रही है; दोनों को साथ पढ़ें: विंशोत्तरी मुख्य कथा दिखाती है, योगिनी उसकी पृष्ठभूमि का स्वर।

### ❖ धान्या (गुरु) · अक्टूबर 2035 – अक्टूबर 2038

परंपरा में यह अवधि इन बातों से जुड़ी है: समृद्धि, विद्या, आशीर्वाद और अच्छे परामर्श से वृद्धि। इसका ग्रह गुरु आपके प्रथम भाव में है (उच्च), इसलिए ये विषय स्वयं और स्वास्थ्य के माध्यम से प्रकट होते हैं।

इसी समय विंशोत्तरी में राहु/शनि चल रही है; दोनों को साथ पढ़ें: विंशोत्तरी मुख्य कथा दिखाती है, योगिनी उसकी पृष्ठभूमि का स्वर।



## गोचर समय-रेखा: अगले 24 महीने

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: इसे तय घटनाओं की भविष्यवाणी नहीं, योजना का सहारा मानें; सबसे उपयोगी प्रविष्टियाँ वे हैं जो अभी और अगले कुछ वर्षों में चल रही हैं।

यह समय-रेखा अक्टूबर 2026 से अक्टूबर 2028 तक आपकी राशियों में शनि, गुरु, राहु और केतु की चाल दिखाती है। भाव चंद्र से (पारंपरिक गोचर पद्धति) और लग्न से गिने गए हैं; अष्टकवर्ग बिंदु बताते हैं कि हर राशि आपके लिए कितनी सहायक है।

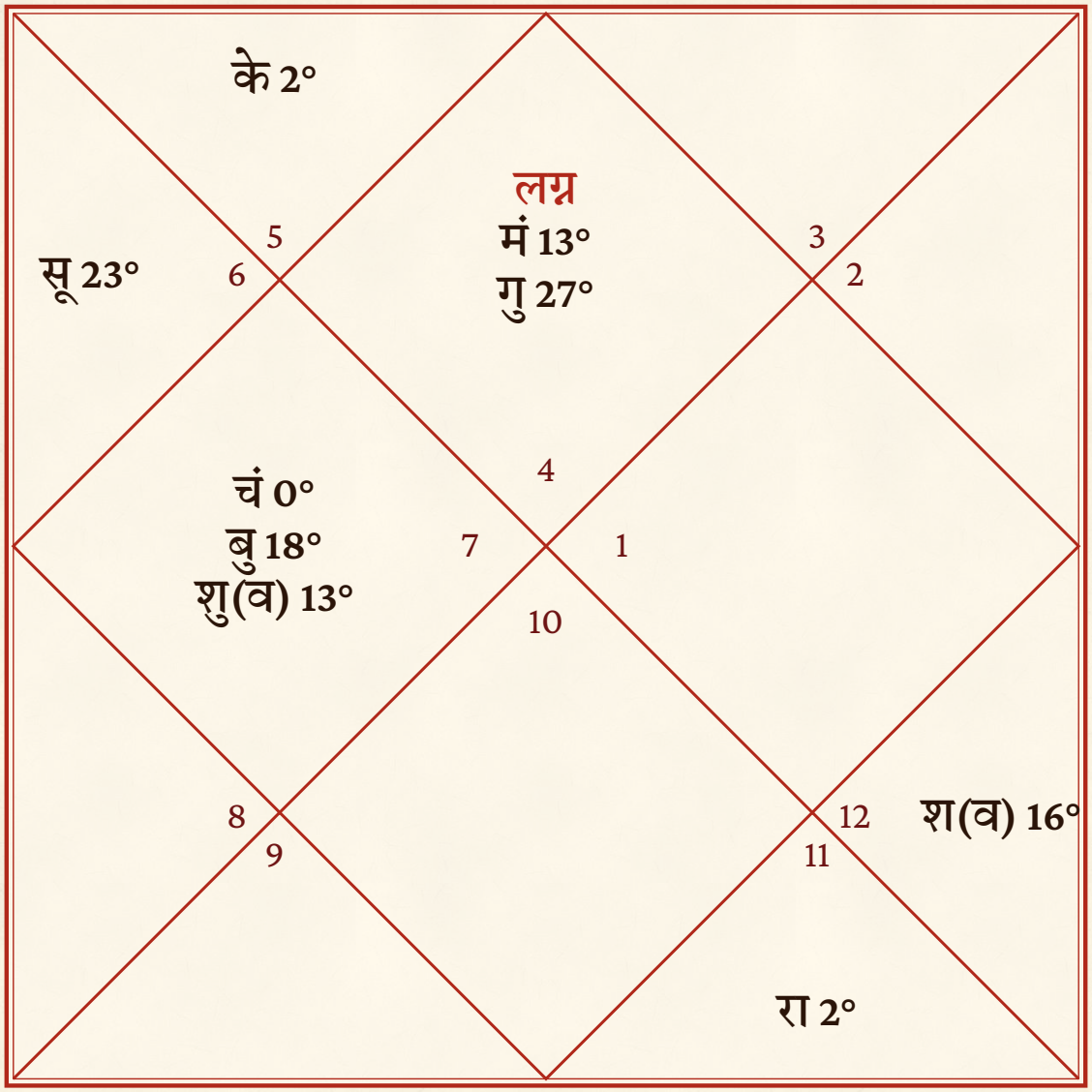


**वर्तमान गोचर, उत्तरी शैली (भाव जन्म-लग्न से)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| मीन<br>श(व) 16° | मेष | वृषभ | मिथुन |
| कुंभ<br>रा 2°<br>मकर | वर्तमान गोचर, दक्षिणी शैली | | कर्क<br>लग्न<br>मं 13°<br>गु 27°<br>सिंह<br>के 2° |
| धनु | वृश्चिक | तुला<br>चं 0°<br>बु 18°<br>शु(व) 13° | कन्या<br>सू 23° |

**वर्तमान गोचर, दक्षिणी शैली**

यह चक्र दिखाता है कि रिपोर्ट की तिथि पर ग्रह कहाँ हैं, आपके जन्म-लग्न से गिने हुए। यह आकाश का एक चित्र है, भविष्यवाणी नहीं। इसे रिपोर्ट के आरंभ की जन्म कुंडली से मिलाएँ।

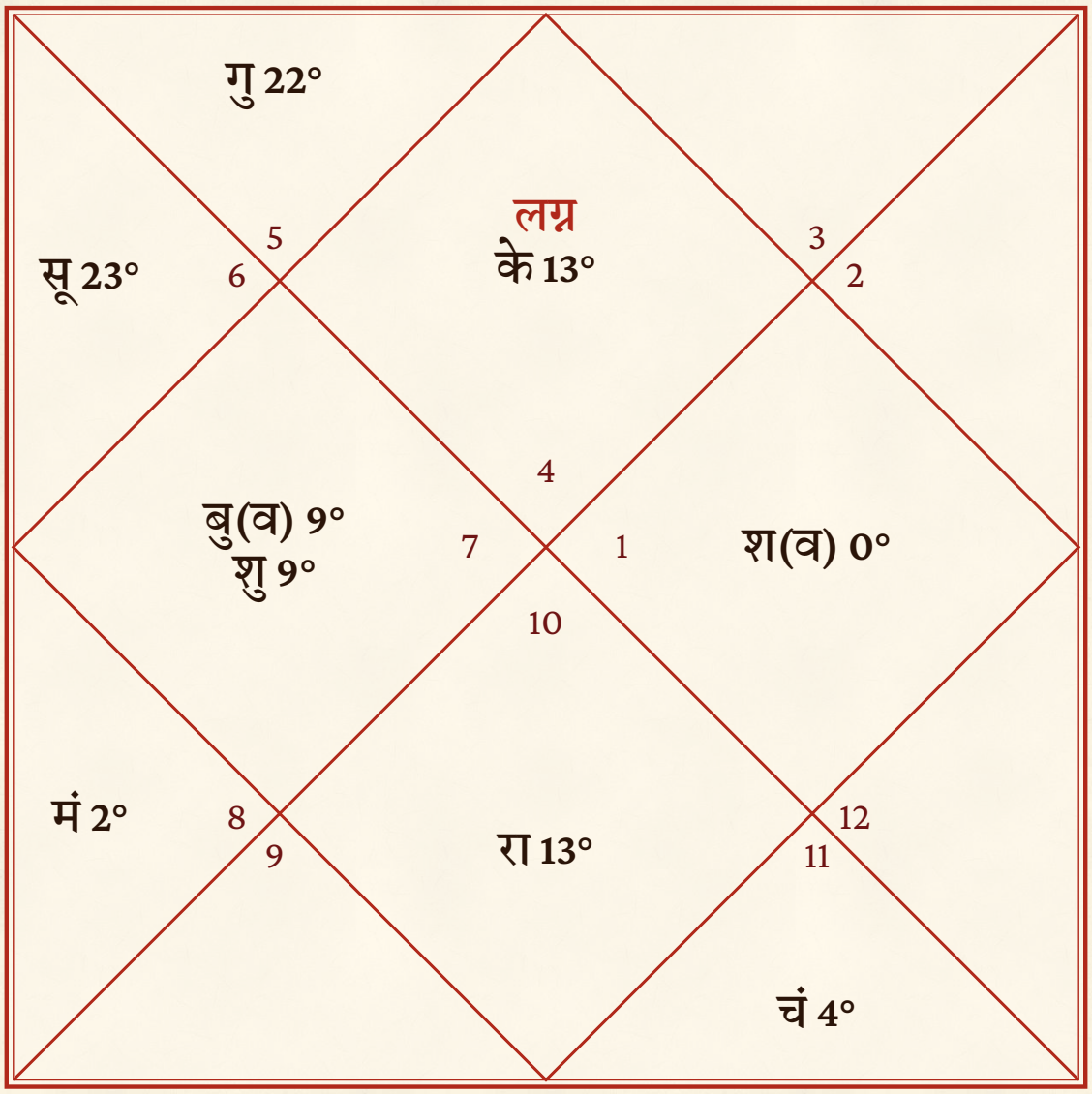


**रिपोर्ट तिथि से लगभग बारह महीने बाद का गोचर, उत्तरी शैली**

यही गोचर चक्र, रिपोर्ट तिथि के लगभग एक वर्ष बाद के लिए, ताकि आप देख सकें कि धीमे ग्रह कितने खिसक चुके होंगे। इसे बदलते पृष्ठभूमि के मानचित्र की तरह उपयोग करें, घटनाओं के पंचांग की तरह नहीं।

| ग्रह | राशि | से | तक | चंद्र से | लग्न से | सर्वा. | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | मीन | 11 अक्टूबर 2026 | 3 जून 2027 | एकादश | नवम | 31 | सहायक |
| शनि | मेष | 3 जून 2027 | 20 अक्टूबर 2027 | द्वादश | दशम | 30 | मिश्रित |
| शनि | मीन | 20 अक्टूबर 2027 | 23 फ़रवरी 2028 | एकादश | नवम | 31 | सहायक |
| शनि | मेष | 23 फ़रवरी 2028 | 11 अक्टूबर 2028 | द्वादश | दशम | 30 | मिश्रित |
| गुरु | कर्क | 11 अक्टूबर 2026 | 31 अक्टूबर 2026 | तृतीय | प्रथम | 29 | मिश्रित |
| गुरु | सिंह | 31 अक्टूबर 2026 | 25 जनवरी 2027 | चतुर्थ | द्वितीय | 24 | मिश्रित |
| गुरु | कर्क | 25 जनवरी 2027 | 26 जून 2027 | तृतीय | प्रथम | 29 | मिश्रित |
| गुरु | सिंह | 26 जून 2027 | 26 नवंबर 2027 | चतुर्थ | द्वितीय | 24 | मिश्रित |
| गुरु | कन्या | 26 नवंबर 2027 | 28 फ़रवरी 2028 | पंचम | तृतीय | 22 | सहायक |
| गुरु | सिंह | 28 फ़रवरी 2028 | 24 जुलाई 2028 | चतुर्थ | द्वितीय | 24 | मिश्रित |
| गुरु | कन्या | 24 जुलाई 2028 | 11 अक्टूबर 2028 | पंचम | तृतीय | 22 | सहायक |

| ग्रह | राशि | से | तक | चंद्र से | लग्न से | सर्वा. | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राहु | कुंभ | 11 अक्टूबर 2026 | 5 दिसंबर 2026 | दशम | अष्टम | 23 | मिश्रित |
| राहु | मकर | 5 दिसंबर 2026 | 24 जून 2028 | नवम | सप्तम | 27 | मिश्रित |
| राहु | धनु | 24 जून 2028 | 11 अक्टूबर 2028 | अष्टम | षष्ठ | 31 | मिश्रित |
| केतु | सिंह | 11 अक्टूबर 2026 | 5 दिसंबर 2026 | चतुर्थ | द्वितीय | 24 | मिश्रित |
| केतु | कर्क | 5 दिसंबर 2026 | 24 जून 2028 | तृतीय | प्रथम | 29 | सहायक |
| केतु | मिथुन | 24 जून 2028 | 11 अक्टूबर 2028 | द्वितीय | द्वादश | 34 | मिश्रित |

### ❖ शनि मीन में · अक्टूबर 2026 – जून 2027

चंद्र से ग्यारहवें शनि: शास्त्रीय शुभ गोचर; स्थिर लाभ, मान्यता और सहयोगी नेटवर्क। लग्न से यह आपके नवम भाव (भाग्य और गुरु) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में मीन राशि में 31 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (प्रबल)। शनि के अपने अष्टकवर्ग में वहाँ 8 में से 5 बिंदु हैं। वहाँ से शनि की दृष्टि आपके तृतीय भाव, षष्ठ भाव और एकादश भाव पर है।

### ❖ शनि मेष में · जून 2027 – अक्टूबर 2027

चंद्र से बारहवें शनि (साढ़े साती का पहला चरण): व्यय, नींद और एकांत; योजना बनाएँ और छोड़ना सीखें। लग्न से यह आपके दशम भाव (करियर और पद) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में मेष राशि में 30 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (प्रबल)। शनि के अपने अष्टकवर्ग में वहाँ 8 में से 3 बिंदु हैं। वहाँ से शनि की दृष्टि आपके चतुर्थ भाव, सप्तम भाव और द्वादश भाव पर है।

### ❖ गुरु कर्क में · अक्टूबर 2026

चंद्र से तीसरे गुरु: अधिक फल के बिना प्रयास; भूमिका में बदलाव। लग्न से यह आपके प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में कर्क राशि में 29 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (औसत)। गुरु के अपने अष्टकवर्ग में वहाँ 8 में से 5 बिंदु हैं। वहाँ से गुरु की दृष्टि आपके पंचम भाव, सप्तम भाव और नवम भाव पर है।

### ❖ गुरु सिंह में · अक्टूबर 2026 – जनवरी 2027

चंद्र से चौथे गुरु: घरेलू ज़िम्मेदारियाँ; सुख के साथ कुछ चिंता। लग्न से यह आपके द्वितीय भाव (धन और परिवार) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में सिंह राशि में 24 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (औसत से कम)। गुरु के अपने अष्टकवर्ग में वहाँ 8 में से 6 बिंदु हैं। वहाँ से गुरु की दृष्टि आपके षष्ठ भाव, अष्टम भाव और दशम भाव पर है।

### ❖ गुरु कन्या में · नवंबर 2027 – फ़रवरी 2028

चंद्र से पाँचवें गुरु: सर्वश्रेष्ठ गोचरों में से एक; संतान, अध्ययन, सृजन और अच्छा परामर्श। लग्न से यह आपके तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में कन्या राशि में 22 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (औसत से कम)। वहाँ से गुरु की दृष्टि आपके सप्तम भाव, नवम भाव और एकादश भाव पर है।

### ❖ राहु कुंभ में · अक्टूबर 2026 – दिसंबर 2026

चंद्र से दसवें राहु: कार्य में महत्वाकांक्षा और दृश्यता; नैतिकता स्पष्ट रखें। लग्न से यह आपके अष्टम भाव (रूपांतरण और विरासत) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में कुंभ राशि में 23 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (औसत से कम)। वहाँ से राहु की दृष्टि आपके द्वितीय भाव, चतुर्थ भाव और द्वादश भाव पर है।

### ❖ राहु मकर में · दिसंबर 2026 – जून 2028

चंद्र से नौवें राहु: विश्वासों पर प्रश्न और लंबी यात्राएँ। लग्न से यह आपके सप्तम भाव (विवाह और साझेदार) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में मकर राशि में 27 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (औसत)। वहाँ से राहु की दृष्टि आपके प्रथम भाव, तृतीय भाव और एकादश भाव पर है।

### ❖ राहु धनु में · जून 2028 – अक्टूबर 2028

चंद्र से आठवें राहु: अचानक घटनाएँ और शोध; जोखिम भरे शॉर्टकट से बचें। लग्न से यह आपके षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में धनु राशि में 31 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (प्रबल)। वहाँ से राहु की दृष्टि आपके द्वितीय भाव, दशम भाव और द्वादश भाव पर है।

### ❖ केतु सिंह में · अक्टूबर 2026 – दिसंबर 2026

चंद्र से चौथे केतु: घरेलू सुखों से विरक्ति; सादगी से आंतरिक शांति। वहाँ से केतु की दृष्टि आपके षष्ठ भाव, अष्टम भाव और दशम भाव पर है।

### ❖ केतु कर्क में · दिसंबर 2026 – जून 2028

चंद्र से तीसरे केतु: साहस और शांत दृढ़ता। वहाँ से केतु की दृष्टि आपके पंचम भाव, सप्तम भाव और नवम भाव पर है।

### ❖ केतु मिथुन में · जून 2028 – अक्टूबर 2028

चंद्र से दूसरे केतु: वाणी, आहार और बचत में सावधानी। लग्न से यह आपके द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में मिथुन राशि में 34 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (प्रबल)। वहाँ से केतु की दृष्टि आपके चतुर्थ भाव, षष्ठ भाव और अष्टम भाव पर है।

### ❖ वक्री चरण

गुरु या शनि के वक्री होने पर उनके विषयों की समीक्षा होती है और टले हुए निर्णय फिर सामने आते हैं।

| ग्रह | से | तक | राशि |
|---|---|---|---|
| शनि | 11 अक्टूबर 2026 | 12 दिसंबर 2026 | मीन |
| शनि | 11 अगस्त 2027 | 25 दिसंबर 2027 | मेष |
| शनि | 23 अगस्त 2028 | 11 अक्टूबर 2028 | मेष |
| गुरु | 14 दिसंबर 2026 | 13 अप्रैल 2027 | सिंह |
| गुरु | 14 जनवरी 2028 | 15 मई 2028 | कन्या |

### ❖ जन्म-ग्रहों से सटीक संपर्क

ये वे तिथियाँ हैं जब कोई धीमा ग्रह किसी जन्म-ग्रह से एक अंश के भीतर आता है, हर गोचर के सबसे संवेदनशील क्षण।

| तिथि | गोचर ग्रह | जन्म ग्रह | विषय |
|---|---|---|---|
| 26 फ़रवरी 2027 | शनि | शनि | शनि आपके अनुशासन की परीक्षा लेकर उसे ढाँचा देता है |
| 17 जुलाई 2027 | गुरु | केतु | गुरु आपकी विरक्ति का विस्तार और संरक्षण करता है |
| 18 सितंबर 2027 | गुरु | सूर्य | गुरु आपकी मूल पहचान का विस्तार और संरक्षण करता है |
| 27 अक्टूबर 2027 | गुरु | बुध | गुरु आपकी सोच का विस्तार और संरक्षण करता है |
| 25 मार्च 2028 | गुरु | बुध | गुरु आपकी सोच का विस्तार और संरक्षण करता है |
| 17 जून 2028 | गुरु | बुध | गुरु आपकी सोच का विस्तार और संरक्षण करता है |

अभी आप साढ़े साती में नहीं हैं; अगला चक्र लगभग जून 2027 से जुलाई 2034 तक है।

# जीवन भर साढ़े साती और ढैया

यह आपसे कैसे जुड़ता है: "जीवन भर साढ़े साती और ढैया" वृषभ राशि के स्थिर चंद्र वाले परवाह करने वाले कर्क लग्न के व्यक्ति के एक और पहलू को देखता है; इससे शांत सप्ताहों की योजना बनाएँ, क्योंकि आप तनाव में अड़कर और मेहनत करने लगते हैं।

शनि लगभग हर साढ़े उनतीस वर्ष में आपकी चंद्र राशि पर लौटता है, इसलिए अधिकांश लोग दो या तीन बार साढ़े साती से गुज़रते हैं। सभी चक्रों और शनि की ढाई वर्ष की ढैया (चंद्र से चौथे और आठवें) की पूरी सूची नीचे है।

| चक्र | चरण | राशि | से | तक | आयु |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | प्रथम (उदय) चरण | मेष | 3 जून 2027 | 20 अक्टूबर 2027 | 0–1 |
| 1 | प्रथम (उदय) चरण | मेष | 23 फ़रवरी 2028 | 8 अगस्त 2029 | 1–2 |
| 1 | द्वितीय (शिखर) चरण | वृषभ | 8 अगस्त 2029 | 5 अक्टूबर 2029 | 2–3 |
| 1 | प्रथम (उदय) चरण | मेष | 5 अक्टूबर 2029 | 17 अप्रैल 2030 | 3 |
| 1 | द्वितीय (शिखर) चरण | वृषभ | 17 अप्रैल 2030 | 31 मई 2032 | 3–5 |
| 1 | तृतीय (अस्त) चरण | मिथुन | 31 मई 2032 | 13 जुलाई 2034 | 5–7 |
| 2 | प्रथम (उदय) चरण | मेष | 7 अप्रैल 2057 | 27 मई 2059 | 30–32 |
| 2 | द्वितीय (शिखर) चरण | वृषभ | 27 मई 2059 | 11 जुलाई 2061 | 32–34 |
| 2 | तृतीय (अस्त) चरण | मिथुन | 11 जुलाई 2061 | 13 फ़रवरी 2062 | 34–35 |
| 2 | द्वितीय (शिखर) चरण | वृषभ | 13 फ़रवरी 2062 | 7 मार्च 2062 | 35 |
| 2 | तृतीय (अस्त) चरण | मिथुन | 7 मार्च 2062 | 24 अगस्त 2063 | 35–36 |
| 2 | तृतीय (अस्त) चरण | मिथुन | 6 फ़रवरी 2064 | 9 मई 2064 | 37 |
| 3 | प्रथम (उदय) चरण | मेष | 21 मई 2086 | 10 नवंबर 2086 | 59–60 |
| 3 | प्रथम (उदय) चरण | मेष | 8 फ़रवरी 2087 | 18 जुलाई 2088 | 60–61 |
| 3 | द्वितीय (शिखर) चरण | वृषभ | 18 जुलाई 2088 | 31 अक्टूबर 2088 | 61–62 |
| 3 | प्रथम (उदय) चरण | मेष | 31 अक्टूबर 2088 | 5 अप्रैल 2089 | 62 |
| 3 | द्वितीय (शिखर) चरण | वृषभ | 5 अप्रैल 2089 | 19 सितंबर 2090 | 62–64 |
| 3 | तृतीय (अस्त) चरण | मिथुन | 19 सितंबर 2090 | 25 अक्टूबर 2090 | 64 |
| 3 | द्वितीय (शिखर) चरण | वृषभ | 25 अक्टूबर 2090 | 21 मई 2091 | 64 |
| 3 | तृतीय (अस्त) चरण | मिथुन | 21 मई 2091 | 2 जुलाई 2093 | 64–66 |
| 4 | प्रथम (उदय) चरण | मेष | 29 मार्च 2116 | 5 सितंबर 2116 | 89–90 |

| चरण | राशि | से | तक | आयु |
|---|---|---|---|---|
| कंटक शनि | सिंह | 27 अगस्त 2036 | 22 अक्टूबर 2038 | 9–12 |
| कंटक शनि | सिंह | 5 अप्रैल 2039 | 13 जुलाई 2039 | 12 |
| अष्टम शनि | धनु | 8 दिसंबर 2046 | 6 मार्च 2049 | 20–22 |
| अष्टम शनि | धनु | 10 जुलाई 2049 | 4 दिसंबर 2049 | 22–23 |
| कंटक शनि | सिंह | 13 अक्टूबर 2065 | 3 फ़रवरी 2066 | 39 |
| कंटक शनि | सिंह | 3 जुलाई 2066 | 30 अगस्त 2068 | 39–42 |
| अष्टम शनि | धनु | 16 जनवरी 2076 | 11 जुलाई 2076 | 49 |

| चरण | राशि | से | तक | आयु |
|---|---|---|---|---|
| अष्टम शनि | धनु | 11 अक्टूबर 2076 | 15 जनवरी 2079 | 50–52 |



# मासिक दृष्टि (12 महीने)

यह आपसे कैसे जुड़ता है: "मासिक दृष्टि (12 महीने)" वृषभ राशि के स्थिर चंद्र वाले परवाह करने वाले कर्क लग्न के व्यक्ति के एक और पहलू को देखता है; इसे किसी वर्तमान निर्णय को ध्यान में रखकर पढ़ें।

अगले 12 महीने, चंद्र से: सूर्य की मासिक राशि मुख्य विषय तय करती है, तेज़ ग्रह राशि बदलने पर रंग जोड़ते हैं, और चल रही दशा / अंतर्दशा / प्रत्यंतर बताती है कि कुंडली का कौन-सा भाग सक्रिय है।

### ❖ अक्टूबर 2026

अवसरों और माँगों वाला मिश्रित महीना। सूर्य कन्या में: चंद्र से पाँचवें सूर्य संतान, अध्ययन और रचनात्मक कार्य पर ध्यान लाता है। कर्क में: चंद्र से तीसरे मंगल साहस और निर्णायक कार्य के लिए उत्तम है। तुला में: चंद्र से छठे शुक्र भोग-विलास में संयम माँगता है। तुला में: चंद्र से छठे बुध समस्या-समाधान को तीक्ष्ण करता है। चल रही अवधि मंगल/गुरु/बुध: प्रत्यंतर-स्वामी आपके द्वितीय भाव (धन और परिवार) को सक्रिय करता है। इस महीने तेज़ ग्रह आपके मुख्य भावों (प्रथम भाव) से गुज़रते हैं।

### ❖ नवंबर 2026

सामान्यतः सहायक महीना। सूर्य तुला में: चंद्र से छठे सूर्य बाधाओं पर विजय और लंबित काम निपटाने में सहायक है। सिंह में: चंद्र से चौथे मंगल घरेलू खटपट या संपत्ति का काम जगाता है। कन्या में: चंद्र से पाँचवें शुक्र प्रेम और सृजन के अनुकूल है। गुरु सिंह में प्रवेश करता है, जो चंद्र से आपका चतुर्थ भाव है।

### ❖ दिसंबर 2026

धैर्य और सावधानी माँगने वाला महीना। सूर्य वृश्चिक में: चंद्र से सातवें सूर्य साझेदारों और यात्रा को उभारता है। वृश्चिक में: चंद्र से सातवें बुध वार्ताएँ और समझौते लाता है। चल रही अवधि मंगल/गुरु/केतु: प्रत्यंतर-स्वामी आपके द्वितीय भाव (धन और परिवार) को सक्रिय करता है। इस महीने तेज़ ग्रह आपके मुख्य भावों (पंचम भाव) से गुज़रते हैं।

### ❖ जनवरी 2027

धैर्य और सावधानी माँगने वाला महीना। सूर्य मकर में: चंद्र से नौवें सूर्य बड़ों, गुरुओं और सिद्धांतों से जुड़े प्रसंग लाता है। वृश्चिक में: चंद्र से सातवें शुक्र साझेदारी में जीवंतता लाता है, यद्यपि ईर्ष्या भी जगा सकता है। मकर में: चंद्र से नौवें बुध योजनाओं में बदलाव ला सकता है। चल रही अवधि मंगल/गुरु/शुक्र: प्रत्यंतर-स्वामी आपके चतुर्थ भाव (घर और माता) को सक्रिय करता है।

### ❖ फ़रवरी 2027

सामान्यतः सहायक महीना। सूर्य कुंभ में: चंद्र से दसवें सूर्य करियर में प्रगति और मान्यता का साथ देता है। धनु में: चंद्र से आठवें शुक्र अप्रत्याशित उपहार या साझा संसाधन ला सकता है। कुंभ में: चंद्र से दसवें बुध कार्यस्थल पर संवाद के लिए उत्पादक है। गुरु कर्क में प्रवेश करता है, जो चंद्र से आपका तृतीय भाव है। चल रही अवधि मंगल/गुरु/सूर्य: प्रत्यंतर-स्वामी आपके द्वितीय भाव (धन और परिवार) को सक्रिय करता है।

### ❖ मार्च 2027

सामान्यतः सहायक महीना। मकर में: चंद्र से नौवें शुक्र यात्रा, संस्कृति और सौभाग्य के अनुकूल है। चल रही अवधि मंगल/गुरु/चंद्र: प्रत्यंतर-स्वामी आपके एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) को सक्रिय करता है।

### ❖ अप्रैल 2027

अवसरों और माँगों वाला मिश्रित महीना। सूर्य मेष में: चंद्र से बारहवें सूर्य विश्राम, योजना और शांत कार्य के अनुकूल है। कुंभ में: चंद्र से दसवें शुक्र कार्यस्थल पर सुखद संबंध लाता है। मीन में: चंद्र से ग्यारहवें बुध संपर्कों से लाभ लाता है। चल रही अवधि मंगल/गुरु/मंगल: प्रत्यंतर-स्वामी आपके द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष) को सक्रिय करता है।

### ❖ मई 2027

अवसरों और माँगों वाला मिश्रित महीना। मेष में: चंद्र से बारहवें शुक्र सुख, यात्रा और उदार व्यय लाता है। वृषभ में: चंद्र पर बुध मन को व्यस्त रखता है। चल रही अवधि मंगल/गुरु/राहु: प्रत्यंतर-स्वामी आपके अष्टम भाव (रूपांतरण और विरासत) को सक्रिय करता है।

### ❖ जून 2027

धैर्य और सावधानी माँगने वाला महीना। सूर्य वृषभ में: चंद्र पर सूर्य ऊर्जा और दृश्यता बढ़ाता है, साथ ही चिड़चिड़ापन भी। वृषभ में: चंद्र पर शुक्र आनंद, आकर्षण और सामाजिक सहजता लाता है। मिथुन में: चंद्र से दूसरे बुध शब्दों और व्यापार से कमाई में सहायक है। शनि मेष में प्रवेश करता है, जो चंद्र से आपका द्वादश भाव है। चल रही अवधि मंगल/शनि/शनि: प्रत्यंतर-स्वामी आपके नवम भाव (भाग्य और गुरु) को सक्रिय करता है।

### ❖ जुलाई 2027

धैर्य और सावधानी माँगने वाला महीना। सूर्य मिथुन में: चंद्र से दूसरे सूर्य धन और परिवार में वाणी को केंद्र में रखता है। कन्या में: चंद्र से पाँचवें मंगल पढ़ाई और रचनात्मक कार्य में प्रतिस्पर्धा जोड़ता है। मिथुन में: चंद्र से दूसरे शुक्र आय और पारिवारिक आनंद के अनुकूल है।

### ❖ अगस्त 2027

अवसरों और माँगों वाला मिश्रित महीना। सूर्य कर्क में: चंद्र से तीसरे सूर्य पहल और प्रतिद्वंद्वियों पर सफलता का साथ देता है। कर्क में: चंद्र से तीसरे शुक्र सुखद छोटी यात्राओं और रचनात्मक शौक का साथ देता है। सिंह में: चंद्र से चौथे बुध अध्ययन और पारिवारिक चर्चाओं का साथ देता है। चल रही अवधि मंगल/शनि/बुध: प्रत्यंतर-स्वामी आपके द्वितीय भाव (धन और परिवार) को सक्रिय करता है।

### ❖ सितंबर 2027

धैर्य और सावधानी माँगने वाला महीना। सूर्य सिंह में: चंद्र से चौथे सूर्य घर और मन की शांति को केंद्र में रखता है। तुला में: चंद्र से छठे मंगल प्रतिद्वंद्वियों और रोग पर विजय में सहायक है। कन्या में: चंद्र से पाँचवें बुध योजनाओं को लेकर मानसिक तनाव ला सकता है।

# पारंपरिक उपाय (वैकल्पिक)

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: ये वैकल्पिक अभ्यास आपकी कुंडली के उन हिस्सों के लिए चुने गए हैं जिन्हें देखभाल चाहिए; बहुत से नहीं, अपनी दिनचर्या में फ़िट होने वाला एक चुनें।

उपाय निर्बल, पीड़ित या वर्तमान में चल रहे ग्रहों के लिए वैकल्पिक पारंपरिक अभ्यास हैं। इन्हें नीचे आपकी कुंडली से चुना गया है। इनमें समय और ध्यान के अतिरिक्त कुछ नहीं लगता।

| ग्रह | सुझाव का कारण |
|---|---|
| सूर्य | इस रिपोर्ट के विषय का कारक |
| चंद्र | इस रिपोर्ट के विषय का कारक |
| मंगल | शत्रु राशि में; षड्बल में सबसे निर्बलों में; वर्तमान महादशा स्वामी |
| बुध | अस्त (सूर्य के बहुत निकट) |
| शनि | षड्बल में सबसे निर्बलों में |
| गुरु | वर्तमान अंतर्दशा स्वामी |

### ❖ सूर्य के लिए

पारंपरिक रूप से संबद्ध देवता: सूर्य (आदित्य हृदय स्तोत्र)। दिन: रविवार। दान: उगते सूर्य को जल अर्पण, पिता-तुल्य व्यक्तियों का सम्मान, गेहूँ या गुड़ का दान। आदत: नियमित नींद और सुबह की धूप। मंत्र (वैकल्पिक): ॐ सूर्याय नमः।

### ❖ चंद्र के लिए

पारंपरिक रूप से संबद्ध देवता: शिव / पार्वती। दिन: सोमवार। दान: दूध, चावल या सफ़ेद वस्त्र का दान, माता की सेवा। आदत: पर्याप्त जल, शांत संध्या और डायरी-लेखन। मंत्र (वैकल्पिक): ॐ चन्द्राय नमः।

### ❖ मंगल के लिए

पारंपरिक रूप से संबद्ध देवता: हनुमान / कार्तिकेय। दिन: मंगलवार। दान: लाल मसूर का दान, भाई-बहनों की सहायता, सैनिकों या खिलाड़ियों का सहयोग। आदत: ज़ोरदार व्यायाम और क्रोध-प्रबंधन। मंत्र (वैकल्पिक): ॐ मङ्गलाय नमः।

### ❖ बुध के लिए

पारंपरिक रूप से संबद्ध देवता: विष्णु। दिन: बुधवार। दान: हरी मूँग, पुस्तकें या लेखन-सामग्री का दान, विद्यार्थियों की सहायता। आदत: पठन, पहेलियाँ और सावधान वाणी। मंत्र (वैकल्पिक): ॐ बुधाय नमः।

### ❖ शनि के लिए

पारंपरिक रूप से संबद्ध देवता: शनि / हनुमान। दिन: शनिवार। दान: काले तिल, तेल या कंबल का दान, श्रमिकों और बुज़ुर्गों की सेवा। आदत: समय-पालन, सादगी और सेवा। मंत्र (वैकल्पिक): ॐ शनये नमः।

### ❖ गुरु के लिए

पारंपरिक रूप से संबद्ध देवता: बृहस्पति / दक्षिणामूर्ति। दिन: गुरुवार। दान: हल्दी, चने की दाल या पुस्तकों का दान, शिक्षकों की सेवा। आदत: अध्ययन, मार्गदर्शन और भोजन में संयम। मंत्र (वैकल्पिक): ॐ गुरवे नमः।

### ❖ रत्नों के विषय में

पारंपरिक रत्न-सलाह लग्नेश (चंद्र) और पंचमेश व नवमेश (मंगल, गुरु) से आरंभ होती है। रत्न वैकल्पिक हैं; दबाव में कभी न ख़रीदें, और ऊपर के अभौतिक अभ्यासों को प्राथमिकता दें।

> उपाय केवल पारंपरिक सुझाव हैं। ये वैकल्पिक हैं, किसी परिणाम की गारंटी नहीं देते, और किसी चीज़ के निदान, इलाज, उपचार या रोकथाम का दावा नहीं करते। कुछ भी ख़रीदना आवश्यक नहीं, और हम उपाय, अनुष्ठान या रत्न नहीं बेचते।

## शब्दावली

# शब्दावली

इस रिपोर्ट में प्रयुक्त शब्द, संक्षेप में।

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| लग्न | जन्म के समय पूर्वी क्षितिज पर उदित राशि; प्रथम भाव और सभी भावों का आरंभ-बिंदु। |
| राशि | 30° का राशि-चक्र खंड। "आपकी राशि" प्रायः चंद्र राशि होती है। |
| नक्षत्र | 13°20′ के 27 चंद्र-नक्षत्रों में से एक; जन्म-नक्षत्र चंद्र का नक्षत्र है। |
| पद (चरण) | नक्षत्र का चौथाई भाग (3°20′); हर पद एक नवांश राशि से जुड़ता है। |
| भाव | घर; जीवन के बारह क्षेत्रों में से एक। |
| भावेश | भाव की राशि का स्वामी ग्रह; इसकी स्थिति बताती है कि भाव के विषय कहाँ ले जाते हैं। |
| ग्रह | वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रह: सूर्य से शनि तक तथा राहु और केतु। |
| राहु-केतु | चंद्र के उत्तरी और दक्षिणी पात; बिना पिंड के छाया ग्रह, सदा आमने-सामने। |
| बल (गरिमा) | राशि में ग्रह की सहजता: उच्च, स्वराशि, मित्र, सम, शत्रु या नीच। |
| मूलत्रिकोण | ग्रह की स्वराशि का विशेष भाग जहाँ वह विशेष उद्देश्य से कार्य करता है। |
| वक्री | पृथ्वी से पीछे की ओर चलता दिखने वाला ग्रह। |
| अस्त | सूर्य के बहुत निकट ग्रह; इसके कारकत्व कम दिखाई देते हैं। |
| दृष्टि | ग्रह की भावों पर दृष्टि; सभी ग्रह सातवें को देखते हैं, मंगल, गुरु और शनि (और कई मतों में राहु-केतु) की विशेष दृष्टियाँ हैं। |
| युति | एक ही राशि में दो या अधिक ग्रह। |
| केंद्र | भाव 1, 4, 7, 10: कुंडली के स्तंभ। |
| त्रिकोण | भाव 1, 5, 9: कृपा और पुण्य के भाव। |
| दुःस्थान | भाव 6, 8, 12: बाधा, रूपांतरण और हानि के भाव। |
| उपचय | भाव 3, 6, 10, 11: समय और प्रयास से सुधरने वाले भाव। |
| वर्ग | विभाजन कुंडली जो जीवन के एक क्षेत्र को विस्तार से दिखाती है, जैसे विवाह के लिए D9 या करियर के लिए D10। |
| नवांश (D9) | नौवें भाग की कुंडली; D1 के बाद सबसे महत्वपूर्ण वर्ग। |
| दशमांश (D10) | दसवें भाग की कुंडली, करियर के लिए। |
| विंशोत्तरी दशा | जन्म के चंद्र-नक्षत्र पर आधारित 120 वर्षों का ग्रह-अवधि चक्र। |
| महादशा / अंतर्दशा / प्रत्यंतर | दशा-पद्धति की मुख्य अवधि, उप-अवधि और उप-उप-अवधि। |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| गोचर | ग्रहों की वर्तमान चाल, जिसे जन्म कुंडली के सापेक्ष, प्रायः चंद्र से, पढ़ा जाता है। |
| साढ़े साती | चंद्र से बारहवीं, पहली और दूसरी राशि में शनि का लगभग साढ़े सात वर्ष का गोचर। |
| अष्टकवर्ग | बिंदु-पद्धति जो बताती है कि हर राशि हर ग्रह के लिए कितनी सहायक है; योग सर्वाष्टकवर्ग कहलाता है। |
| बिंदु | अष्टकवर्ग का शुभ अंक। |
| षड्बल | ग्रहों का छह प्रकार का बल; यह रिपोर्ट इसका सांकेतिक आंशिक रूप दिखाती है। |
| विंशोपक | विभाजन कुंडलियों में ग्रह की गरिमा से बना 20-अंकीय बल। |
| योग | ग्रहों का परिभाषित संयोजन जो किसी संभावना का वर्णन करता है। |
| दोष | पारंपरिक पीड़ा-संयोजन; वर्णनात्मक, कोई दंड नहीं। |
| तिथि | चंद्र दिवस; सूर्य से चंद्र की दूरी से मापी जाती है, हर चंद्र मास में 30। |
| करण | तिथि का आधा भाग। |
| नित्य योग | सूर्य और चंद्र के भोगांशों के योग से बने 27 योगों में से एक; पंचांग का अंग। |
| वार | सूर्योदय से गिना जाने वाला सप्ताह-दिवस। |
| अयनांश | सायन और निरयन राशि-चक्र का अंतर; यह रिपोर्ट लाहिरी अयनांश का उपयोग करती है। |
| चर कारक | अंशों के क्रम से जैमिनी कारक, आत्मकारक (आत्मा) से दारकारक (जीवनसाथी) तक। |
| आरूढ़ | भाव की "छवि": उसके विषय संसार को कैसे दिखते हैं (स्वयं के लिए AL, विवाह के लिए UL)। |
| अवस्था | अंशों के अनुसार ग्रह की आयु-अवस्था, बाल से मृत तक। |
| विक्रम संवत / शक | पारंपरिक भारतीय संवत; वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होता है। |

# महत्वपूर्ण अस्वीकरण

**केवल मार्गदर्शन और मनोरंजन।** ज्योतिष रिपोर्ट केवल मार्गदर्शन, आत्म-चिंतन और मनोरंजन के लिए हैं। ये पारंपरिक पद्धतियों पर आधारित हैं, वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं हैं और किसी परिणाम की गारंटी नहीं देतीं। ये चिकित्सा, कानूनी, वित्तीय, मनोवैज्ञानिक या अन्य पेशेवर सलाह का विकल्प नहीं हैं। रिपोर्ट के आधार पर स्वास्थ्य, कानूनी या वित्तीय निर्णय न लें।

**यह रिपोर्ट कैसे बनी।** कुंडली कंप्यूटर द्वारा गणना की जाती है (स्विस एफ़ेमेरिस, लाहिरी अयनांश) और व्याख्याएँ AI सहायता से लिखी व मनुष्यों द्वारा संपादित हैं। कोई ज्योतिषी व्यक्तिगत रिपोर्ट की समीक्षा नहीं करता।

परिणाम दिए गए जन्म विवरण की सटीकता पर निर्भर करते हैं; गलत जन्म समय से लग्न, भाव और समय-निर्धारण बदल सकते हैं।

ज्योतिषियों की पद्धतियाँ (अयनांश, भाव-पद्धति, राहु-केतु की गणना) अलग-अलग होती हैं; कोई अन्य ज्योतिषी अलग निष्कर्ष पर पहुँच सकता है।

जहाँ परंपरा किसी अवधि या ग्रह-स्थिति को चुनौतीपूर्ण बताती है, वह किसी हानि की भविष्यवाणी नहीं है। आपके निर्णय और परिस्थितियाँ कहीं अधिक मायने रखती हैं।

जिन क्षेत्रों में भविष्य-कथन (फ़ॉर्च्यून-टेलिंग) विनियमित है, वहाँ के ग्राहकों के लिए यह रिपोर्ट केवल मनोरंजन हेतु प्रदान की जाती है।

यदि आप मानसिक संकट में हैं, तो कृपया किसी स्थानीय हेल्पलाइन या आपातकालीन सेवा से संपर्क करें। भारत में आप टेली-मानस (Tele-MANAS) मानसिक-स्वास्थ्य हेल्पलाइन 14416 पर संपर्क कर सकते हैं।

किसी परिणाम की गारंटी नहीं है। अपने निर्णयों की पूरी ज़िम्मेदारी आपकी अपनी है।

Kundli Reports · kundlireports.com · support@kundlireports.com
रिपोर्ट SAMPLE · निर्माण तिथि 27 नवंबर 2026 · गणना: स्विस एफ़ेमेरिस (AGPL), लाहिरी अयनांश, पूर्ण-राशि भाव, माध्य राहु-केतु। · नमूना, काल्पनिक जन्म विवरण।
टाइपफ़ेस: Eczar, Crimson Pro, Martel, Kalam और Noto Sans Devanagari (SIL Open Font License)।